मंत्री री बेटी

बारहठ प्रकाशन
फेफाना (राजस्थान)

मंत्री री बेटी

करणीदान बारहठ

© करणीदान बारहठ

फेफाना (श्री गंगानगर), राजस्थान
/ मूल्य : तीस रुपये, / आवरण : हरिप्रकाश
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

मायडभाषा राजस्थानी रा
घणा हेतूला
श्रो० मेजर श्री रामप्रसाद जी पोद्दार नै
घणै मान स्यूं
भेंट

फागण रो म्हीनो, होळी रा दिन, दही सी चादणी धरती पर पसरेडी, मीठो-मीठो शीतळ वायरो डील स्यू रम्मै तो मुहावै, मनभावै, जी सोरो हुवै, बारै चूतरी पर छोरघा होळी रा गीत गावै—'चाद चढ़घो गिगनार, किरत्या ढ़ळ रयी जी ढळ रयी'—'ओ कुण खेलै छवाक, ओ कुण फूल दड़ी'—

फेर छोरघा मोडै ताई दही धपोळियो रमतो। म्हू म्हारी मा री गोदी में ही रैवती, स्यात् ही टावरा रै नेडै जावती। म्हारी मा बा टाबरा, छोरघा कानी इकटक देखती रैवती, देखती रैवती, न तो बा ज्यू-स्यू हसती, न बानै की कैवती। इया लागै जाणै मौसम रै बदलाव रो मा पर असर ही कोनी हुयो। कदे-कदे मा मनै फॅवती-सी बोलती—'छोरघा रम्मै है, तू ही रम, आखै दिन, आखी रात म्हारै ही चीपेडी रवै है, छोरघा म्हारै नेडै आवती, मनै मा स्यू कोसणै री चेस्टा करती तो म्हू मा रै घणी चिप ज्याबती। जद् मा और चिडती—'राढ, चमचेड सी चिपी ही रवै, म्हारली तरिया चिडॉवली हांयगी, इनै भी की आछो कोनी लागै।'

मा नै भी आछो कोनी लागतो। म्हारी मा कैवती—'बेटा, तेरा पापा बेगा ही आवण आळा है कोई समझौतो होसी ही।'

काई समझौनो होसी, क्या रो समझौतो होसी, म्हानै काई पतो हो। म्हानै तो इत्ता ही बेरा हो के म्हारा पापा जेळ मे है, क्यू जेळ मे है, काई अपराध करयो बा, म्हू टाबर नै काई ठा। ओ तो ठा हो के—पापा कोई चोरी कोनी करी, डाको कोनी गेरयो। कीरो सिर कोनी फोडयो—फकत राजाजी नाराज हा, बानै म्हारा पापा माडो, भूडो घहदो।

मां वनै जका लोग मिलण आवता वै कैवता—मिनख खद्दरधारी, धोळा-धप्प दूध धोया-सा।

म्हारो घर काई हो भूख रो डेरो हो। कोई कणरा नाज ल्यावतो तो कई दिन रोटी वण ज्यावती, नी अधभूखा मां ज्यावता, अडोसी-पडोसी टरता मा बोलता, साग-सब्जी तो स्यात् ही बणती, कदे-कदे तो मिरच रा बीज पीसन रोटी सागै लगान खा लेवता। म्हू एक घर स्यू छाछ माग ल्यावती, बीस्यू की नाको लाम ज्यावतो। मा उदास रैवती, इसी लागती जाणै आ रोवैली, पण मा कदे रोई कोनी। म्हू तो बीरा आसू कदे कोनी देख्या, पण सूकन मलरो होगी ही। बीरी जुवानी पर बुढापो उतरण लागरयो हो—वेगो-वेगो, चटकै-चटकै। बीरै ओढण साल्ह एक ओढणियो बच्यो हो, धोल्यां तो सगळो लीर-लीर होयो हो, बा बारै निकळती तो पेटीकोट पर ओढणियो नाखन काम काढ लेवती।

म्हू मा नै पूछती—'मा, पापा कद आमी ?'

—वेगा ही आमी, बेटा, सोच मत कर।

मा, मनै थपथपाती, म्हारै छोटै भइयै नै थपथपाती, भइयो भी सूकण लागग्यो।

एक दिन म्हारी दादी आगी। दादी दो दिन ठैरी। दादी दो दिन रोळा ही करती रयी, बकती रयी – 'मर ज्याणै री उत गई, इसी आछी नौकरी ही, मौज करती, काम करण नै चपरासी हा, दूजणनै गऊ ही, बरतन नै पीसा हा, हाथ में हकूमत ही। रोवण जोगै नै काई सूझी, अबै आ टाबरा रो कुण धणी। काई चावै है बो ? राज बदळै है, राज। बीरो बाप ही राज कोनी बदळ सकै। कठै अडयो है, राजाजी स्यू अडणो सोरो काम तो कोनी। मोटै मिनख स्यू तो मोटो मिनख ही अड सकै। आपा गरीब गुजारो करा, आपा कठै मका। आ टाबरा रो भाग माडो। पण ऐ टाबर ही बीरा सिर खाणा है। म्हारै सागै कोनी चालै।'

पण म्हारा मा सिद्धार्थ री लुगाई यसोधरा स्यू भी घणी वीरागणा ही, सूरा री धरती री जायी जामी ही जकी कदे ही त्याग साल्ह पाछो कानी मुडी।

दादी तो चली गई दो दिन तुरळ मचा'र, पण बा म्हानै ले कोनी गई,

ले ज्यावणै री कैवती। दादी कनै भी हो काई, चार बीघा खूड हा जकै स्यू बो मसा गुजारो करती।

म्हारै तो बोही राडो रोवणो। कदेई लूण कोनी तो कदे मिर्च। कदे दाणा नीवड ज्यावता तो कदे तेल। पण मा कदे-कदे कैवती—'बेटा, तेरा पापा देस सारू जेळ गया है।' फेर पतो नी बीरै डील मे कठैस्यू सरणाटो बापरतो के बा एकदम झासी री राणी सी लागती। मा नै कठैस्यू ही घी, दूध कोनी मिलतो, पण बी 'देस' सबद म ही कठै ही भेळा होयेडा बिटामिन हा जका बीनै एकर तो जोधजुवान कर देवता अर फेर बी सारै स्यू आप भी जीवती रैवती अर म्हानै भी पाळती। हसती पतो नी बीरी नकली ही या असली हो, पण बो हसी स्यू ही म्हा दोना नै दिन-भर खिल-खावती रैवती।

2

पण एक दिन एहडो आयो के मा हुड-हुड हसी, इत्ती हसी के आसै-पासै री भीता हसण लागगी, आखो घर हसी स्यू गूजण लागग्यो, पापा आग्या हा जेळ स्यू छूटन। म्हू भी हसी अर पापा रै चिपटगी कस'र। म्हारा पापा भोत फूटरा हा। गोरो सरीर, गोळ मूडो, ना लांबा ना ओछा। मोटी-मोटी आख्या, तीखो-तीखो नाक। भारयू, भर्योडो डील, तकडा-तकडा। पण अबार की माडा होर्या हा, काळूटर्या हा। जेळ रो तो नाम ही मूडो।

मा पापा नै रोटी खुवावै ही, इत्तै मे एक गाडी आई जकी नै कार कवै, काळो स्याह, म्हारै घरे आयन खडी होयगी, लारै एक जीप आई, बीरै माय पुलिस वरदी लगाया। पुलिस नै देखन म्हू कूकी।

मा खडी होयन बारै देखो, मनै गोदी मे लेयन बोली—'रोअै क्यू बेटा ?'

—मा, पुलिस।

एक दिन पापा नैं लेवण इयां ही पुलिस आई। पण कार साथै कोनी ही।

मा बोली—बेटा, आज पुलिस तेरै पापा नैं पकडन कोनी आई। तेरा पापा मनीस्टर बणग्या।

—ओ काई हुयो, मा ?

मा भी बात बता नी सकी। बण बताई होसी पण म्हू समझ नी सकी, पण जकै दिन म्हे बो घर नैं छोडन एक मोटै मकान मे आग्या जकै नैं लोग बगलो या कोठी कवै। मोटा-छोटा करन दस कमरा। कोठी रो काई बखाण करू, म्हानै तो एहडो मकान आछ्या वाई सपनै मे ही कोनी देख्यो। एक स्यू राजा बण्या करै है बे म्हे बणग्या। स्यो महाराज पारबती री कांण्या आया करै है—कीडो हो, बीनै मिनख बणा दियो फेर राज बणा दियो, बा बात म्हारै साथै हुई। फेर तो मिनखां री भीड हावण लागगी, एक ही आदमी आछ्या कानी देखतो, म्हारै घर कानी लोग कैरी-कैरी आछ्या करन टिप ज्यावता रात बिरात कोई कदास दुख सुख री पूछ लेंवतो, म्हारै घर रै पगोथियो चढता नै लाज आवती, बठै भीड रो तातो लागग्यो। दो चार कार घर रै आगै खडी ही रैवती। फोन जकै री म्हे सक्ल ही कोनी देखी। बो कान रै आगै लाग्यो ही रैवतो—'हलो, मनीस्टर सा'ब है क्या ?' म्हानै जवाब देणो पडतो। खद्दरधारी टोपी आळा मिनखा री तो लगस ही लागी रैवती। नौकरी री भरमार ही, आगै पुलिस रो पैरो। म्हारा पापा कदेई बारै दौरै जावता तो की भीड कम होवती। पण बारै आवता ही पापा नैं बेल ही कोनी मिलती। लोग काई बात करता, क्यू आवता, काई काम हो बारो, पण नया नया, बूढा, जुवान, नूबा नकोर कपडा मे च्याम्मर मडरावतो रैवतो सैंद रै छातै रै आगै मोमाक्खा रो किरकियो सो। मा कै अर मेरै, म्हारै भाइयै रै कपडा रा कई जोडा त्यार होग्या। पलगा पर कई डिजाइना री चादरा सोफा स्यट् अर दर्या हर कमरै मे लाग्योडा। मनै तो इयां लाग्यो जाणै म्हे नरक स्यू सुरग म आग्या।

म्हू स्कूल जावण लागगी। स्कूल म्हू जावती कार म, आवती भी म्हू कार म। सरू-सरू म सगळी चीज म्हानै अजीब लागी। सोफास्यट् पर

बैठती तो उछळती, वार मे बैठती तो उछळती, म्हारै ओ खेल सो होग्यो कई दिन तो ओ खेल करती, फेर तो सै गै होगी, बो म्हारी जिन्दगी रो हिस्सो होग्यो ।

स्कूल म सगळा मास्टर लाडगोड करता, भोत सोहणो अर सुथरो स्कूल हो, मास्टर भोत आछा हा, लोग कवै— मास्टर मारै' पण बा तो म्हानै कदे 'अलफ हू बे' कोनी कई, छोटी तो ही, फेर म्हू बचपनै मे फूटरी ही, फेर मत्री री बेटी, आछा कपडा पहरती, डौल ऊ की और सातरी होगी म्हारै पढणे अर खेलणो साथै हावतो, म्हारी घणी भायल्या बणगी, बै भी मोटै घरा री, कोई मत्री री छोरी, कोई की अफसरां री छोरी, बठै छोटै घर रो टाबर तो आवतो ही कोनी, म्हारा नाम भी सोवणा, म्हारा गाल भी सोवणा, म्हारो बोली भी मीठी, म्हानै सैंरला दिन कदे कदे याद आ ज्यावता, म्हारी पुराणी भायल्या भी याद आवती— एक ही सुमित्रा, पण म्हे कैवता—सुमतरडी, एक ही निर्मला, पण म्हे कैवता—नीमली, एक ही इन्दिरा, पण म्हे कैवता—इंदगी, फेर कई तो सरूस्यू ही ओछा नाम हा—टीडकी, डोडरडी, धापली, वाळूडी । म्हारो नाम तो है—स्वराज, पण म्हानै छोर्‌यां कैवती—सोराजडी, पण बै छोर्‌या अबार म्हानै याद तो आवै, पण न तो वै म्हारै कनै आवै, न म्हू जाऊ, अबै तो नई भायल्या होगी—निशा म्हारी सगल्या स्यू आछी भायली है, म्हारै वरगी गोगी चिट्टी, कदे कदे म्हे दोनू, म्हारी कोठी मे लॉन मे गुलाब रै फूल रै साथै खडी हो ज्यावा, एक-दूजी नै पूछा—बोल, गुलाब फूटरो कै म्हू, म्हे एक दूसरै री बडाई करता, फेर गुलाब नै सूगता, फेर भी फूल नै तोड लेवता, फेर एक फूल और तोडता, कदे बाला रै लगावता, बाळा रै लगावता, फेर म्हारी चोट्या मे टाग लेवता । एक भायली और ही म्हारी—नीरा, बा भी साथळी ही, पण बीरा नाक नक्सो म्हास्यू भी सोवणो ही । बीरो डीलडौल मोटो, आख्या मोटी, नाक तीखो, बीरी राग जाणे लता मगेसकर गावै है । म्हे तीनू एक तमासो और करता —म्हे फोन पर नीरा रा गीत सुणता । कदे नीरा आपरो रेडियो लगा लेवती अर म्हानै गीत सुणावती । बा दिना रेडियो भोत बडी बात ही, आजकलै तो रेडियो होग्यो दाळ-रोटी । म्हारा पापा रेडियो रै बडा खिलाफ हा—बै गाणा म्हू डरती-डरती सुणती । फेर

मां मनै बतळाई—'म्हराज, थास त्यार होग्या, आपां नै चालणो है।'

मा मनै कपड़ा पराया, मूंडो, हाथ पग धोया, बाळ बाया अर त्यार कर लो। फेर विजय नै त्यार करयो अर म्हे तीनूं कार में बैठग्या।

गाडी सेठ रो ड्राइवर चलावै हो। पन्दरा-बीस मिनट में म्हानै सेठ रै डोरे आपरी हवेली में जा बारी। हवेली मोत मोटी ही, दू मजली, म्हारी कोठी बीसी तीन बण ज्यावै। सेठ, सेठाणी बांरी मोटी छोटी मडकां, छोटा मोटा छोरा म्हारी अडीक में खड़्या हा—हाथ जोड़्यो, सगळा 'नमस्ते जी, नमस्ते जी' करन म्हारो स्वागत करयो। कोई म्हारी आंगळी पकड़ै तो कोई विजय री। एक कमरै में म्हारै खाण-पान को बन्दोबस्त हो। म्हू तो म्हारली कोठी पर ही धोमरो हो, पण ओ कमरो देखन म्हारी आंख्यां चका-चौंध होगी, इत्ती सजावट ही के बीरो बरणन हीं नीं कर सकूं। म्हारला कमरा तो ईं रै आगै ऐन ओछा लागै हा। मेज पर पैंसी स्यू स्टील रा बरतन सजेड़ा हा, बां पर भांत-भांत रा पकवान। म्हू मन में करी, आ सगळो कुरसी री माया है, नीं तो ईं बिरमानन्द री बहू नै कुण भूल बुलावै हो, पड़ोसी मनै उधारै आटै खातर मा जावती तो उधारो आटो कोनी मिलतो।

मा गोफारयट् पर जबन बैठगी, म्हू भी बैठगी, विजय भी। सामै सेठ अर सेठाणी बैठग्या। मा इसा दिनां में इत्ती अभ्यस्त होगी के बीरै लुगाई आळो सो सको सरम कोनी रयो।

भांत-भांत रा पकवान सामै पड़्या हा। एक-एक नै चाख्या तो भी पेट भर ज्यावै। फेर जगा-जगा जावणै आवणै खावणै स्यूं मन भरयोड़ो हो, मा अर म्हे थोड़ो भोत ही खायो, पियो। फेर तो सेठ, सेठाणी म्हारै पापा अर मां री बडाई रा बखाण सरू कर दिया तो कान ऊबासी लेवण लागग्या। छोरा अर छोर्‌या इसा सोवणा कपड़ा पैर राख्या हा के म्हारै मन में ईरको होवै, म्हू मन में करी, 'लोग देस नै गरीब बतावै, अठै तो धन री दरिया चालै है।'

म्हू एक बात मा नैं कंय दी—'मा, इसा बरतन आपां ही ल्यांवां।'

साची बात आ ही के म्हारै तो पीतळ रा कोजा बरतन। मत्री बण्यां पाछै की चीणी रा बरतन पापा मंगाया हा, जका आयै दिन फूट ज्यावता, आयै गये खातर कीं कासी रो थाळ्यां ही, स्टील रो तो एक गिलासियो हो

कोनी ।

एक कानीं खड़यो सेठ रै छोरै पूछयो, 'काई करवै है, बेटी' वण फट बात चिल्ली ।

—इया ही करै है, मा बोली, टावर है ।

—बोल, बेटा, बोल, सेठाणी पूछयो ।

फेर तो वै बात रै लैरै ही पड़ग्या, मा नै बतावणो पड़यो—'आ आपरा स्टील रा बरतन सरावै है ।'

—ओ हो, बस, सेठ बोल्यो ।

—आपणै, माताजी नै स्टील रै बरतना री दुकान माथै ले ज्यायो, जद् छोडन आवै, सेठ फेर कह्यो ।

मा सेठाणी नै भी नूतो दे दियो ।

पाछा आया जद् कार स्टील रै बरतना स्यू भरेडी ही । मा तो बानै एक टक्को दियो कोनी ।

फेर एक दिन सेठ अर सेठाणी भी घरे आया, मा भी बारी आछी आव-भगत करी । मा रा ल्यायेडा स्टील रा बरतन अबार काम आया ।

एक दिन मा सेठ नै पापा स्यू मिलायो पापा सेठ रै जावणै रै बाद मा नै इत्ता ही हँस्या—'अबै काई फिकर है । तू घर चलाणो सीखगी ।' म्हू तो बा दिना ई रो अरथ कोनी समझी ।'

पापा भोत काम कर्या करता, पापा नै कदे वेल मिली ही कोनी । दिन उगे की मोडा उठता, उठता ही इसनान कर लेंवता, नास्तो रो लेंवता, फेर तो बस दिन भर मिलणो जुलणो, लोगा रो तातो लाग्यो ही रैवतो, रोटी खावता ही दफ्तर चल्या ज्यावता, दफ्तर स्यू पाछा आवता ही बा ही लगत, लैण लाग ज्यावती । रात नै बारा बज्या ताई, बानै तो वेल कोनी मिलती । म्हे तो सो ज्यांवता, पापा कद सोवता, म्हानै पतो कोनी ।

दो दिन घरे ठहरता तो च्यार दिन बारै । च्यार दिन घरे ठहरता तो पाच दिन बारै । म्हारै घरे छोटै स्यू छोटो अर मोटै स्यू मोटो आदमी आवतो ।

म्हे सुणता—आज केन्द्र रो मनी आर्‌यो है । बीरी खातरी मे कोई कसर कोनी रैवती । राज रा मत्रीगण तो रोज ही आउता रैवता, एक-दो

बार तो हरदम कोठी में खड़ी ही रैवती। फोन इत्ता आवता रै फोन स्यूं फोन जुड्यो रैवतो। एक फोन रै बार दूजो फोन। एक फोन पापा रै कमरै में रैवतो, दूजो बारै।

गाव रै लोगा रो तो झुड रो झुड आवतो, म्यारू कूटा रा, न्यारी-न्यारी पोसाका रा, न्यारी-न्यारी बोलिया रा। पापा राजनीति रा चातर खिलाड़ी हा। जद गाव आळा आवता तो पापा बारै साथै बारै ही घास रै मैदान में बैठ ज्यावता, नीचै ही घास पर, जमीन पर जठै वै बैठता, वाम्यू हस-हस, मुळक-मुळक, मीठी मीठी वाता करता, बठै ही बारै साथै चाय पी लेवता, बारै साथै बैठन रोटी खावता, बारो काम सारता या नी सारता, पण वै हसता ही आवता, हसता ही जावता म्हारा पापा थिप्या दिना में जनता रा प्यारा नेता होग्या, जनता रो ओ प्यार रो श्रेय मा नै भी हो, बारै सोणै उठणै रो, ठहरणै रो, खाणै पीणै रो, चाय पीणै रो, बपड़ै लत्तै रो बन्दोबस्त मा हाथा करती, हर बटाऊ नै जायन पूछणो—'क्यू भाई, रोटी खाई कै' नीं।' म्हारै घरै मा किनेइ भूखो कोनी सोवण दियो, पाछै कोनी मरण दियो। अगलो आम लेलीया आवै, बीरो काम सरणो चइजो, चेस्टा म्हारी है, भाग तेरो है, आ भावना ही मा राखती अर थिप्या दिना में मा नै लोग माताजी कैवण लागग्या, छोटा लोगा रो मा ही आसरो होग्यो, वै काम मारू मा नै ही कैवता।

योया तो दिन भी एकसा कोनी रवै, एक दिन ही बीस करवट लेवै, दिन उगे रूप और, दोपारै रो रूप और, सझया रो रूप और अर रात नै और। हर पल पलटा खावै। दिना रा रूप भी एकसा कोनी, सरदी, गरमी, चिरखा, ओ ही हाल मिनखा रै दिना रो हो, वै भी एकसा कोनी रवै पण राजनीति रा रग तो किरडै री काया रै रग-सा है। अठै रक नै राजा बणता देर कोनी लागै तो राजा नै रक बणता भी देर कोनी लागै। एक दिन चाणचकै समाचार आयो कै मत्रीमडल अस्तीफो दे दियो, पापा भी मत्रीस्टर कोनी रया, भीड एकदम साफ, सिपाही सरडा सगळा पार, कोठी में कुत्ता बोलै, रात नै दिना नै एकदम सुनसान, कठैइ मिनख रो भोरो ही कोनी, चपड़ासी पतो नी कठै गया, कार तो काई कठैइ कोई साइकल ही कोनी, पापा एकदम गभीर, एक रात बारै गया, पतो नी कठै, दूजै दिन सुबह पापा

स्यात् कोनी आया, पण पापा को एक पुराणो बेली आयो, आवता ही बोल्यो—'समान सामल्या, मकान ले लियो है किराये पर, थानै बठै ही चालणो है।' म्हे बोरिया बिस्तर बाध लिया। म्हारै कनै काई हो, सगळो कोठी रो ही हो, म्हे एक छोटै सै मकान मे आग्या, म्हारली सागी माव्या, सागी बिस्तर, को बरतन भाडा जरूर बधग्या हा। पापा ओजू सडक पर आग्या, कोई कार नी, पगा ही फिरै। म्हारली सगळी भायल्या छूटगी, निशा, नीरा पतो नी कठै गई। बै नेता, बै अफसर, बा भीड, चपरासी सिपाही देखण नै कोनी मिल्या। पापा दो-तीन दिन सारू फेर बारै गया, फेर चाण-चकै कण ही समचार दियो—'पापा ओजू पकडीजेला,' म्हू तो जोर-जोर स्यू रोवण लागगी, बोकरडो पाड दियो।

मा बडी स्याणी, बण ओजू धीर बधायो, पण पापा दिन उगे ही आग्या।

पापा दफ्तर आवता, पण ओ तो पार्टी रो दफ्तर हो, पगा ही जावता, पगा ही आवता, पापा रै सरीर मे कोई फरक कोनी आयो, बारै व्यवहार मे कोई फरक कोनी आयो, बिया ही हसणो, बोलणो, सोवणो, उठणो, भीतर कांई पीड ही तो पतो नी, पण बठैई कोई उदासी कोनी दिखी, मा जरूर फीकी पडगी, मूडै पर उदासी आगी, जकी लाली आई ही, बा ओजू काळस में बदळन लागगी। बै दिन तो याद आवता, पण पापा री मस्ती देखन म्हे लोग भी मस्त रैवण लागग्या।

वक्त जद करवट लेवै, बो छानो कोनी रवै। अब वक्त तो भोत बडो हाथी है, मिनख बीरै सामै कीडा-मकोडा है। ओ पसवाडो फोरै तो मिनख मे काई साजनो। अबार वक्त पसवाडो फोरै हो। बो पुकारा मारै हो। बीनै इतिहास बदळणो हो, बण बदळ्यो। बडा-बडा महल माणिया ढैवण लागग्या। बी रो फुकार साथै बडा-बडा राजा महाराजा उडग्या। न तलवार चाली, न बदूक। न तोप रो गोळो सुणीज्यो, न बम फाट्यो, पण फकत इतिहास उदळ्यो। देर भी कोनी लागी, रोज नई बात सुणणै म आवती, करतां-करतां वक्त जी टिका लियो, पण जितो बदळाव आवणो हो वितो आयग्यो। हजारा बरसा रा जमडा राज कोनी रया, तलवारा रै नोंक स्यू लियेडी जागारा कोनी रयो, फक्त इतिहास रैग्यो। [illegible] दिखा दियो

वे राजा रा अर रा राजा क्या बण्या करै है, एक दिन ओजू आग्यो वे म्हे पूठा बीसी कोठी मे चल्या गया।

अबै राज री सीव लाबी चौडी होगी, भात-भात री सस्कृतियां रो सिणगार हो अबै राज। भाषा री अळगाव री भीता ढेरगी, सगळा दसा लागै जाणै हाथ घालन मिल्या।

आ सस्कृतिया री खुलो बितराम म्हारी कोठी मे निजर आवण लागग्यो। म्हारी कोठी रै लॉन मे जद वै आप आपरो झूमरो लगान एक ठौड बैठता तो जाणै एक बगीचै मे भात-भात रा फूल होवै। कीरो गोळ साफो अर अगरखो तो कीरै छुरगै आळो साफो अर अचकन तो कीरै पागडी अर धोती, भात-भात रा बवेस अर भात-भात रा रग रूप, आ है आपणी धरती जकै रै पीठ पर धरती रो सोवणो अर गरबीलो इतिहास है जकै रा आक सोनै रा लिखेडा है।

आ ही चरकचूडी पर ओजू चढगी पापा रो बो ही कार्यक्रम, बै ही दोरा, बैंया ही मिलणो-जुलणो बै ही धधा।

एक दिन दादी आगी—हाथ मे एक बोरडी री कटेडी लाठी, आम्या रै चसमो, बोदो घाघरियो ओढणो, कुरती, काचळी गे जगा कुडतियो। बूढी लुगाई ही, साज सिणगार री तो कोई अरथ ही कोनी हो। पण जकी हालात मे आई आ ओपती कोनी ही। पण म्हे सगळा राजी हूया—'दादी आई'' दादी आई। दादी कोठी रै बीच रै आगणै मे माची घालर बैठगी। पापा आया, आपरी मा रै पगा लाग्या। दादी ओळमो दियो— 'बेटा, तू तो कागज दे कोनी, म्हू तेरै कागज नै तरसती रऊ, लोगा ही मनै ओ समचार दियो कै तू ओजू मनिस्टर बणग्यो। भला आदमी, कागज तो दे दिया कर।'

पापा दादी रै पगाणै माची रै दावण पर बैठग्या, अर बोल्या—'मा, वेल ही कोनी मिलै, कागज काई दयू, अबै आ तेरी पोती पढगी इनै ओ काम समळा।'

—तू कुणसी मे पढै है ए, गुराजडी, दादी नाम बिगाड'र बोलती।

—पाचवीं मे, मैं कयो।

—तो भोत पढगी, दादी पाच-सात नै घणो पढेडो मानती, दादी कै

दिना मे आठ स्यू ऊपर कलास कोनी हावती ।

—वठै पडगी मोत, मैं क्यो ।

—औ तेरै बाप स्यू तीन ही क्लास लैरै रयी ।

—पापा आठ पडेडा हा, ज्ञान तो सम्पर्क, अध्ययन स्यू वद्‌यो ।

—पापा नै भोत ज्ञान है । दादी···

—क्यारो ज्ञान है, म्हू मसा मास्टर नैं क्यन पास करायो हो, फिरतो जोडिया पर कुरा डडो खेलतो ।

—पापा हसण लागग्या, मा इत्तै मे चाय ले आई । दादी मा मानी देखन बोली—'टावर तो सगळा ही हुसियार होर्‌या है । बीनणी भी ठीक होरी है । तनखडी, तानखडी ठीक मिल ज्यावती होसी, इत्तो मोटो पद है तो तनखा तो है ही ।

पापा की कोनी बोल्या । फोन री घटी बाजगी, पापा खुद ही उठन फोन कानी चाल पड्या, फेर फोन नै लेयन आपरै कमरै मे गया ।

—दादी सगळा कमरा नै घूम-घूम न देख्या, फेर कोठी रो लॉन देख्यो, फूला रा पौधा देख्या, फेर गाया री गोर कानी चली गई, जकी लबार ही ल्याया हा ।

दादी नै एक न्यारो ही कमरो दे दियो, मा कैय दियो—'थानैं अठै ही रैवणो है, या साख ओ कमरो है, टेम सिर रोटी चाय आपो मिल ज्यासी, बैठ्या मोज करो, माळा फेरो ।'

दादी नै एकली नै कया आवडै । दादी मूई री भाषै क्यार काडै ही ।

पापा तो मा रै सुभाव नै जाणै ही हा, बै म्हानै तो कोनी सभाळता, पण दादी नै जरूर सभळाता, बै जाणता, मा बूढी लुगाई है, इनैं जे न सभाळागा तो आ भाव जायन विगोवैगी । दादी दो दिन सगळै घर नैं सभाळ लियो, सगळी वात रो बीनैं पता लागग्यो ।

म्हे सगळा रात नैं रोटी खायन आडा होवळ वाळा हा, सगळा नैं वेल मिलगी ही, काम कोनी हो । गरमी रा दिन हा, सगळा डागळै मे जायन एक दरी पर लेटग्या । दादी भी वठै ही, वा गाव री बाता सुणावण लागगी, इत्तै मे बठै ही पापा आग्या ।

दादी पापा नै आवता ही बोली—'बीरमा, थनै तो बैठा टेम ही कोनी

मिलै, ओ क्यारो नौकरो।'

—मा ओ काम ही इसो हो है।

—काम तो तेरो चोखो, पण इण काम री कितीक तनखा मिलज्या है।

पापा आपरी तनखा बताई।

—की ऊपर-सूपर तो आ ज्यावै या सूखी पाकी तनखा ही है।

—सूकी पाकी तनखा हो है, वारैं आवा तो राज भाडो-भट्टो दे देवै, बीरैं माय की ऊबर ज्यावै।

—चलो, बो तो ठीक है, दादी कयो, पण म्हूं तो आ दिनां मे देख्यो तेरो खरचो भोत अबडो है दिनगै स्यूं लेयन रात ताईं लोग आवै, बठै ही गिटै अर बठै ही चाय पीवै, तू तो रोज बरात री बरात जिमावै, ओ कठै ऊँ आसी।

—आ रैं ही भाग रो है, मा, आपा कठै ऊ ल्याय हा। पापा जाणै हा मा नैं आया गया सुहावै कोनी।

—तो तू आ बता, तेरली टाबरी काईं खावैली, तनै काल नै काईं कोनी चाहीजै, सुराजडी चार साल मैं हुयी ब्यावण आळी, फेर आज ही के तू बूढो होग्यो, फेर मैं एक बात इण नौकरी मे और देखी, ईंरो तो एक पल रो ही भरोसो कोनी, लैरैं आपणै कनै खूड तो बीघा दस है।

दादी धोळा धूप में तो कोनी करया हा। दादी थोडी ऊमर मे विधवा होगी ही। पापा नैं पाळ्यो, मोटो करयो, ब्यायो थ्यायो, फेर नौकरी भी दादी ही लगायो, जगा-जगा लोगा कनै हाथ जोडती फिरी, दादी ओजू ताईं बेफिकर कोनी हुई ही, चाहे दादी पापा रैं व्यक्तित्व रैं सामैं बिना तेल बाती रो दीयो हो, पण माईत रो मन औलाद मे होवै है, बीरैं दुख-सुख नै जद् ताईं बीरा साम रवै जद् ताईं बीरो फिकर मिटै कोनी।

पापा आप री मा रो ओजू जी थमायो—मा, तू क्यूं फिकर करया करै है, जद् औलाद स्याणी हो ज्यावै तो माईता नैं फिकर छोड देवणो चाहिजै।

दादी फेर बीं भाव मे ओजू बोली—औलाद स्याणी हो ज्यावैं तो फिकर छोडणो चाहिजै, पण तेरी स्याणप मे तो भोरो ही कोनी, बावळा, म्हूं दो दिना हू देखण लागरी हु, दिनगैं ऊ लेयन दिन छिपे ताईं तेरैं चलै रै

चेन कोनी, म्हू बीनणी नैं कयो. बीनणी, ओ नाई, ओ तो होटल बणग्यो, बिना पीसा रो, मरज्याणा अरण-वरण रा कठै ऊ आवै है, तेरै कोई मीला चालै है, ऊपर स्यू कोई आमो बरसै है, कदे चाय, कदे रोटी बिस्कुट, भूजिया, तू तो रोज गाम जिमावै, तरो घर क्या चालसी, बीनणी पण बीनणी चुप, तू ही चुप। तनखा तो तेरी तीन दिन कोनी चालै, तरी कोई गोज म घाल ज्यावै, तो केरो कोनी, आवै तो अठै मोटा-मोटा है।

—तू क्यू फिकर करै, मा, पापा फेर हसन बोल्या, आपा भी आरै ही भाग रो खावा हा।

—तू बात बतावै कोनी, दादी बोली, म्हू तो क्यू देख लियो, तेरो अठै की कोनी, आ कोठी राज री, माचाढ़ेला राज रा, दरी दरकली राज री, अै काई बतावै, सफासट राज रा, धोळा धोळा बरतनिया तो तेरा है, हैं रै, अै गाया उधारी आई के आरा पीसा दिया।

पापा नै, म्हानै सगळा नै दादी री वाता पर हसी आवै, दादी स्यात् समझगी के ई माया नगरी रो कोई पतो नी, फेर वा बोली—भई, सगळा हसो हो, तो म्हू बोलू ही कोनी, वात तू म्हानै वतावै कोनी, बात कठैई तेरी गोजी माय है, तू जाणै है, मा रो काई, आ बात छिडरती वार कोनी लगावै ओ रमो राज रो काम, नौकरी रो काम, म्हू काई बावळी हू। बात आगै आज्यावै तो राज फास लेवै, खैर ई बात नै तो छोड, पण लोगा नै मत खुवाया कर, तू पीसो भेळो कर, आपा गाव मे चोखो मकान बणावा, जमीन लेल्या, लोग आ तो कवै—खसम तो जुवानी मे छोडन चल्यो गयो हो, पण दाह री जात कठै ताईं आपरी औलाद नै लेगी।

दादी गाव री सोच स्यू बारै कोनी निकळ सकै ही, फेर वा गाव री वाता पर उतर आयी, वाजवलै घडसियै रो छोरो घणी दारू पीवण लागग्यो, भूरियै आपरै छोरै रो व्याह कर दियो, रिपिया तो पाच हजार लगा दिया, पण करजदार होग्यो। लूणियै रा टीगर ओजू कुवारा फिरै है। मलियै री बात पर दादी जोर दियो—'बीरमा, तू मल्लू नै जाणै है न, वो सुथार, आपणै पिछवाडै घर है, बीरी छोरी कुवारी है, व्यावण सावै है। मलियै मरै कनै स्यू हजार रिपिया उधार माग्या, आछो व्याज देसी, जमीन अडाणै मेलै है, मनै वण कयो के बीरमै कनै स्यू ल्यादे, **बो तो** ... गोव ...

पण तेरं कनै ऊ काई मागू, मनै तो तेरली पार पडनी कोनी दीसै ।

पापा आपरी मा री वाना नै सगळी समझी । पापा बोल्या—तनै हजार रिपिया चाहिजै ।

—हा, हजार रिपिया, दादी खुस होयन बोली ।

—तो ले ज्याई, पापा कयो ।

—तेरी तनखा कद आसी ?

—तनै मेरी तनखा को काई फिकर, तू अभी तो टैर, मू जावै जद ले ज्याई ।

—तो ठीक ।

दादी याग-बाग होगी, स्यात् दादी इण काम सारु आई ही । दादी आज आपरै मूडै री काई काळजै री भाप काडली ।

दो दिना पाछै दिन उगता ही दादी घर स्यू बारै चली गई । म्हे लोग क्यू गौर करै हा, दादी कोई टाबर तो ही कोनी, चाय तो पी ली ही, पण रोटी आळै सभाळो तो दादी कोनी, फेर आसै पासै कूडी नी दादी कोनी, चाय आळै वखत दादो कोनी आई, आसै-पासै सडका पर गाडी भेजी, दादी कोनी, अरे दादी गई कठै ? दादी री पोटळी भी पडी, बा तो आपरी लाठी रै टेगै कठई निकळगी, सहर इत्तो मोटो लूटो कठै ढुढवावां, फिकर पडग्यो, पण दिन छिपता ही दादी आगी म्हे सगळा फेर तो दादी नै घेरली—दादी, तू कठै चली गई । म्हे तो ढूढ-ढढन थाप लिया ।

—अरै बेटा दादी आपरी लाठी गेरती माची पर बैठन बोली, 'म्हूँ कठै जावै ही, मनै राड नै कठै ढोही है, म्हू तो बैठी-बैठी ऊजगी तो सोची, चालो, घरा मे फिर आवा । पण अठै घर कठै, कोस-कोस मे एक-एक घर । म्हू पडोस रै घर मे गई, एक और कोठी है ।

—वा तो चीफ इजीनियर री कोठी है, दादी ओ तो मदरासी है ।

—वळो, मनै काई वेरो, म्हू तो सोच्यो ज्यू आपणै सारै तिखमै रो घर है, ज्यू होसी, म्हू गई तो पैली तो बण चपरासी मायनै कोनी वहण दी, बोल्यो—बारै जाओ बारै, पण वो हो देसी आदमी, म्हू कयो—'रै म्हू तो ओ थारो मनीस्टर है न, बीरमो, बींरी मा [illegible] ।' जद् बो चपडासी मनै कोठी मे लेग्यो, वठै टाबर और तरिया रा, लुगाया और तरा री, पैली तो बै भी

कोनी समझ्या, मनैं दुतकारी, पण बिचारैं चपड़ासी सारो लगायो, म्हानैं चाय प्याई, बिस्कुट खुवाया, घणी खातरी करी, एक कुरसी पर बैठा दी, म्हू बोलू, वै कानी समझैं, वै बोलै, म्हू कोनी समझू, रासो होग्यो, बा कयो— थानैं घरे छोड़ आवा, म्हू कोनी आई, म्हू तो फेर बारें दूजी कोठी में चली गई।

म्हू कयो— दादी, बा तो राज्यपाल री कोठी है।

— म्हू की राजपाल नैं जाणू कोनी, राजपाल नाम है काईं बीरो।

म्हानैं भोत हसी आई, फेर म्हे दादी नैं समझाई।

दादी फेर बोली—ओ बो आपणो अफसर है, हा भाई, बठै एक सिपाही खड्यो, पैली म्हू समझी, ओ थाणो है, मोटै सहर रो मोटो ही थाणो, पण बठै की भला मिनख फिरता दीसै हा, तो म्हू सिपाही रै सारै कर निकळगी। पण बठै तो काग बोलै, कुत्ता भूसैं, सूनो सो अडगो हो, म्हू पूठी आगी। फेर आगै एक कोठी और है बठै भी सिपाही।

—ओ, म्हू कयो, वै आपणा मंत्री ही है।

—हा बो कोई मंत्री सतरी है, बा लुगाई भोत आछी है, देसी लुगाई, आपणी बोली, थोड़ो फरक तो है, बताई तो म्हारी बडी खातरी करी, हलवो बणायो देसी घी रो, सब्जी, रायतो करयो, बीरै राबड़ो ही रै, रोटी बाजरी री बणवाई, म्हू तो चूलै रै सारै चली गई। म्हू धापन धू होगी। फिर बठै ही सोगी। फेर चाय बेळै चाय मिलगी। बारै एक छोटी आछी है, म्हानैं बडी दाय आई। म्हू पूछयो— बेचो हो काईं, पण बै क्यू बेचै।'

दिन छिपे बा मनैं गाडी में अठै भिजवादी, म्हू आगी।

दादी दूजै दिन बठैई कोनी गई, पण इण बा माहौल स्यू आखती होगी ही। बीनैं तीजै दिन कैवणो पड्यो—'बीरमा, मनैं अठै कोनी आवड़ै। म्हासू कुण बतळावै, कीनैं वेल है। बठै ही घणकरा बेला पड्या है, घडसियै री मा, फूसियै री दादी कुरड़ियै री भुवा, मनैं टेम ही कोनी मिलै, सगळा अडोसना रवै, बडा कोड करै, चाय, छा बिना रैवण ही कोनी दे, चाय छा री तो अठै ही कमी कोनी, मौज भी घणी है, पाणी, बिजली, पंखा, आछो मकान, आछी सेवा, पण भाई, मेरो तो जी कोनी लागै। दिन उगज्या तो छिपै कोनी, छिपज्या तो उगै कोनी।

दादी नैं म्हे एक दिन और ठहराली, आथणै दादी वागै लान पर बैठी ही, म्हू भी वनै चली गई। दादी मनैं बोली, 'सुराज, एक बात पूछू तनैं, ओ आदमी कुण है ?' बण दूब पर बैठ्यै आदमी कानी आगळी करन कयो। म्हू कयो— दादी मनैं तो बेरो कोनी।

—ओ दस दिना ऊ अठै ही मरै है, दोनू वक्त रोट पाडै है।

दादी नैं घ्यावस कठै हो, बण जोर स्यू हेलो मारयो।

आदमी बनै आयन हाथ जोड्या अर सामी बैठग्यो।

—कुण है रै तू, क्यू आयो है—दादी पूछ्यो।

बण आदमी आपरो नाम ठाम वता दियो। और कह्यो—म्हारै छोरै सारू नौकरी चाऊ। दादी बोली—'मरज्याणा, अठै नौकरी रो खंण गड्यो है भाई, दिन दस होग्या तनैं बैठ्या न, तेरो कोई ठौड ठिकाणो है क नी, बेटा, अठै आवैगा रोट पाडण नै, देखो, आज गाडी चढ ज्याई, या तेरै और एई लागी, जे रसोई कानी चल्यो गयो तो मेरै बरगो बुरो मत जाणी, ई खल्लै रो काई नाम है, जट पाड लेस्यू।

दादी बीरो जचान माजनो ले लियो, दिन छिपे बडी अटक्ळ स्यू बीन रोटी खुवाई, दादी नै पतो कोनी लाग्यो, दादी नैं रारचो कोनी सुहावतो, दादी रो जावणो ही ठीक हो, दादी नैं दूजै दिन बीदाई दे दी, बा जावती बखत हजार रिपिया कोनी भूली।

5

चुनाव रा सिलसिलो सरू, नेतावा रा भाषण तेज अर तीखा होग्या, जन-सम्पर्क वधण लागग्यो, देस रो पैसो चुनाव, सविधान रै मुजब हर बालिग रो वोट, जनता मे नयो उत्साह, नयो जोश, आपणी सरकार, आपणो देस, आपणो राज। सत्ताधारी दल रै साथै विरोधी दल, देस रा कई मोटा नेता विरोधीदल बणा लिया, अै दल सत्ताधारी दल री जरूर

बाट करै ।

पापा रो काम भी वधग्यो, अै सरकार रै काम रै सागै पार्टी रो काम भी करै, दोरावा री तादाद वधगी, घरे कम रवै, बारै घणा । कदेकदास म्हू भी पापा रै सागै जावती । पापा मनै कदे कदे राजनीति री बात बतावता, वा कदे समझ म आवती, कदे नी आवती, पापा रो चिन्तन ऊंचो, विचार ऊंचा, सोच समझ ऊंचो, बारो विचारधारा एक दर्शन जको ऊंडो अर गहरो ।

कोठी मे पार्टी रै कार्यकर्तावां री भीड वधण लागगी, नया नया लोग, नया नया चेहरा, बूढा, जुवान, आदमी, लुगाई सगळा ही ।

एक दिन पापा रै कार्यकर्त्तावां मे बोलै कार्यकर्त्तावां री गुपताऊ मीटींग पापा चुनाव-समिति रा सदस्य, पापा नै आपरै छेत्र रै उमीदवारां रो चयन करणै रो पूरो अधिकार । राज री चुनाव-समिति रा सूठा सदस्या म स्यू म्हारा पापा एक सूठा सदस्य । कार्यकर्त्ता पापा री घणी चापलूसी मे लाग्येडा । बींया तो सगळा सदस्या ही आपणी बात कयी, पण पापा री बात घणी व्यावहारिक । पापा कयो—पार्टी रो सगठन भोत जरूरी, चुनाव मारू हर कार्यकर्त्ता रो पूरो समर्पण, बो ध्यान स्यू आपरै उम्मीदवार नै जीतावणा री पूरी चेस्टा । टिकट तो एक ही आदमी नै मिलसी पण दूजा इसै मनोयोग स्यू जुडै के उम्मीदवार री हार बीरी हार मान'र चालै । टिकटा देवण म जकी बात रैवसी—बो कार्यकर्त्ता रो बी जात रो होवै जकी जात रो बठै बहुमत, उम्मीदवार रै धन री जरूरत, पार्टी की पीसा देसी, पार्टी कनै पीसा आसी कठैऊ, बठै स्यू, इसा आदमी भी सागै मिलाणा पडसी जका पीसा आळा है, नी तो पार्टी पीसा रै टोटै मे कमजोर पडसी, चुनाव पीसा रो खेल है, उम्मीदवार एहडो होवणो चाहिजै जकै री इमेज बी छेत्र मे आछै आदमी रै रूप मे होवै दूं रै सागै बो पार्टी रो कार्यकर्त्ता भी होवै जे जेळ गयोडो होवै तो बीरी होड कोनी ।

पापा नै भाषण रै पाछै शिवमगल जी जका पार्टी रा मोटा कार्यकर्त्ता हा, कई बार जेळ मे भी गयेडा हा पापा रै भाषण रो प्रतिरोध करयो । वा कयो—'बिरमानंदजी री बातां और तो आछी पण जकी बात जात रै बावत कयी है, म्हानै भोत अखरी है, म्हारै सागै दूजा लोगा नै भी आ बात

अधरमी, आपणो औ चुनाव देस रो पैलो चुनाव है अर आपां जे उम्मीद-वारा रै चुनाव सारू जातवाद रो मापदड लेस्यां तो नेचय ही जातवाद नैं बढावो मिलसी। आपां अगरेजा रो विरोध करयो, बां जाणबूझन हिंदू मुसलमान रो सवाल पैदा करयो, अर देस रा दो टुकडा हुया, आपणा नेतावा घणों ही ताण मारयो, पण देस रा दो टुकडा हुया। जे आपां ही इण बात नैं बढावो देस्या तो देस रा और टुकडा होज्यासी, जातियां म बैर बध ज्यासी, गाव गाव अर गळी गळी मे फोजदारया हो ज्यासी, आ नई परम्परा देस सारू घणी घातक होसी।'

शिवमगलजी री इण बात रो असर तो होयो, पण अबार राजनीति रो मोह स्याण वाली कोनी हो, स्वारथ बाली हो, शिवमगलजी स्वारथ स्यू ऊपर उठेडा हा, इण बात तो असर स्वारथ रै चस्मै स्यू देखीजै हीं।

पापा राजनीति रा स्याणा मिनख हा, कोरा सिद्धान्ता अर आदर्शा स्यू माडेडा कोनी हा, बा आवती बक्त शिवमगलजी नैं आपरी कार मे साथै बिठा लिया। पण शिवमगलजी मोठी स्यू निकळ्या जद भी रिसाणा हा, पापा वानैं आपरी कार मे ही पाछा भिजवाया, पण दूजै दिन अखबारा मे खबर छपगी कै शिवमगलजी पार्टी छोडदी अर विरोधिया रै साथै गठबधन कर लियो।

चुनावा रो रग चढग्यो। च्यारू कूटा भापणा रो जोर, गळी गळी मे पोस्टर लागग्या, जीपा पर जीपा भगण लागगी। पार्टीया रा झडा सिखर चढग्या। पण म्हारा पापा तो सकट लियार स्याया हा, एक सकट और आयो। पार्टी रा कई नेता म्हारै पापा स्यू नाराज होग्या, नाराज तो होवणा ही हा, कया नैं टिकट कोनी मिली, कया नै टिकट तो मिली पण जकी ठौड बै चावा हा—बठै कोनी मिली, कई वारै साथै हो लिया, कै सगळा भेळा हुया दिल्ली गया, दिल्ली हाई कमाड स्यू मिल्या, पण वारी एकर तो पार पडी कोनी, पण लैर पडेडा बुरा होवैं, वा लैरयो छोडयो कोनी, प्रधानमत्री राज री राजधानी रै दोरै पर आया, अठै बै ओजू मिल्या—वा पापा पर लाछण लगाया—ओ जातिवादी आदमी है, मुसलमाना रो विरोधी है, मुसलमाना नैं हिन्दू बणवावै है, थारै साथै झूठी फोटू छपवा मेली है, ईं रा अण पोस्टर निकाळ राख्या है, एहडा झूठा साचा मनघडन्त लाछण एक

सार्थे लेयन गया। प्रधानमंत्री पापा नैं बुलायो, साफ साफ कह दियो—आप पार्टी रै निसान माथै चुनाव नी लड सकोला।

पण नाम पाछा लेवण री तिथ निकळ चुकी, पापा रो नाम तो रह्यो, निसान भी रह्यो, पण पापा आप रै छेत्र मे कोनी गया। पापा रै नाम रो इत्तो प्रचार हो, पापा इत्ता लोकप्रिय हा, पापा री प्रतिष्ठा इत्ती बढी चढी ही के आरा पुजारी घर घर हा।

इन्नै राज रा राजामहा राजा चुनाव मे कूदोडा हा, कई राजा महाराजा पापा री पार्टी रै सार्थे हा, पण घणकरा विरोधी हा। कई सेठ साहूकार सत्ताधारी पार्टी रै सार्थे हा तो कई विरोधी हा। पापा रा होठ सूकडो रैवता। मूडो काळो टैंरो-सो रैवतो। घरे तो कदेई भूल्या भटक्या रात बिरात ही आवता तो घटा आध घटा ही रैवता।

चुनाव काई हो, पीसा रो खेल हो। पतो नी कठैऊ ओ पीसो आवतो, गरीब गुरबै रुनै तो देवण हो ही काई, इसो लागै हो जाणै सेठ-साहूकारा, राजा-महाराजावा री तिजूरया चौबीस घटा खुली रैवती। साची बात आ है के ओ गरीब ही पीसै री रट लगाया राखै, पीसै आळै रै पीसो याद ही कोनी, ओ तो पीसै रो खेल करै, बो खेल नै ही बो दूबतो रवै। जदै करोड़ री माया बेली पडी रवै, बो पीसै रो फिकर क्यू करै। पीसै रो फिकर तो बो करै जठै आथणनै दाणा री विध कोनी।

एक दिन पापा आपरै खास आदमिया री मीटीग ओजू बुलाई, वानै एक ही बात कयी—'आपा नै हर हालत स्यू बोट बटोरणा है, जाति रै नाम पर, धरम रै नाम पर, गाधी रै नाम पर, नेहरू रै नाम पर, जठै पीसो चालै पीसो फेंको, जठै दारू चालै, दारू री बोतल फेंको। देस रै लोगा में धरम री, मिन्दर री, मस्जिद री घणी कमजोरया है, कीनै खुदा री तो कीनै भगवान् री, कीनै गुरु ग्रन्थसाहब री सौगन्धा खुवावो, कोरै सिद्धान्त पर चाल्या तो पिट ज्यावोला। विरोधी आपरा हर हथकडा कम्म मे लेरया है, चूक्या तो मारया जावोला, राज हाथ स्यू निकळ जासी। राजा महाराजा री भोत असर है, राज हाथ स्यू मत जावण द्यो।'

चुनाव आपरै पूरे रग मे आग्यो। नेतावा रा पग धरती पर कोनी टिकै हा, जीवा टीबा रा टीबा चीर नाख्या, सडका नै न दिन नै न रात नै

चैन हो। नेता लोग अबै हवा में घूमण लागग्या आभो गरणा नै हो, धरती धूजै ही।

आखर एक दिन चैन आयो। वोट पडण लागग्या। पापा घरे आया सीग्या। पूरै दिन नींद में पड्या रहया। म्हारो सगळा रो जी आवळ बावळ होरयो हो। पतो नी काई होसी, पार्टी जीतै जद् पार्टी रो राज होवै, पापा जीतै तो पापा राज म आवै, जद् ओज्यू आ कोठी, कार, आ आराम आ इज्जत रवै, बणी रवै। पापा री तो हालत ही अजीब, पापा तो राज री पार्टी में ही कोनी, पापा जीत भी जावै तो पतो नी, राज आवै क नी। जित्ता लोग जित्ती बाता। कई लोग तो कवै—बिरमानद रो पत्तो कटग्यो, म्हारो जी भात ही खराब होवै। कई कवै—जो मत हिलायो, प्रधानमत्री बावळा कोनी, वानै लोगा बहका दिया, थारै पापा रै काम नै देखन भोत खुस है, थारा पापा कठैह कोनी जावै। म्हे रोज अखबार देखा, काई की बकै कोई की। ह्या लागरयो हो जाणै म्हे फासी रै तख्तै पर चढरया हा, पता नी कद् बटण दब ज्यावै।

दूजै दिन गिणती सरू मसा छ बजाया फेर रेडियै पर नतीजा सरू हुया, पापा जकै दिन कठैह कोनी गया। पापा अर म्हे सगळा फोन कनै बैठ्या रहया। रात नै दस बजता ही, एक समचार फोन स्यू आयो— मुख्यमन्त्री हारग्या फेर समचार आयो बी हलकै में पार्टी रो ही सफायो होग्यो, सगळै महाराजा रा आदमी आग्या, अबै तो म्हा सगळा रो जी हालग्यो, अबै ठौड कठै, पापा भी निरास हाग्या, मुख्यमन्त्री पापा रा खास आदमी हा, बारै हारणै स्यू पापा दुखी भोत होग्या। म्हानै नींद कठै ही।

फेर रात नै दो बजे पापा रै जीत री खबर आयी, म्हे सगळा ताळी बजाई, पापा री पार्टी रा घणकरा आदमी जीतग्या, फेर तो मा स्पेशल चाय बणान ल्यायी। दिन उगे ताई स्थिति साफ होगी। पार्टी मसा सरकार बणा सकैली। रात नै ही लोग बधाई देवण पापा कनै आयग्या। दिन उगे तो भारी भीड होगी। पापा रा गळो माळावा स्यू भरीजग्यो। करीब आठ बजे दिल्ली स्यू फोन आग्यो—पापा रै प्रति प्रधानमन्त्री रो भ्रम दूर होग्यो, अबै वै पार्टी सारू काम करैला। दूजै दिन तो अखबारा नै पापा रो नाम माटै आखरा म छप्यो। साची बात आ हुई के पापा रा निजी आदमी जिता

तीत्या बै कौ नेता रा कोनी जीत्या। अबै राज रै नेता रो चुनाव आंरी मुट्ठी मे होग्यो, अै चावँ जकै नै राज देवै, इया करन राज म पापा री स्थिति सगळा नेतावा स्यू मजबूत होगी, अबै लोग आरी हाजरी घणी भरै, राज मे अबै पापा री चोधर रैसी, आ बात इण चुनाव स्यू साफ साफ होगी।

6

मत्रीमडळ बण्यो अर पापा जको चायो बै मुख्य-मत्री बण्या—गौड साहब। इया लागै हा जाणै गौड सा'ब आपरी कठपुतळी हुवै, दिन मे दो बार हाजरी भरै गौड सा'ब अर पावली चलै पापा री, पापा नै ऊचै हू ऊचो विभाग मिल्यो—पुलिस रा मत्री तो राज रै आई जी पी स्यू लेयर थाणेदार तक पापा री हाजरी भरै, कौ एम पी नै कठै लगाणो, कौ थाणेदार न कठै लगाणो, ओ पापा रै हाथ मे।

एक दिन स्वामी जी आग्या, स्वामीजी घणै दिना स्यू आया अर आवता ही बोल्या—कठै है बो विरमानद ?

पापा दौरै पर गयेडा, म्हे लोगा स्वामी जी नै घरे ठैरा लियो। पापा दो दिना म आया जद ताई स्वामीजी पापा री काट ही काट करी, म्हे समदग्या, स्वामीजी पापा पर नाराज है।

पापा तो आवणा ही हा, पापा आया जद म्हे बतायो, स्वामी आयेडा है।

पापा स्वामीजी साथै ही खाणो खायो। स्वामीजी तो पापा साथै लडण लागग्या। बोल्या—तू आ बता, थानै राज करणो है या देस बणाणो है।

पापा बोल्या—देस बणाणै सारु ही तो म्हे राज करा हो।

—आ देस बणाणै रो तरीको है, स्वामीजी ओळमो सो दियो।

—गलती तो बताओ, स्वामीजी, पापा कयो।

—तू आ बता, देस मे राज सही लोगा रो होवैलो जद् देस बणैलो या गलत आदमिया स्यू।

—सही आदमिया स्यू, पापा जवाब दियो।

दोनू सार्थे सार्थे भोजन अरोगा हा।

—तू सिवमगल नैं फैंक्यो अर वीं रामदास नैं सार्थे लियो जको एक नम्बर रो बदमाश, गुंडो, तस्करी अर काई काई बताऊ, बीनैं तू एम एल ए री टिक्ट दी, बीनैं जितायो अर वैं अबार इलाकै मे गुडागरदी फैला राखी है, कीनै मारै तो मारै अर बक्सै तो बक्सै, फेर तू होग्यो होम-मत्री, फेर बो कीनैं मारै। जका वीनैं वोट नी दिया, भला आदमी है, बानैं मुकद्मा मे फसा दिया अर जेळ मे दिराय दिया। इसो माडो राज तो अगरेजा अर राजावा रो कोनी हो, आ बीमारी तू कठैऊ पैदा करली। सिवमगल जको भलो आदमी, ऊमर मे पार्टी सारू काम करघो, अपणो सारो घर लगा दियो, लगा के दियो होम दियो, बीनैं तू पार्टी स्यू काडघो, बण तनै मान्यो कोनी, आ ही तो बात ही, वीनैं हरायो, अबै बो दर दर भीख मागण जोगो होरघो है। बीरो घर बिकग्यो, बीरी जमीन बिकगी, अर बो हारग्यो, अबै बो तेरो रामदास धोरै अर धोरै आदमिया रै लैरै पडरघो है। ओ राज है जकै सारू आपा कुरबानी दी।'

पण पापा इण मेल रा अनूठा खिलाडी हा बै अगलै रै मनोविज्ञान नै भली भात समझता अर बीनैं छाटा देवणा भी बै जाणता। दोना खाणो खा लियो। दोना चूळू करली ही, हाथ साफ कर लिया। पापा कैवणै स्यू पैली पूछ लियो—स्वामी जी, और कोई-ओळमो, ये पूरी हुवडास काड लेइयो, फेर बात करस्या।

—म्हे तो पूरी बात कैयदी, तू कह, स्वामी जी कयो, पापा बोल्या—स्वामीजी, ओ राज रो काम है, आप जाणो हो, म्हानै अबार ईं चुनाव मे कित्ती टक्कर लेवणी पडी, राजा महाराजा म्हारै सामै आया, बा लोगा कनै कोई कमी कोनी ही, बारो राज हो, बा कनै पूरा आदमी हा, पूरो खजानो, इत्तो खजानो कई पीढ्या ताई खुला बरतै तो नीवडै कोनी। म्हे लोग सगळा ही गरीब घरा रा हा, जे आज आ जगा छूट ज्यावै तो आपणनै ही रोटी रो सासो पड ज्यावै, चूलो कोनी सिलगै। म्हे गरीवा टक्कर ली वा लोगा

स्यू, फक्त गरीबा सारू राज ल्यावण नैं, गरीबा नैं ऊचा उठावण नैं, आप जाणो हो, म्हे लोग आ गरीबा खातर कितरो काम करयो हा—जगा-जगा स्कूल, अस्पताल, सड़क, बिजली, देस चमन बण ज्यासी, म्हारै सामैं स्कीम है मोटी मोटी नहरा री, नहरा आवता ही आपणो इलाको गुलजार हो ज्यासी, जठै आज पीवण नैं पाणी कोनी, लोग पाच पाच कोस स्यू मोठो पाणी ल्यावै है । बठै चप्पै चप्पै मे पाणी फैल ज्यासी, काळ पड़या तो लोगा छोडा खाया, आज भी खावै है, बठै अगूरां री बेला ऊगसी, लोग खोखा री जगा अगूर खासी । राजा महाराजा तो राज करयो ही, काई करयो, गोला पाळया, दारू पी, राडा नचाई, औ ही काम ओज् करता, कित्तो टकराव हो, बिना पीसा भी होनैं कया, चुनाव में कित्तो खरचो लाग्यो । गरीबा कनै तो फक्त वोट हा, पैट्रोल पाणी री तरिया फूकी ज्यो, जे गज रो खजानो छेड़ां तो राज जेळ म घर देवैं, ऊमर मे कोनी निकळ सका, की सेठा रो सारो लेवणो पड़यो, की पीसा आळा नैं साथैं लिया, बिना मतलब बै क्यू आवै बानैं की मतलब दियो, की ओर मतलब री बात करणी पड़ी जद ओ राज ओजू हाथ आयो, जद् की काम करण जोगा होया हा, आप तो एक सिवमगल री बात करो हो, राज न रैवतो तो कित्ता सिवमगला रै सिर म पड़ती, राजा म्हा सगळा सिवमगला रो पीच'न पाणी काढ नाखतो, जे बारो राज आवतो । आप कनै बैठन कित्तो सुणावो हो । सुणा कोनी सकता थे मिल ही कोनी सकता, रयी बात रामदास री, म्हू बीनै बुलान समझा देस्यू, फीकर मत करो, आप तो आपणी सस्था रो ध्यान राखो, ईनैं बेगो ही कॉलेज बणावणै री सोचा हा, आपणै गावा रा टाबर भणै, लायक बणै, ऊचै ओहदा पर जावै ।'

स्वामी जी पिघळ'र पाणी होग्या भोळा आदमी हा, भावुक हा, क्ण ही बहकायो, बीया ही समझग्या । पापा तो स्वामीजी रै ओजू पगा लाग्या, फेर चल्या गया ।

दिन छिपणै स्यू पैली ही पापा रामदास नैं बुला लियो । पापा बीनैं एकलै नैं समझायो—बावलिया, तू काई करै है ? स्वामीजी नैं नाराज कर राख्या है, बो सिवमगल स्वामीजी स्यू मिलै है, बानैं बहकावै है, औ मोड़ो बिचरग्यो तो तेरो अर मेरो दोना रो तखियो तर कर देसी, इ रो काई बिगड़ै

है, इसैं त्यागी आदमी रो प्रचार भोत मूंडो होवै है । फिर सिवमगल मामूली आदमी कोनी, बीरो त्याग है, वो मर्‌यो कोनी वो घणो जियो है, बीनै ह्यारणै स्यू ज्यान आई है, तेरै वनै तेरो पार्णदार इण सारू भेज्यो है के तेरो घणो कर, धन बटोर, आगै थारै म्हारै काम आसी, पण कीनैं तग करणो, परेसान करणो । थापा खतम होस्या, राजनीति नैं समझ, धक्को मत चला । स्वामी रै दो वक्त हाजरी भर, गस्या मे चढो दे, आरै पगा मे धोक लगा, तेरो बेडो पार । तरकीब स्यू काम ले ।'

पापा रामदास नैं गुरुमन्त्र दे दियो । बो सोधो स्वामीजी कनै आयो, पगा धोक दी माफी मागी, कई देर बैठ्यो रयो बाता करी, स्वामीजी बाग-बाग होग्या, काळजो वरप जैडो सीतळ होग्यो ।

नेता री अक्ल काळैं साप री तरियां चिकणी चुपडी होवै । बो जिसी ही चाल हुवै, पण जे डब मारै तो अगलो पाणी कोनी मागै । स्वामी जिसै भोळै मिनख नैं लोग काई गाड देवै ।

स्वामीजी खूब राजी होयन पूठा चरया गया ।

7

म्हारै ठाठ बाट मे अबार काई कमी ही । पूरै पाच साल री पक्की मोहर लागगी । पापा रो रुतबो घणो उचो होग्यो । अबार तो सारो मन्त्री-मडल मुट्ठी मे, पापा कनै देस रा मोटा मिनख आवै मोटा मोटा आदम्या रो काम सारै । बडी बडी हस्तिया पापा रै मूडै कानी जोवै, मरजी आवै जकै नैं झिडक देवै । एक दिन तो एक सैक्रट्री पापा रै धक्कै चढग्यो, बण पापा रो काम कोनी कर्‌यो, फेर पापा बीरै माय एड्डो करी के धा न कुत्ता खीर । बो पापा रै सामैं हाथ जोडया खडयो, मनैं बीरै पर बडो तरस आई । इत्तै मोटै आदमी नैं ही पापा कोनी धक्सैं, मनैं पापा पर रीस आई । पापा नैं अपणै पद रो गुमान होग्यो ।

एकर पापा एक एस पी स्यू मिलै ही कोनी। बो दो दिनां स्यू चक्कर काटै। मनै आ दिना पतो लागग्यो के एस० पी० कलक्टर, सैक्रेटरी किता मोटा हौवै। पण पापा सामै तो वै माखो की तरिया लागै हा, कोडी मकोडी-सी दीखै ही। फेर पापा दोरै चल्या गया। वै एस पी मेरै कनै आया, बूढा आदमी, टाबर टीकरा आळा, म्हू तो सफा टाबर, मनै काई पतो। मनै कयो—थारी माताजी कठै?

म्हू बानै माताजी कनै लेगी। वै मा नै कैवण लाग्या—म्हानै मा'व सस्पैंड कर राख्या है, म्हारी एक लडकी ब्यावण सावै है। एक टाबर भठै पढै है। म्हारा पिताजी सुरगवास होग्या, म्हू भोत दुखी हू। सा'ब न कह म्हानै भाळ कराओ। म्हारो कोई कसूर कोनी। एक थाणैदार हो भोत नालायक, म्हीनै वेरो कोनी हो। आरा आदमी है। म्हू बीरो तबादलो कर दियो। म्हारी एक सिकायत री फाइल चालै ही। नौकरी मे सिकायत कीरी कोनी हुवै। सिकायत भी काई। एक नेता रो म्हू अमल पकड लियो, काई करा, काई पतो लागै, कुण नेता है, कुण नी, आज तो घणा ही खद्दर पैरथा फिरै है, पण आ सिकायत करवा दी के म्हू राजा रो आदमी हू, नेता पर झूठो अमल रो केस बणायो है, अमल एस० पी० खुद बीरी पेटी मे दाब दियो, ओ बसणो कया होसी, राजा के राज मे थारा नौकर आरै राज मे आरा नौकर।'

बो मा रै सामै रोवण लागग्यो ज्यू टाबर मा रै सामै रोवै, मनै बी पर भोत दया आई। म्हारै हाथ मे कलम होवै तो अबार इनै भाळ रो हुक्म देदयू।

मा बीनै पूरो आस्वासन दियो, आस्वासन ही कोनी दियो, पापा रै आवता ही बीरा काम करवा दियो।

पापा री व्यक्तित्व विचित्र हो अर बारो काम करणै को तरीको भी विचित्र। एकर री बात, पापा आई० जी० पी० नै खाणै खातर बुलायो। आई० जी० पी० नै खाणो परोस्यो—काई? बाजरी री रोटी अर गुवार फळी रो साग — बस। पापा तो इण खाणै नै चाव स्यू खावै, पण आई० जी० पी० मदरासी, काई खावै अर कया खावै। पापा खांवता जावै, अर बात करता जावै—'आई० जी० पी० सा'व, खाणो खावो, इण भोजन नै खावै आज देस री नब्बै फीसदी जनता, म्हे इण जनता का प्रतिनिधि, म्हे भी यो ही खाणो

खावा, आप भी खावो।'

पण बिचारो आई० जी० पी० बीरो एक कोर तोडै अर चबावै।

—हा, तो, पापा क्वै, म्हे गलती करा तो म्हानै विधान-सभा रा सदस्य खावण त्यार हो ज्यावै अर जनता म्हानै बक्सै कोनी, म्हारै ऊपर थारी जिम्मेवारी थोपेडी, पण आप लोगा नै फक्त म्हे लोग ही बै सका, था पर जनता री कोई जिम्मेवारी कोनी। हा, खाणो खावै।

पण आई० जी० पी० बीयां ही टुकडो तोडै आ दोरो सोरो चबावै।

पापा फेर क्वै—म्हे लोग ही थारी गलती पकड सको हा, थानै ओळमो दे सका हां, था पर कार्यवाही कर सका हा, हा, भोजन करो, पापा फेर खाणै केवता रवै।

पण आई० जी० पी० रै काटै तो खून कोनी, बो तीवै धूड पारया, बो रोटी कानी देखतो रवै।

पापा क्वै—थानै म्हे हटा सका हा, फक्त एक आदमी, आपरो मंत्री यानी भवार फक्त बिरमानद। पण म्हानै जनता दूर फेंक सकै है। म्हे जनता रो काम करा अर थे म्हारै कैवणै स्यू काम करो।

आई० जी० पी० आखर आई० जी० पी० ही, बोल्यो—म्हू तो सदा ही आप रो हुकम मानण त्यार हू, गलती हुवै तो सैरली माफी देओ, आगै मारू ध्यान राखस्या।

पापा हुकम दियो, आई० जी० पी० सारू असली थाळी लागी जकी आई० जी० पी० सारू त्यार ही, आई० जी० पी० रै लायक ही। पापा धीरो फेर साथ दियो। फेर तो दोनू हड हड हसै हा।

देस रै कानून स्यू पापा रो कानून न्यारो हो, पण आ बात समझ मे कोनी आई के जद देस रो कानून माडो हो, तो पापा बीनै विधान-सभा स्यू बदळायो क्यू कोनी, वा सभा तो वांरै ही हाथ री ही, पण आ बात जरूर म्हू जाणी के पापा दसरी भलाई रै नाम पर आपरी पार्टी रै आदम्या रो काम जरूर सार्‌यो, अर वै ही बारा गोत गावता फिरता, एक रै भलै रै सायै दूजै रो बुरो होवतो, वै लोग पापा नै गाळ काढता, कई तो रोवना करळावता, वीरी गूज कई वार अखबारा मे गूजण लागती, बानै पढता तो जीदोरो होवतो। म्हे लोग कैवता जद् वै हँसन टाळ देवता, कैवता—

अखबार मे आपणो नाम तो छपै है, आ बात भी मोटी है।

8

कई दिना पाछै मत्री मडल मे फेर बदल कर्‌यो तो रेखा नाम री एक लडकी मत्री मडल मे आई। रेखा भोत हो सोवणी लडकी ही, गौरी निछोर, हाथ लगाया मैली हुवै, पतळी केळ री सी कामडी, चालै तो धरती लाज मरै। वा पापारी लाडली ही, पापा रै कँवणो स्यू आई। एम० एल० ए० ही। पैली भी बा कदे कदे पापा कनै आया करती, पण एम० एल० ए० बणनै रै बाद तो करीब-करीब घरे ही बैठी रैवती। कार तो राज री मिलेडी ही, आ खुद चलान आ ज्यावती, रात नै मोडै ताई पापा कनै ही रैवती। रेखा म्हारो भोत लाड राखती।

म्हू अखबार बडी होगी ही, डील घालगी। गाबा तो बीया ही सातरा राखती, पण अबार म्हू गाबा कानी घणो ध्यान राखण लागगी।

म्हू काच रै सामै घणी देर रैवण लागगी। म्हारा केस भोत लाबा हा, म्हारी आख्या ही मोटी ही, नाक ही तीखी ही, रग गोरो हो, डील भरवा हो, सामै उभार होवण लाग्यो, तो मनै लाज सी आवण लागगी, पैली म्हू हरेक री गोद मे चली जावती पण अबै की रै नेडै आवणै मे सरम आवण लागगी। औ काई फरक आयो, क्यू आयो, नी जाणू। रात नै मीठा मीठा सपणा आवण लाग्या लाज, सरम म्हानै छोडन जावती ही कोनी। लुगाया पताया कैवण लागगी—स्वराज, तू तो जुवान होगी। हां तो, आ जवानी ही।

एक दिन म्हू काच रै सामै खडी-खडी केस बावै ही, लैरै स्यू एक छोरो जकै रो नाम विनोद हो जको म्हारै घरे घणो ही आवतो, एक मत्री रो छोरो हो म्हारै लैरै खडचो होग्यो, बीरी आख म्हारी आख स्यू मिलगी, म्हारो डील हालण लागग्यो, सारै डील मे 'सरण, सरण' होवण लागगी, बो

मुळक्यो तो म्हारो जीव जगा छोड्यो, म्हू काच स्यू परनै हटगी, बो चल्यो गयो जद् म्हारो जीव टिक्यो ।

रेखा घणी वार मनै कार मे बैठाय आपरै घरे ले ज्यावती, म्हू बठै बीरै टाबर साथै रमती । बीरै घरे बीरो धणी, एक नौकराणी अर बीरो एक टाबर हो—छोटी-सी गुडिया जैडी जानकी, रेखा जैडी फूटरी, एक छोरो राख छोड्यो हो बीरै खिलावणै खातर । मोत खिलौणा हा, वां स्यू बा खेलती रैवती । म्हू जावती ही बी गुड्डी नै गोदी मे ले लेंवती, नाम तो बीरो नीता हो, पण सगळा बीनै गुड्डी-गुड्डी ही करता । म्हू गुड्डी नै मोत खिलावती । रेखा जद् काम पर जावती अर काम करती तो गुड्डी नै कोनी राखती । एक दिन म्हू गुड्डी नै म्हारै साथै घरे लेगी, कई देर पापा बीनै राखी, पण पापा री गोदी मे पेसाब कर दियो, फेर मो सै ही हसण लागग्या, पापा नै कपडा बदळना पड्या । फेर मां बीनै गोदी मे ली, म्है कई देर ताई बी स्यू खेल्या, फेर ओजू बीनै घरे लेग्या ।

रेखा जद् बात करती तो बीरी बात म घणो मिठास हो, कई बार बा बात हूंगी कर देवती, म्हारै समझ मे कोनी आवती । मेरै खातर बा कैवती, 'तनै म्हू मिनिस्टर बणा स्यू ।' जद् म्हू समझती, म्हू भी मिनिस्टर बण स्यू । मनै बा दिना मिनिस्टरी नेडै-सी लागती ।

म्हू अबार इत्ती स्याणी तो होगी ही के दुनियादारी-री बात समझण लागगी ही । अखबार आळा इत्ता कांइयां होवै है के वै कीनै ही बक्सै कोनी । वै पापा अर रेखा न लेयन बात उछाळन लागग्या । म्हू आ बातां मा नै सुणावती, मा पढेडी तो कोनी ही, पण लोग बाप जकी बात करता, बा स्यू ही बा सगळी बाता पढ लेवती, लोग बाबा री बाता ही बी सारू अखबार हा ।

मा कैवती—दुनिया मोत टेढो घुळवा गाठ है । ईनै समझावणो, समझणो अर मुळझावणो—मोत दोखो है आ पराये सुख दूबली है, आपणै पर लोग मोत खार खावै है, लोगा नै बात मिन्णी चाहिजै, फेर हो लै तेरी वई के मेरी ।

एक दिन पापा भी इण बात नै लेया गभीर होग्या—बातो सार री बात पदी—लोग धैली प्रचार-प्रसार सारू झूरया करता । साची बात कैवता

ही दरता। अर्थ प्रचार-प्रसार री पूरी छट है। आ अखबारा तो सफा ही गपोळ खोचडी कर दी। जे आ अया ही चालतो रयो तो काम करण आळा काम करणो छोड देसी। माडै रै नीचै आछो दब ज्यासी, फेर लोग माडै करणै स्यू झिझकसा कोनी, भलाई बैठ ज्यासी बुराई दब ज्यासी।

अखबार चार दिन चो-चो करन थमग्या। बारो कण ही ग्यान गिणती कोनी करी। रोळै रै सामी चालै तो रोळो वधै, रोळै नै कोई निजरा सामी नी करै तो आपी थमज्यावै, आ ही बात इण घटना सारू हुई, बात घणी बदी कोनी, आपो दवगी।

पण एक दिन दादी आगी तो वण घर मे सुरळ मचादी। आ आयन बैठी कोनी, सीधी इण बात नै छेड दी—अरै मुराजडी, थारी मा कठै है?

—मा, थारै सारू चाय बणावै, म्हू कयो।

—अरै चाय तो तू फेर बणा लेई, पैली म्हारी बात सुण।

मा आगी, सामै ऊबी होगी।

—बोलो, माताजी, मनै बुलाई, मा कयो।

—अरै बा रेखली कुण है?

दादी नाम बीगाडन बोलती।

—क्यू माताजी, वा तो मिनिस्टर है।

—लोगा गाव मे चक राख्यो है के बीरमै रेखली साथै घर वासो कर लियो, बा बीरी दूजी लुगाई है।

मा हसण लागगी, म्हू भी हसी।

मा हसी तो दादी समझगी, मा रसोई मे जायन चाय ले आई। दादी बैठगी, थोडो सारो लियो। फेर दादी चाय पीवण लागगी।

मा ध्यावस स्यू पूछ्यो—अबै बताओ, काई बात है?

दादी बोली—म्हू झूठ कोनी कू, बीनणी। म्हू इण काम सारू अठै आई। लोगा मनै टिवण कोनी दी। मनै तो भोत फिकर होग्यो। म्हू सोच्यो—अबार टाबरा रो कुण धणी। एक सिपाही हो पुलस मे, बीनै राजा देदी जागीर। वण मरज्याणै आपरी घर थाळी नै छोड दी अर दूजो ब्याव कर लियो, तो ओ धन अर राज कुबध करावै। चोखै सै चोखै आदमी री खोपडी खराब हो ज्यावै। लुगाई की जात इसी होवै रे, रोशी बुनिया रो

तप भग कर देवै। मनै तो रात नै नींद कोनी आवै, बात हैं काई ? बा बता।

मा बोली—बात जबी है थे देख लीज्यो, म्हे काई बतावा ?

—कोई रेखली बताई, गौरी सी छोरी।

—थे देखल्यो, ओ घर पड्यो।

—की होवतो तो तू हसती कोनी, तेरो डोळ ही बिगड ज्यावतो, सौक भोत खोटी हुवै।

दादी पुराणी लुगाई ही, बीरै कनै ढेर सारो अनुभव हो, नई बात नै तो कोनी समझै, पण मार हर बात रो काड सकै ही, चाहे नई हो पुराणी हो। बात रो मूळ कोनी बदळ सकै चाये बीरै ऊपर कोई रग चढा देओ।

दोपारै पापा दौरै स्यू आग्या पण रेखा कोनी आई, दादी नै उतावळ ही रेखा नै देखण री। दूजे दिन रेखा दिनगै पैली आगी। आवता ही सीधी आगणै पर कोनी आई। बा सीधी पापा रै कमरै मे गई। गौरै रग पर कबूतरी साडी भोत ओपै ही। दादी नै अबार बेरो कोनी हो। थोडी देर पाछै दादी नै म्हू बतायो तो बा सीधी पापा रै कमरै मे गई।

दादी बेगी ही पूठी आई, दादी रो थोबडो सूजेडो हो।

—हू, आ है बा रेखा, बीनणी, है की दाळ मे काळो।

मा मुळकी अर बोली—क्यू माताजी ?

—अरै राड रै कोई लाज न सरम, बीरमै रै सारै बैठी जाणै बीरो व्यायेडी हुवै, हाथ स्यू चाबी सी घुमावै, मूडै पर तो सरम रो नाम ही कोनी, घोरडो सीधो ही पड्यो है, धोतडी काधै पर गेर राखी ही राड रै दो चोटी।

—दादी, होळै बोलो, म्हू क्यो।

—म्हारो काई लै है, म्हू तो बीरै मडै पर कैय द्यू, पण बा तो अबार गई। तेरै बाप मेरै पना और लगाई, मेरा पग ही पापी होग्या, इसै राड रै दरसणा म टोटो। राड चालै ज्यू बैस्या राड चालै, आ क्यारी मनीस्टर, होग्यो जनता रो भलो ईं कुलछणी रै भरोसै।

इत्तै मे पापा आग्या। पापा आवता ही की दादी मट्ठी पडी, पण बात चालती राखी—'हैं रै, बीरमा, मनै तो आ लुगाई आछी कोनी लागी।

—क्यू मा ?

—बेटा, इंरै तो लुगाई वाळा-सा लछण ही कोनी ।

—मा, आ है आजाद देस री आजाद लुगाई । बोलै जद लाखू आदमी इंरै मूडै कानी देखै, मिनिस्टरी सोरी कोनी, तेरो बीनणी नै तो कोनी बणावै, पढी लिखी, स्याणी समझदार, अक्कल री धणी है, देस आजाद होग्यो, मा, लुगाई नै बराबर रो हक मिलग्यो ।

—ओ हक तो म्हारी समझ में कोनी आयो, लुगाई रो टाचरो अर गाडी रो पाचरो कूट्या काम देवै, लुगाई नै इत्ती सिर चढाणी आछी कोनी ,

—थारी बात अबै काम री कोनी रयी, माळा फेर, भगवान रा भजन कर ।

—म्हू कोनी कऊ, बो भूरजी आयो हो, रै मेरै कनै, तेरो बेली हो न पुराणो, बण इसी बाता करी, इसी बाता करी रे पूछ मत । बोल्यो तेरै बेटै नै अबै अम्बर टोकसी सो दीसण लागग्यो । आ रेखली, तेरै बेटै नै, घर नै अर राजनै ले बैठैली, इसी इसी बाता करी, मेरी तो नींद हराम करदी । एक छापो साथै ल्यायो जको पढन सुणायो, मै तो चकरी गुम होगी ।

—भूरजी बावळा होग्या, अबार, मा, पापा कयो, बीरै सारै री बात कोनी रयी । बो साठ रो होग्यो, बीरी साठी री बुद नाठी होगी । आज्या आपा रोटी जीमा साथै ।

पापा भोजन करण लागग्या, दादी भी साथै बैठगी । फेर तो पापा गाव री सगळी बाता बूझारली ।

दूजै दिन रेखा मनै अर दादी नै आपरै घरे लेगी । रेखा रो धणी भी बठै ही हो । म्हा दोना री बडी खातरी करी । पैली नास्तो, फेर भोजन, भोजन में कई तरा रा पकवान । दादी रो जीसोरो होग्यो । म्हू कई देर ताई गुड्डी साथै खेलतो रयो । बीरो धणी दादी रै पगा लाग्यो । आवती बार रेखा दादी रै फेर पगा लागी, एक वेस अर सौ रिपिया दिया । बीरै धणी कयो—आ थारी टाबर है दादी मा, म्हारै तो बिरमानदजी माफत स्यू ही यत्ती है, इसा ही माताजी है । थारै तो अै कोई अवतार जलम्या है, एहडा मिनख धरती पर कदेक्दास ही आवै है । म्हे तो थारी **आयोवर** पळा हा ।

रेखा दादी अर मनै पूठी गाडी में भिजवायी।

दादी बाग बाग होरी ही। आवता ही बोली—बीनणी, लोग मर ज्याणा इया ही बकै है, काळजो बळै काळजो, ईस्कै रै मारै मरै ए, म्हू अधार समझो। रेखा है लुगाई लाख रिपिया री, देख, मनै एक वेस दियो है, सौ रिपिया।

मा दादी री खुसी नै आपरी खुसी मानी।

9

अबै कोठी अर कार म्हारै सै ही होगी। न कोठी म्हारै साह नई चीज ही अर न कार इसो लागण लागग्यो जाणै म्हारी जिन्दगी साथै आ जुड़ेडी हुवै। पापा कनै भीड़ री कोई ठिकाणो कोनी, दिनगै मिलण आळा री तांतो लाग ज्यावतो, मोडै ताई आ लगस टूटती कोनी। पापा म्हाथोयन बैठ ज्यावता हरेक री सुणता, आवरी जाण मे हरेक रो जीसोरो घर भेजता। म्हारै विचार मे ओ काम भोत दोरो हो, लोग भी की खास लयन आवता। सगळा जायज बात लेया आवता, आ बात कोनी ही। सगळ ही पापा रा आदमी होवता, आ बात भी कोनी ही। पापा नै आवणै आदमी री पहचाण साथै काम री भी पहचाण ही। पापा काम नै की तरीकै स्यू करणो है, काम करणो है या टरकाणो है आ बात भी पापा स्यू छानी कोनी ही। पापा नै कैवणै स्यू सगळा काम हो ज्यावता, आ बात भी नी ही, कई काम तो आपी हो ज्यावता, पापा रो नाम होवतो, कई काम पापा जद गोडी लगावता जद् हावता। पण कुस मिला'र भीड बणी रैवती, कई तो ऐन नडै हावता, बै कोठी में ठहरता, वा साह कोठी मे जगा ही, रोटी और चाय कोठी स्यू ही मिलती। अबार मा घण करा आदमिया नै सक्ल स्यू पीछाण लागगी, बारा नाम तकात लेवती, ईस्यू पापा री राजनीति मे फायदो होवतो। इण बात नै मा आछी तरिया जाणती। पण मोटी बात आही के पापा रा आदमिया

रा काम हावता, ओरा रा काम कोनी हावता, ओ जनता रो राज हो, आ बात तो कोनी जचै, हा पार्टी रो राज हो। पण कदे कदे दुसमण नैं दोस्त बणाणो हावतो अर पार्टी नैं साथै लेवणा होवतो तो पापा वीरै काम में भी रुचि लेंवता, पण कदे कदे कई साप भी दूध पी ज्यावता।

पापा रो काम बदतो दीस्यो तो पापा आपरी मदद सारू दो आदमी राख लिया—चैनसिंह जी अर रामनिवास जी। चैनसिंह जी आपरी कोठी म्हारी लेली, पण रामनिवासजी आवता-जावता रैवता, दोनू ही पाकेडी ऊमर रा हा।

चैनसिंहजी जद पैलीपोत आया, बारी नाड निकळेडी ही, पेट में आळा पडरया हा, जवाडा बैठेडा हा चाहे मुट्ठी दाणा घालदयो, मूडै पर भूर उडै ही, पासळा चाहे गिणल्यो, पण गिण्यां बिना म बारो काधो मचग्यो, मूडै पर लाली आगी, पेट आगीनै आवण लागग्यो, रोज सूट बदळबा करता, इमा लागता जाणै बिना विभाग रा मंत्री होवै। बारै कनै नित नई कार होवती। फेर पतो लाग्यो मैं राज रा लखपति, करोडपति काम सारू बारै कनै आवता अर आपरो काम करावता, म्हू एक दिन पापा रै साथै बारै बगलै में गयो, बगलो काई हो, एक रहीस रो घर हो जाणै, कमरो पूरो सजेडो, माही टेली-विजन अर टेलीफोन। बगलै रै बारै रहीसा री कारा खडी, म्हारी कार तो बारै मायं ही कोनी।

चैनसिंहजी, लोग कैंवता, बढिया ऊ बढिया दारू पींवता, बढिया ऊ बढिया भोजन करता, बा एकला रो खरचो दो हजार हो, बारा टावर टीकर बठै कानी रैवता। ओ पीसो कठऊ आवतो, राम जाणै, पण बारै की बात री कमी कोनी ही, आ म्हानै ठाव हो। रामनिवासजी ज्यू त्यू बारै रैवता पण आवता, जद वै भी बी रहीसी ठाठहू, वै तो पैली स्यू ही मोटा ताजा हा, वै जात रा वाणिया अर चैनसिंहजी ठाकर।

आ दोनो नैं लेयर फेर अखबारा में तुरळ मची, म्हू पढी, फेर पतो लाग्यो के बारो काई काम हो। अै पूरै मंत्रीमंडल रा दलाल बताया गया जका रै माध्यम स्यू सगळा मंत्री खावै, फेर तो एक दिन अखबार में निकळी आ खबर म्हारै पापा रै खिलाफ ही के म्हारा पापा चैनसिंह रै मार्फत एक काण्ड में पूरा लाख रिपिया खाग्या। म्हारी पापा री बडी बदनामी ही—

म्हानै भो तो दुख उठ्यो, पण पापा कनै एक लाख रिपिया आग्या, म्हारै मन ही मन मे लाडू-सा फूट्या। मा नै कयो जद् मा सगळी बात ही धूड मे मिला दी—बेटा, सगळी बाता झूठी है, तेरै पापा नै बदनामी दिराणै सारू लोग औ धधा करै है, पण म्हारै कम जमी क्यूके बिना पीसा चैनसिंहजी रै डील पर धरबो कोनी चढती।

एक दिन फेर स्वामीजो आग्या। स्वामीजी आवता जद् एक ओळमैं री पोटळी बाधन ल्यावता। म्हू बारै आवता ही म्हू समझगी, बाबो ओळमो लेयन आयो है। स्वामी जी साची पूछो तो साधु ही हा, साधु रो मन पाप पुन स्यू दूर होवै है, वै पाप रै तो नेडै ही कोनी जावै, जद् पाप नै काई समझै। बारो व्यक्तित्व दूध सो पवितर हो, बामे हळको सो उफाण आवतो अर थोडा-सा ठडा छाटा दिया अर फेर शीतल। पण पापा रो व्यक्तित्व बेहद व्यापक हो। वै हसता तो एहडा लागता जाणै परभात री बेळा मे भात भात रा फूल खिलैडा होवै अर वा मे एक झरणो चालै, बाणचकै एक पल मे वै गभीर हो ज्यावता ज्यू हिवाळो ऊभो है। जद् वै बोलता तो जाणै डूगो दरियाव एक गतिस्यू हळवा हळवा चालै है। जद् वै रिसाणै होवता तो समदर आपरी सीव छोडतो सो लागतो फेर एक दम एहडी करवट लेवता ज्यू तूफान हो अर एक झटकै स्यू ठडो पडग्यो।

पापा स्वामी रै पगा लाग्या अर बैठग्या बैजाणै स्वामीजी रै ओळमैं सारू त्यार हा। स्वामीजी समाज सेवी हा तो पापा राजनीतिक। पापा स्वामीजी नै आपरा गुरु मानता, पण स्वामीजी आजादी न मिलणै ताई पापा रा गुरु रह्या, जद् ताई स्वामीजी अर पापा रो एक मारग हो, पण सत्ता रै आणै रै बाद दोना रा मारग न्यारा न्यारा होग्या, पण स्वामीजी रै ओजू ताई आ बात समझ मे कोनी आई। स्वामीजी कयो—'बिरमानद, म्हू एक बात सुणी कान पापी है, म्हू कँ नी सकू, बात कठै ताई साची है, पण मनै भरोसो है कै आ बात झूठ हो नही सकै, जद् इत्तो रोळो होग्यो है तो को तो साच है ही, थे लोगा आ कर्मचारिया स्यू इसी साठगाठ कर राखी है कै हर थाणै रो थणैदार एस पी नै पीसा देवै, एस पी, आई जी पी नै पीसा देवै फेर आई जी पी. थनै पीसा देवै।

पापा बीच मे की बोलै हा, पण स्वामीजो की कऊ हा, पण स्वामी जी

बानै बोलण कोनी दिया, वैं बोलता ही रया—'जद् कर्मचारी भ्रष्ट होसी तो न्याय कठै, गरीब रो भलो कठै, राज तो वो ही बडा आदम्या रो, अमीरा रो, गरीब तो बया ही कूकता रया, कूकता रैसी, म्हारै मायँ मे आ आजादी जमी कोनी।'

पापा बात नै टाळता कयो—स्वामीजी, एक बात आप नैं कऊ हू, या तो म्हे इण दस नैं एहडो बणा देस्या के ओ पूठो सोने री चिडिया बणज्यासी या इणनैं एहडो बीगाड देस्या के आवण आळी पीढी इनैं सुधार नी सकैली।

—आ तो म्हारै जचै है, पण एहडो क्यू काम करो जीस्यू औ खोइजै, स्वामीजी कयो।

—राह आपी बणै है, स्वामीजी, कोरै बणाया कोनी बणै, आज ससार री रीसी, मुनि, विचारक, चिन्तक कित्तो सोच्यो, विचारयो, चिन्तन कर, आप आप रै ढग री व्यवस्था दी, पण सृष्टि स्यू पाप नी मिट सक्यो, अन्याय नी मिट सक्यो, शोषण नी मिट सक्यो।

स्वामीजी फिर सोच मे पडग्या अर बोल्या—तो आपा अमा ही तरळो मारयो, आपरै राज खातर गरीब आगै आयो, त्याग करयो, लोगा जेळा भरी।

—आ बात सही, पापा कयो, वो राज अबार भी गरीब सारू है, गरीबा नै जमीन देवा हा, गरीब नै स्कूल मे भरती करा हा, गरीब स्यू राज सारू राय मागा हा, पण गरीब ओजू गरीब है, हर ढग स्यू गरीब हू, मन स्यू गरीब, तन स्यू गरीब अर धन स्यू गरीब। बीरी ओजू कोई औकात कोनी, बीरी औकात बणाणी है, बीनै सिक्षा देस्या, राज मे सीर देस्या, वो धीमैं धीमैं आपरी औकात बणा लेसी, बीनै आज सोवपू सौपद्या तो जेहो कुछ है, जेडो कुछ होवणो है, बीनैं खतम कर देसी। बीनै आज देस रा कारखाना कया सौंपद्या, एक झटकै स्यू राज रो बदळाव करद्या तो देस रो नुकसान हो जासी, मार्क्स भी आ ही बात कयी है।

स्वामीजी कै थोडी थोडी बात जमी, पण वैं ओजू सिर हलावता ही रह्या, बारो जीव टिक्यो कोनी।

पापा फेर कयो—म्हे लोग गरीबा रा प्रतिनिधि हा, आज सारा प्रेस पूजीपतिया रा है, प्रचार मोटा सेठा रै हाथां मे है, वैं चावै कोनी कि म्ह

लाग राज करो। म्हारी पार्टी म दो गुट है एक मजूरां रो, एक अमीरां रो, एक लोग गरीबां रा आदमी है ज्यां माता नै निवास प्रचार है, धनीमोरो। म्हू आज हाल मजी हूं ना प्रचार म्हारै मारै पढ़रयो है ओ गरीब जद म्हारै सामै मुंडेरो है इनी म्हा म्हू पागल हूं जबरा पार्टी है मा काम म्हारै साम्हा म आ ज्यागी जद दिन आपरै गाड़ी कार मसमर म आ ज्यागी आप थोड़ला लखन म्हारै बनै करो आभा।

10

म्हारै हीस म बैठा पगर आवण लाग्या। मालीनाणं री सूनादी कंपण लागती— आ तो ब्यावण आगी हागी। ब्याव रो नाम सुणतां ही म्हारै अंग अंग म गुदगुदी होवण लाग ज्याती। गीलै रै साथै ऊभी हावती तो म्हू आप ही लाज मरती। म्हू चावती सा ज्यूंरो आलनो ज्यां म्हारी टाबा म विलग चाल्या हावै। चाहे म्हारी हमलो दीपतो, पूत म्हारै मुळकतो। जुवान छोरा री आंख्या म्हारी आंख्या म दगणै री चेस्टा करती, म्हू नाड नीची कर लेवती। म्हू म्हारै उभार पर चुन्नी राखण लागगी। इतो लागै ही जाणै नई चीज कोई म्हारै म अबार ऊभर आई है, इनै म्हू ढाकनो, छिपाणो चाऊं हूं। टींगरा रा हरकतां म रीस भी आवती पण ओछापो भी हावती। अबै म्हारी आंख्या काजळ बिना कोनी रैवती, मूंडै पर हळको हळको पावडर आणं छाणै मगन रैवती। अबै म्हारै म्हारा केस सटकता कोनी सुहावता। आप अणजाण म म्हू सरीर नै सिणगार देवती।

निनाद ही और नेड़ै आवण लाग्यो। बनै बैठा पोथी पढ़ण लाग ज्यावतो या बातां करणै री चेस्टा करतो, म्हारै मूंडै कानी देखतो ही रैवतो। म्हानै थोरी हरकतां भेंडी लागती।

एकर बो एक कागद म्हारी पोथी म मेलन चल्यो गयो—माडो कागज, पढ़ता ही सरम आवै।

फेर एक दिन वो म्हास्यूं बाता लोगग्यो । रात नै कोई पिक्चर देखन आयो हो । बीरी कहाणी कैवण लागग्यो । फेर ब्याह-कानी ढकन बोल्या—स्वराज, तू म्हानै आछी भोत लागै । म्हू बोली—म्हू तो सगळा नै ही आछी लागू, मा नै, बाप नै, म्हारै भाई नै, रेखाजी नै, दादी नै, सगळा नै जका म्हारै घर मे रवै ।

—नी, नी, म्हू थास्यू प्रेम करू हूं ।

म्हू फेर बोली—प्रेम तो भोत बडी बात है, प्रेम स्यू ही दुनिया बसै है, भगवान ईं धरती रै जीवा स्यू प्रेम करै है जद ही आ धरती बसै है, मा-बाप आपरी औलाद स्यू प्रेम करै तो टाबर पळै, फेर बेटा बेटी आपरै मा-बाप स्यू प्रेम करै जद मा-बाप आपरो बुढापो काटै, भाई आपरी बहन स्यू प्रेम करै जद वो बीनै सासरै स्यू ल्यावै । विनोद, तू इसो ही प्रेम करै तो तू म्हारै घर रो आदमी है, पण मनै तो तेरो प्रेम कोनी लागै, तेरो माथो सिनेमा सू खराब होयोडो है । म्हू सिनेमा देखू ही कोनी, तू सिनेमा मे ज्यू टीगर टीगरी प्रेम करै बीसो करै है तो मनै माडो लागै, तू म्हानै कागज दियो, बीरै माय बास आवै ही, म्हू फाडन लैट्रिन मे गेर दियो । म्हू आ बात तेरै पापा नै, मम्मी नै कैस्यू के तू अबार सिनमा आळो सो प्रेम करण लागग्यो है ।'

विनोद हाथ जोड लिया । पतो नी, जुवानी एहडै प्रेम स्यू क्यू डरै, इण म जरूर कठैई माडोपण हुवै, माडै काम स्यू हरेक डरै । आछो काम स्यू तो आदमी रो सीनो फूल ज्यावै, बो सगळा री 'वाह वाह' लेवण सारू आगै आवै । विनोद फेर तो म्हास्यू बतरावण लागग्यो, बण उयू स्यू घर छोड दियो ।

म्हू कदे बडेरा री गोदी मे चली ज्यावती, अबै बाही बडेरा रै सामी आवणै मे मनै सरम आवण लागगी । अबै म्हू पापा रै सामी भी कोनी बैठती, पापा भी मनै गोदी मे कोनी लेवता । पण म्हारो लाड भोत राखता —'बेटी मेरी, बेटी मेरी' करता ही रैवता । कदे कदे मनै भोत ही आछी बात बतावता, जद बै मूड मे आवता, जद बानै वेल मिलती । पापा री गंभीर मुद्रा भी भोत सुहावणी लागती । कदे कदे चैनसिंहजी म्हारी गाल पर हळको चपत लगा देवता, लाड री चपत जकी मे सुध मिठास होवती ।

जद् म्हू गैसाणै होअनी तो मा स्यू भी लडती कोनी चूकती, जद् धंनसिह्जी कैंवता—'आ मिर्च है तर्तेया मिर्च'

नीरा अर निशा भी म्हारी तरिया जुवान होगी। नीरा भोत पिक्चर देखती, घा मोत बाता सुणावनो। निशा पिक्चर कानी दखती, बोनै वाता कोनी आवती, बा तो पढाई री बात करती। वा पढाई मे भोत हुसियार ही। वा स्कूल री, पोथ्या री वाता करती। म्हू तीनू बैठती तो 'खोमळी वाता होवती। म्हा तीना री जाडी आच्छी ही।

म्हे तीनू ही ग्यारवी पास करली तीनू ही कॉलिज म चली गई, ईनै स्यू आम चुनाव आग्यो—देस रो साथै राज रो। लोकसभा रो साथै विधान सभा रो। मुख्य-मन्त्री पाडे अर पापा म खटपट होगी। पाडे दखणपथी विचारधारा रो मिनख जद के पापा वामपथी। एक दिन पापा अर पाडे दोनू आपणी कोठी मे तू, तू, मै मै हग्या। पापा वार बार आही कवै—थारी नीति गाव विरोधी है, किसान विरोधी है। पाडे बारबार आपरी नीतिया रो पख लेवै। इस खटपट रो असर चुनावा री टिकटा मे होयो। दोना आ ही चेस्टा करी के आप आपरै आदमिया नै टिकट मिलै। पापा एक चालाकी और करी पाडे भी करी—जठै बारै आदमी नै टिकट नही मिली, बठै दोनू बीनै हराणै साह आपरा आदमी खडया करया। हकीकत आ ही के प्रचार पार्टी रो कोनी हो, आपरै आदमिया रो हो।

पैलडो चुनाव जठै राजा महाराजा स्यू टक्कर रो हो तो ओ चुनाव आपस री टक्कर हो। राजनीति सीधी स्वारथ कानी चाल पडी, मोटैपण पर आगी।

म्हू पापा साथै घणकरी सभावा मे गई अबै पापा री नीति म्हानै राजनीति मे ल्यावणै म ही। पापा आपरै साथी साह अम'र प्रचार करता, घर घर घूमता, हर तरिया रा हथियार आजमाता—जातिवाद रो वारो असली हथियार हो। पीसा अर दारू री भी खुली छूट दे राखी ही। पण जठै वारो आदमी ना हो चाहे पार्टी रो हो, बठै या तो वै जावता ही कोनी, जावता तो कुवेळै जावता, जे टेम सिर पूच भी जावता तो पेट दूखणै रो बहानो बणा लेवता। आपरै आदमिया स्यू ओनै मिलता अर पार्टी रै उम्मीद-वार नै हराणै साह कैंवता अर आपरै आदमी नै समर्थन दिलवाता।

इण चक्कर म म्हे एक दिन म्हारै गाव भी गया।

गाव मे म्हारी भोत आवभगत हुई। पापा रै स्वागत मे गळी/गळी मे दरवाजा बण्या। मच भोत सजायो गयो, पण म्हे ऊनरधा म्हारै घरे ही। दादी बठै ही। दादी रै रहण-सहण मे की फरक कोनी। बोही कच्चो कोठो जको म्हारै यका हो। कच्चै कोठै मे एक माचलियो अर बी माचलियै मे एक गूदड़ो। म्हू दादी नैं बोली—दादी, भोत गरमी पड़ै अठै तो।

दादी री तो वै ही बाता—अरै सुराजड़ी, भोत मोडी आई गरमी आळी, मेरै बडेरा अठै ही दिन काडया, तेरो दादो ई कोटडी मे, ई गरमी मे रयो, अठै ही मरचो। तेरो बाप अठै ही पढयो, तेरी मा अठै ही बीनणी बणन आई।

म्हू काई बोलती। बो वगत एहडो हो के म्हारा जी हजूरिया री काई कमी। पैली म्हारै ठैरणै सारू व्यवस्था नाकै बणी ही, पण म्हारा पापा तो पूरा राजनीतिक, वा भावता ही फैसलो करचो के म्हू म्हारै घरे ठैरस्यू। फेर तो इन्तजाम करण आळा मिनटा मे घर रो रूप बदळ दियो। दरी गद्‌दा, मसद डालिया, चादरा मिनटा मे आया विछग्या, पण दादी एहडी जिद्दण के बण आपरी खाट, गुदडियो कोनी बदळन दीन्यो।

म्हू हवा स्यू, पण पसीनो कोनी मिटै, मनै महसूस होयो, आदमी रो सरीर अमीर कोनी हुवै, रहत अमीर होवै। म्हारै रैवणै रो ढग एहडो अमीरी हाग्यो के अठै तो एक मिनट ही जीव कोनी टिकै। आखा गाबा पसीनै स्यू भीजग्या, पवन लैंवता लैंवता हाथ थाकग्या, जीव घुटै, कठै जावा। दादी स्यू मन री बात करती, पण जीव टिकै जद होवै। गाव री छोरया आसै पासै खडी, म्हारै कानी घूरै, पण बोलै नी। म्हानै कोई जाणै ही तो कोनी। फेर म्हारो पैहराव, वेसभूसा एहडी के बानै अचभो हुवै। बारै तो बोही घाघरियो, छोटो सो कबजियो। कठैई फेर बदळ होयो कोनी। मबार तांई फेर बदळ करण आळो चीज गाव मे बापरी कोनी—लडकिया री स्कूल अर सिक्षा। म्हू मन मे पूरी बात धारली के अठै छोरया रो स्कूल जरूर खुलवास्या। पापा तो दिन भर गाव मे मिलणो जुलणो राख्यो। की ताऊ रै घर तो कदे काकै रै घरे। की दादी स्यू बात करै तो करै की भाभी स्यू मिलै। पापा तो वै ही सागी हा, पण अबार जको मत्री पद स्यू बदलाव

आयो, बो लोगा नैं अचभो पैदा करण आळो हो। पापा आगै आगै, बारी गाडी लारै लारै। बै आखै गाव मे गाडी पर कोनी चढया। उको भी बानै घरे मिलणै सारू क्वै, बै जावै। वै बडेरा स्यू घणा मिल्या। जुवान मोटयार तो वारै सागै फिरै ही हा, पण लुगाई अर बूढा क्या मिलै। पापा रै आवणै स्यू गाव म एक मेळो सो मडग्यो, नई रुणक होगी। थोडी देर पाछै मनै भी बुलाओ आग्यो। म्हू भी पापा सागै होगी। म्हारै जावता ही तो लुगाया अर छोरया रो भट सो जुडग्यो। साची पूछो तो कई जगा म्हारै टिपणै सारू जगा कोनी मिलती, मोटूयार लुगाया नैं पार्ल हटावता। असलियत आ हुई कै म्हारै आवणै स्यू लुगाया, छोरा अर छोरया रै एक अचभो हाग्यो। कारण भी तो हो म्हू छक जुवान ही, गोरी निछोर, शाळा रै नटमे नताई नई फैशन, सलवार, जफर पैरण नैं, गाव आळा तो इसी छोरी देखी कठै। कई लुगाया तो क्वै—आ तो परी सी लागै, भई। आवभगत भी एहडी कै कठैइ दूध, कठैई हलवो, कठैई चाय। आदमी घालै सो क्याम घालै। कठैइ पापा सीरै की एक डळी उठा लेवै, कठैइ चाय रो एक गुटको ले लेवै, कठैइ दूध रो एक पळियो। आ बात ही म्हू करती। दिन छिपै पाछै म्हे लोग घर आया। बारै माचा ढाळ लिया, पेरै तो मोकळी हवा ही, ठड ही। पण लोगा रो, लुगाया रो बोही जमघट। पापा गाव री ही बात करी, फसला री वात करी, घाटै बाधै री वात करी, आपरी पुराणी बात करी। आपरै भायला री वात करी। राजनीति रो एक आग वा आपरै मूडै मे कोनी घाल्यो। पापा मनोविज्ञान रा माहिर आदमी हा।

रात नैं मीटिंग हुई, भोत मिनख भेळा हुया, लोग अर लुगाई। पापा आपरी पार्टी री वात कयी। बीनै मजबूत बणाणै री बात क्यी, धोट देवणै री बात कयी। लोगा म्हानैं बोलणै सारू जोर दियो। म्हू भी बोली। म्हू लाबो भाषण तो कोनी दे सकी, पण पार्टी री छोटी सी बात कैयो, सिक्षा सारू वात कयी, फेर एहडो घोषणा करी के जे म्हारी पार्टी राज मे आई तो अठै छोरया रो स्कूल जरूर खुलवा देस्यू। लोगा म्हारी बात पर बडी ताली बजाई। लोगा अचभो कर्यो—अरै मिनख तो भाषण देवै ही पण आ री लडकी भी भाषण देवै।

पापा रस्तै म मनै भाषण पर स्यावासी दीनी। बोल्या—तू तो म्हा

स्यू भी कमाल करगो। म्हू ताळी कोनी बजवा सक्यो, तू ताळी बजवाली। म्हू घोषणा कोनी कर सक्यो, तू घोषणा कर दी। पापा मोत खुश हा।

म्हू कयो—पापा, गाव आळा कित्तो लाड कर्‌या आपणो आपा इण रै बदळै मे काई दे सका हा। कित्ता आछा मिनख है।

पापा कयो—तू तो भावुक हो ज्यावै है, राजनीति अर भावुकता रो मेळ कोनी। भावुकता मे दया री पुट है, जठै राजनीति सार्यै भावुकता मिली अर राजनीतिज्ञ मात खाग्यो। आपणो उद्देश्य पार होवणो चाहिजै पण उद्देश्य सारू सो आछा मदा करणा पडै, कोरा आदर्श अर सिद्धान्त तो पोथी मे पढावणी रा है, अे तो साध्य है, साधन सारू आ पर जोर दवणो, अकल री बात कोनी। पुलिस चोर पकड्यो चावै जे पुलिस सोचै के बेगुनाह क्यू भुगतै, तो गुनहगार भी ई री आड मे लुक ज्यासी।

फेर तो चुनाव मे जकी बाता होवण लगी, बै इत्ती माडी है जे कोई सुणै तो काना रा कीडा झड ज्यावै। वोट लेवणै सारू कोई कसर कोनी राखीजी अठै तक लोगा करी कै भोळा मिनखा मै मुझान कठै रा कठै ही लेग्या, इण मे न तो सत्ता आळो पार्टी लारै रयी अर न विरोधी।

म्हू पापा नै निरास होयन पूछ्या—'चुनाव रो ओ रूप कद ताई रैवसी ?

—जद ताई वोट रो राज रैसी, पापा रो जवाब हो।

चुनाव रा नतीजा आया तो बात पेचीदा होगी। पापा तो जीतग्या, पापा रा घणकरा आदमी भी जीतग्या, पण पार्टी राज बणावण सारू बहुमत म कोनी आई। आनै बहुमत ल्यावणै सारू लाखू रिपिया खाळना पड्या। राज तो बणग्यो, पण कित्तो दोरो। म्हू मन म करतो—जकै रा साधन पाक कोनी, फेर साध्य पाक कया रैसी। अै लाखू रिपिया कठै हू तो आवै ही है राज रो खजानो कया पाटै कीरा घर पाटै, फेर राज रै आ नुमाइंदा स्यू मनमानी क्यू कोनी करावै। बीरै बावजूद भी अै लोग दावो करै रै म्हे लोग भ्रष्टाचार दूर कर देस्या, कित्तो झूठ अर फरेब है। पखपात अर भ्रष्टाचार तो सारी जड मे है, आम आदमी काई चावै है, रोटी अर रोजी मिल जावै, कोर्ट, कचेडी मे धक्का न खावणा पडै, न्याय सस्तो अर सारो मिल ज्यावै। पण आ हालाता मे तो राज पूजी रै सारै लागर्‌यो है, भ्रष्टाचार रै कांधै स्यू चालै है, फेर सांतरै शासन की **कल्पना** करणी ही

फालतू है।

एक और मवट आयो पापा रै सामैं। पापा री सिकायत हुई केन्द्र मे, कै बिरमानन्द आपरै स्वारथ सारू आपरी ही पार्टी रै आदमियां नैं हरायां। केन्द्र स्यू जाच सरू हुई, पण अबार पार्टी मे दो दल आमैं सामैं होग्या हा, एक दूजै री टाग खीचै हा, इँरी जड राज्या मे कोनी ही, केन्द्र मे ही। केन्द्र मे पापा रा आदमी तकडा हा। वां पापा नैं बचा लिया। उलटो मुख्य-मन्त्री पर आरोप लाग्यो के बो राज मे टीम भावना स्यू काम कोनी करै समाजवाद सारू काम कोनी करै। पापा आपरै उद्देश्य मे सफल होग्या। दाडे मुख्य-मन्त्री रै पद स्यू हटग्या। घणा लोगा पापा नैं मुख्य-मन्त्री रो पद देवणो चाहै हा, पण बा एक ही बात कही—राजनीति टेढी खीर है, मुख्य-मन्त्री रो पद काठ री हाडी है, म्हू काठ री हाडी कोनी बणणो चाऊ, आपा नैं राज करणो है, समाजवाद सारू राज करणो है। आपा आपणै लवेज रो मुख्य-मन्त्री ले आवा, अर बा जालकी वल्लभ जी शर्मा रो नाम दे दियो, पँर बागी जीत होगी। पापा री पाचू घी मे, बारी पायली ओजू चानण लागगी। अबै तो पापा को नाम अखबारा मे जगमगावण लागग्यो, आ पर विशेष लेख लिखीज्या, प्रधान-मन्त्री तकात पापा रै नाम नैं पूजण लागग्या। पापा मे एक ही खास बात ही कै बा आपरी जड जनता मे जमा राखी ही। काम करावणै मे वै झिझक कोनी करता, चाहे कोई कठैऊ आओ। रसोवडै रो काम मा रै हाथ मे हो। दूध री खायेडो नीचै न देखै, अर जून रो खायेडो ऊपर न। आवण आळै नैं रैवण नैं जगा मिलज्यावती, पीवण नैं चाय, खावण नैं रोटी। पापा काम करावणै री चेस्टा करता। बो रोवतो आवतो अर हसतो जावतो। बो गावा मे जावन पापा रा गीत गावतो। पापा री हवा गाव-गाव मे बणगी। पापा रो कैवणो साची हो—'राज री जड जनता मे है, जनता री जड गावा मे। गाव रै आदमी नैं आदरो, राज री जड हालै कोनी। गाव रो आदमी गीत गावणै मे भाड स्यू भी बत्तो। पापा री आ राजनीति काम करै ही।' पापा एक बात बदे बदे कान मे कैवता—'धन आळै स्यू धन खात्यो, कोई गुना'ह कोनी, गाव आळै रा पाच गिपिया ही लगादयो, वो ल्यावकूटा टिठ करसी, बीरा पाच पीसा बचाद्यां, वो गीत गासी।'

11

एक दिन भूआ आयी, भूआ म्हारी गाव में रैवै, ठेठ गाव में एक ढाणी में। वा भात न्तण आई, बीरी बेटी रो ब्याव। वण हट कर्यो—म्हू तो स्वराज नैं साथै ले ज्यास्यूं। म्हानैं भी चाव चडग्यो।

मा तो इत्ती बात कयी—स्वराज नैं पूछल्यो जावैं तो, म्हारैं कांई अठै अणमस्यो पडयो है। बीरी पढाई खोटी न हुवैं।

म्हारैं घर में आ खास बात ही के कोई कीरैं काम में टांग कोनी अडावतो। पापा तो कीनैं बी कैंवता ही कोनी। म्हूं भुआ रैं साथैं होली।

भुआ रो गाव कांई हो—फक्त च्यार घर, गाव रो नाम ही कोनी—ठाणी, कुणसी ढाणी, जद् लोग कैंवता—सुवारजी री ढाणी—म्हारैं भुआ रैं सुसरैं रो पड़दादो अठै आयन बस्यो हो, बीरैं नाम स्यू आ ढाणी बणगी। ढाणी में भी माई-झूपडा ही झूपडा, एक दो खुट्टी। म्हारी भुआजी रैं दो झूपडा, एक खुट्टी अर एक चुन्नो लगायडो कोठो जकै रैं ऊपर टैण। म्हू कोठी स्यू निकळन अठै आई तो सारो माहौल ही बेढव अर अजीब लाग्यो— ब्याव रा ओजू पन्दरा दिन—पन्दरा दिन अठै क्या आवडसी।

छोरया अर लुगाया म्हारैं आसैं-पासैं आऊभी। म्हू नहायी, धोयी, गाबा बदळया, भुआजी रैं घरे एक गहरो नीम हो, बीरै नीचे माची घालन बैठी जद् की जी सोरो होयो, फेर तो धीमैं-धीमैं छोरया सैंदी हुगी। भुआजी री जकी छोरी रो ब्याव हो—बीरो नाम हो—कमला। बीरी छोटी बहन रो नाम हो—नीमा। दोनू छोरया ही फूटरी ही। एकडी लागै ही जाणैं बारो रूप धोरा ऊपर बैठन घडयो होवैं—ऐन धोरा जेडी राती। बारो फुटरापो कुदरत स्यू जुडेडो, नवजीवन तो बारै आसैं-पासैं नो, रूप ज्यू ढळ-ढळ पड़ै। सरीर पाटू-पाटू होरयो हो। होवैं क्यू कोनी—भुआ रैं दो भैंस अर दो गाय। च्यारू पशु दूध देवैं। दस-बारा किलो वक्त रो दूध—सगलो खाणै-पीणै में जावैं। दूध री जगा दूध, घी री जगा घी, छाछ अर दही रो घाटो कोनी।

भुआजी रो मोटोडो छोरो ब्यायेडो। बींरी बीनणी भी अठै ही। बीनणी थोडी सावली, पण भोत ही हसोड, हरदम मुळकती रैवैं, पूरो घूंघटो राखै। सासु-बहू झांझरकैं ही उठ ज्यावैं। बारी घडी कांई, पूरब में एक तारो उगै,

ारै साथै ही दोनू माची छोड देवै। उठता ही भुआ तो चाय बणावै अर हू डागरा नै नीरै। डागर चरण लाग ज्यावै अर भाभी पीसण लाग ज्यावै, ाकी रै चालणै स्यू जको मदरो-मदरो सुर फूटै बो सोवण आळै नै लोरी ो काम देवै।

भुआजी बीलोवणो विलोवै, झरड झरड—। टाबरपणै मे म्हे एक कविता-सी पढता—झरड विलोवणो खाटी छा—। बो दरसाव अबै सामी हो—पूरो किलो चको चूंटियो भुआ काडै। टाबर उठै, कोई दही लेवै, कोई छाछ, कई चूंटियो खा लेवै। बा डीसा पर रणक क्यू कोनी आवै। झाझरकै री चाय मे तो सासू बहू रो ही सीर हो। भाभी मनै बतायो कै म्हू चाय कोनी पीवती, पण मा सा म्हानै हिलाली। मा सा नै चाय तो बणावणी ही, बै म्हानै बुलान कैवती—ले बीनणी, एक कप पीलै। काई लागै है, पण मा-सा रै वेरो कोनी हो कै आ लागै है, फेर तो म्हारो ही ओ करण लागग्यो।

चैतवाडो हो, गोर रा दिन नेडा हा, पो फाटता रै साथै छोरया खडी हो ज्यावती, म्हारै काना मे गीता री भणक आवती—मवारी उठस्या म्हे, दूजो गीत, तीजो गीत, गीत ही गीत, आछै वर री कामना, ईसर अर गोरज्या री पूजा रो ओ ही आशय। काई वर चावै छोरया—सूणो अर वीर, बारो चितराम बा गीता मे सातरो माडीजै, पण मापमद भी बारी सामणै हो—घूरहै बैठो बानको ए, हाडी रो सिरदार। म्हू भी कदे-कदे चली ज्यावती, जद् भुआ वरजती—तू आज ताई गोर कोनी पूजी तो अबै मत पूज, गोर री फासी पड ज्यावै है, बा काडणी पडै। 'एक मानता जकी पीढया स्यू चली आवै। आ मानता मे ही अै लोग जीवै, इण जीवणै मे बानै दोरापो भी काई? देस मे क्राति रो दौर आरयो है, देस पुराणी मानता री जगा नई मानता री थरपणा करणै मे जुट्यो है। पण आ पुराणी मानता मे कमी काई? अठै कदे सडक भी आवैली—बिजळी भी आवैली, स्कूल भी आवैला। देस रै विचारका री मानता है कै आज आपणा गाव अणपढ् है, भोळा है, पण आरै साथै जुडेडी है एक अणमोल सस्कृति जकी परम्परा स्यू चली आवै है, वीरै माय राम-सी मरजादा है, किसन रो रागरग है, सीता-सो सत् है, कदे इसो न होवै कै आ री जिदगी रो ओ अनूठो मिठास अर आकरो रसराग नयेपण रै कोह मे खोसल्या अर आनै जा करनै की नी छोडा, आनै

बीच मे ही भटकता छोडदया छेवड सडका रै माध्यम स्यू आंगी दूध-दही खोसल्या अर स्कूला रै माध्यम स्यू थारी जडी जापडी सम्कृति।

दिनगै उठतां ही जवो वायरियो चालै, टीबा पर बैठन बीरो आणद लेवै तो इयो लागै जे धरती कठैई मुरग है तो औ ही है। नीचै धोरां री बालू रेत जकी नै आखी रात इमरत स्यू सींचै, पून मे ऐडी गोरम भरेडी व्हाई करै ई रै आगै कस्मीर रा बाग बगीचा। धोरां पर फोग अर खींप सातरा लागै, कठैई है कोई कवि ई रो जीतो जागतो रूप माड देवै, बीगा पर मिजर अर सुरेश पर जका फूला रा झूमरा लटकै, बांधै जगली मद मरो- जेडो। जी करै अठै बैठ्यो रवै। सूरज नै म्हू कऊ—हे सूरज, तू थारो घोडां रथ थामने, तू ई रूप रो आणद तो ले। पण आज तांईं कोईं परभू, कोई पल ई धरती रो थिर कोनी रयो, अै पल थिर क्या रवै। छोरयां जद तांईं पूजा सारू फोगा रा टवरा तोडै म्हू यो आणद रो पान करती रऊ, फेर बांरै साथै भीर हो ज्याऊ। वै गीत गावती रवै, म्हू बीरो रस लेवती रऊ। भुआ म्हारै साथै मजाक करती—तनै नी आवडै तो बायडियां थारा दूयू, व्हाव्याई मनै भुआ आवडियो घडा दियो। म्हारो अबै जी लागग्यो। अठै तिनायां रा नीपापा हिवडा कूएं बेरा रै निरमळ जळ स्यू धोयेडा हा, जकां में कठैई छळ, छदम कोनी, गगाजळ री उपमा आरै सामै फीकी पडै।

रूखा पर बैठी कमेडी बोलै, कू-कू-ऊ, टू, घु-घु-उ कू, गूंई। अर झूपडा मे चिडिया री चीऊ-चीऊ, दूर कठैई मोरिया बोलग्या, पी-ओ, पी ओ, इणी मे कठै कोई गाय रांभग्या—ऊंबाव, ऊंबाव, फेर कोई भैंस बोलग्या— टिरडव, टिरडव। ऊंट बरड्या—बल्लू-बल्लू, टोरडी टी-टी गरण लागग्या। औ आखो समाज जको मिनखा, पसु पखेरू अर जिनावरां रो है यो एक सूत मे बधेडो है, कठैई कोई अलगाव नीं, बिखराव नी आपै सगळा ई धरती मा रा जलमेडा बहन भाई हुवै, बरसा स्यू हेत री टकसाळ चालती आव। औ चालता रह्या है, चालता रैसी, आ न होवै कोई ई सार न तोड देवै, अर अै मिणिया ओस री बूदा ज्यू बिखर ज्यावै, आ जिन्दगानी मूड ने लिमग बरबाद हो ज्यावै।

ब्याव रा दिन नेडा आवण लागग्या, अर अधारो होवता ही छोरयां अर लुगायां बनडी रा गीत गाणा सरू कर देवती, फेर तो आधी रात तांईं धूम धूम

धड़ाको, गीता स्यूं आखो गम्पात लाग ज्यावतो, फेर एक ढोलकी आगो, छोर्‌या गावती अर नाचती। कद दिन ढिपतो, कद रात पतो ही नीं लागतो।

दिन और नेड़ा आयग्या, जद् बटाऊ आवण लागग्या। दो दिन पैली भुआ रा जुवाई-सा आग्या, फेर तो माळी-माळण्यां वानैं एक घटा युना लेंवती, गैली, गूंगी यातां में वो टेम टिप ज्यावतो जिन्दगी में जिस्सी स्याणप री जरूरत है, वीस्यूं थोड़ो भाग कम सही, पण गैली, गूंगी याता भी आपरी ठौड़ राखै है।

कदे-कदे रूंख रै तळै बैठी तो पापा अर मा याद आवता, और तो कांई पण म्हूं आवणगै री टेम रेडियो जरूर लगावती जद् राज रा समाचार आवता, पापा रो ज्यूं-त्यूं पतो लाग ज्यावतो। बागो लाग स्यान् ही चूकतो।

ब्याव रो एक दिन बाकी रयो, दूजै दिन बरात आवणी ही। वीस्यूं पैली भात भरीजणो हो पापा अर मा नै जरूर आवणा हा। मनैं भोत अडीक होवण लागगी। अबै तो एक ही रात काढणी ही। टेम सिर म्हूं सात बजे रेडियो खोल्यो हो- खोलता ही पैलो पोत समचार आयो—विधायक हेमराज रै गोळी मार दी गई, वारी हालत खराब है वै अस्पताल में भरती है, गोळी मारणिया ओजूं ताई कोनी पकड़ीज्या। म्हारो एकदम काळजो पकड़ीजग्यो। हेमराजजी पापा रा खास आदमी, दायां हाथ, ऐन नई। अबै पापा नै वेल कठै, पापा लागग्या होगी वारै चक्कर में बी रात नैं थठै रातीजोगो। स्याणी लुगायां देवी देवतावां रा गीत गावै, आखी रात भात-भात रा गीत गाया पण म्हारो जीव तो एहडो खराब होयो के पूछो मत। बारो रातीजोगो तो हो ही, पण म्हारो भी रातीजोगो होयो, एक पल नींद कोनी आयी, चैन कोनी पड्यो। हेमराजजी री सूरत आसै-पासै घूमती रयी। लम्बो अर पतळो डील खद्दर रो चोळो अर धोती, हरदम सिर पर टोपी राखता, कर्मठ अर पक्का आदमी। पापा रा अटूट भगत। पापा हेमराजजी पर ध्यान देंवता अर पापा हेमराजजी पर।

दोरी-सोरी रात तो गई, दिन ऊग्यो, म्हूं पापा अर मां री अडीक में। कदे आ जवै, स्यात् न आवै, न आया तो समाज में कोजा लागस्या। भुआ भी अडीकै। पापा, इत्ता मोटा आदमी, बहन तो भाईनैं याद करै ही, नरसी

रो माहेरो दुनिया मे एक उदाहरण। ओ ही तो दिन है जद् बहन आपरै पी'र पर गरव करै, आडा दिन कोई को देदयो गुण विचार करै। पण ईं दिन परिवार रा पूरा मिनायत भेळा हुवै, जद् भाई ईं औसर पर खूब उ्यावै तो बहन नै ऊपर भर कोई बोलण कोनी दे, ऐड़ी बाता रोज लुगाया करै। टैम टिपतो जारयो हो, म्हू कदे लैरै जाऊ, कदे आगै, कदेई जीप रो घरघरा-हट सूणै। रोटी तो खाई, पण जीसोरो कोनी हॉयो।

ठीक दो बजे एक जीप आवती दीसी, जीप घर रै आगै थम्मी। पापा आग्या, पापा री जीप रै लैरै एक और जीप जकै मे राज रा लूठा अहलकार।

मा सीधी घर म आई। पापा अर बारै साथै लोगा रै ठैरणै रो, प्रबन्ध पैली स्यू हो ही। मा आवता ही कयो— वक्त म्हारै कनै एक घटो है, टैम मत लगावो, भात लेल्यो। हेमराजजी री हालत खराब है। आ बिना बठै मरै कोनी, मसा मेरै कंवणै स्यू इत्तो टैम काढयो है। पापा अर साथ्या नै फटा-फट चाय प्यादी। भात लेवणै मे देर कोनी लगाई, पापा इत्तो देग्या के बो गुवाड मे बो इतिहास बणग्यो। सगळा ही बोल्या—कोई नरसीजी आ बापरूया, रिपिया, कपडा कोई छेह ही कोनी रह्यो। आसै-पासै रै गावा रा मिनख पतो नी कठैऊ आ बापरूया, मेळो मडग्यो। भात रै बाद पापा चल्या गया, मा रैगी। मा नै व्यात्र रै बाद जावणो हो। पापा जावता-जावता पाच मिनट रो लोगा नै भापण दे दियो।

बारात आई, फेरा होग्या, दूजै दिन बारात चली गई। कमना भी चली गई। एकदम सुनड, पलपल मे रोवणो आवै, एक घडी जी नी लागै। बो दिन बीत्यो तीजै दिन कमना पूठी आगी—हसती खिलती गुलाब रै फूल-सी। ऐहड़ो टैम लुगाई री जिन्दगी मे एकर ही आवै। दिन भर कमला स्यू बतलावती रैयी। दूजै दिन म्हारी जीप आयगी अर म्हू मा-बेटी आपरै घर आ बापरूया।

12

म्हे मा-बेटी आवता ही हेमराजजी स्यूं मिलवानै अस्पताल गया। हेमराजजी अमरजेंसी वार्ड मे एक पलंग पर सूत्या हा। अबार बांरी हालत की सुधरेडी ही, खतरे स्यूं बारै होगी ही। म्हे देख्यो बांरै एक हाथ रै पट्टी बंधरी ही। कदे-कदे वी बोलै हा। म्हानै पतो लाग्यो कै थारै हलकै मे जठै स्यूं वै विधायक पद सारू खडया होया अर जीतग्या बठै बांरै विरोधी आं पर गोळी चलवादी। वै एक टेसण पर खडया हा गाडी पकडू हा, चाणचकै दो आदमी घोडै स्यूं ऊतर्‌या, आं पर गोळी चला दी। बांरै निसानो तो आंरै सीनै पर मारणै रो हो, पण आडै हाथ आग्या, हाथ रै गट्‌टी चोट आई, बै तो दौड ही पडग्या टेसण पर मिनखां री कमी कोनी, केर बै चावता आदमी हा, फटाक स्यूं लोगा आनै उठा लिया, फटाफट एक जीप करी अर सावई ही एर अस्पताल पूचा दिया। बात रो हाको तो फूटणो ही हो। च्यारूंकानी फोन खडकग्या, पापा खुद चालन आनै अठै लै आया, खून तो छोटिये अस्पताल म ही बन्द होग्यो हो अठै असली इलाज चालू होग्यो। पूरी सरकार आनै बचाणै मे लागगी, डाक्टर अर दवाया रो टोटो कोनी रैवण दियो।

बात आ ही के आ रो विरोधी एक लूंठो आदमी, घर स्यूं सेठो, मिनखां अर धन रो टोटो कोनी। पण हेमराजजी गरीबां रा मसीहा—पूरा सेवाधारी। पुराणा कार्यकर्ता अर दीन रा दास। आधी रात नै कुण ही जगा लियो तो जाणै रो आळस नी, काम रो आळस नी। आपरै हलकै मे की रो काम अटकण कोनी दियो चाहे बो दफ्तर म हो। जगा-जगा स्कूल खुलवा दिया, घणी जगा अस्पताल बणा दिया, पाणी री डिग्गी बणा दी। गाव-गाव पैदल फिरणो, लोगा रा दुख-दरद पूछणो, लोगा कनै गुवाड मे बैठ ज्याणो, बांरै दुख सुख री करणी, लोग ऐहडै मिनख नै वोट नी देवै तो कीनै देवै। विरोधी मोटै घर रो, मोटै घर रो आदमी, मिनखां रो बाछो घडो, पण गरीब री ताकत नै कुण पूछै, वो जिनै झुकज्या, वीरो बेडो पार कर देवै। हेमराजजी कनै घर कोनी हो, पण गरीबा री ताकत भोत सातरी ही, इंरै आगै विरोधी कया टिकै। हेमराजजी वीनै दोनू बार ही हजारां वोटां स्यूं चित

मार्‌यो। विरोधी रो और तो बस चाल्यो कोनी, दो आदम्या नैं मारणै सारू त्यार कर्‌या, हेमराजजी तो बचग्या, पण विरोधी मार्‌यो गयो, मिनखा की निजरा स्यू तो गयो ही, पण अबै जेळा री हवा खाओ। दोनू आदमी गिरफ्तार होग्या, साथै बारो हिमायती।

रात री टेम, पापा, मा, म्हू अर छोटो भाई, पूरो परिवार छात पर बैठ्या हा। गरमी की करडी मौसम ही। दिन मे तकडी तपत पडै, बारै निकळन जी कोनी करै, पण रात की ठंडी होवै। बारा बजे ताई फेर जी कोनी टिकै। म्हे नीचा ऊपर दरी बिछा राखी ही, एक एक तकियो लिया पडया हा।

पापा की सोच मे डूबरया हा। बोल्या—सुणै है।

—काई कैवो हो, मा कयो।

पापा मा नै नाम स्यू कोनी बुलावता, सदा स्यू पापा नै बाण पडेडी ही, 'सुणै है,' ही मा रो नाम हो। कदे-कदे स्वराज री मा कह देवता। पण नाम लेवता बानै सको आवतो। पापा रो ब्याव टाबरपणै म ही होग्यो हो, जद स्यू पापा मा नै 'सुणै है' कैवता। दादी रो घर म पूरा दबदबो हो, अबै मोटा मिनखा म बैठता जद मा नै नाम स्यू बुलावता, जद बो नाम मोत ही अपरोगो लागतो, म्हानै भी, पापा नै भी।

पापा फेर की अफसोस में बोल्या कोनी।

मा ओज् पूछयो—बोल्या कोनी ?

एक बात और ही—मा भी पापा नै 'सुणै हैव' कैवती, कदे-कदे मा स्वराज रा पापा कैय देवती। मा तो पापा रो नाम लेवती ही कोनी। जे की दूजै रो नाम ही बिरमानद हावतो तो कैवती—बारो नाम रासी, स्वराज रै पापा रो नाम रामी। मा पडदो छोड दियो, घुघटो छोड दियो, सगळा स्यू बोलै, चाहे जेठ हो, सुसरो हो, पण अठै मां थठै ही खडी ही, जठै पैली ही। मा आं सम्कारा स्यू लैरो कोनी छुडा सकी। पापा पूछयो—हेमराज जी कानी गई ही आज ?

मां थयो—गई ही।

—काई हाल है ?

—ठीक है, इलाज चालू है।

पापा फेर चुप हो ग्या। पापा दरी पर ही सूत्या हा। पापा रै कदे

माट मुरजाद कोनी ही। बै कठै ही सो ज्यावता, चाहे दरी हो, पलग हो, बिस्तर हो या ना हो, सिराणो हो या ना हो, अर बठै ही नींद लै लेवता। कदे-कदे तो इसी बात होवती के जद सोवता जद तो हळको कपडो लेया सोवता, झाझरकै जद ठारी ओसरती तो बी कपडै में गिंडी-सी बण ज्यावती, घणी बार मा सभाळती जद बा पर कोई मोटो कपडो गेरती। खाणै-पीणै, सोवणै, आढणै मे बारै नखरो कोनी हो, पण बारै निकळता तो बै आपरै डौल रो ध्यान राखता, सेव रोज बणावता, कपडा रोज बदळता।

पापा बिया ही पसर्‌या-पसर्‌या बोल्या—आ तो आछी हुई, हेमराज बधग्यो, नी तो ईरा टाबर रळ ज्यावता।

—टाबर तो रळता ही, मिनख रै लैरै ही है सो क्यू? मा कयो।

पापा कयो—तनै ठेरो है, हेमराज कनै बी कोनी। जमींनडी अण ई जनसेवा मे एडै लगा दी। दो चुनाव लड्या, घरे की हो कोनी। की लोगा रो सारो मिल्यो, की म्हे लोगा दियो, की पार्टी दियो, पण चुनाव म ता छाया चढै, गोगैजी रा डेरू बाजता हो गोगैजी रै भगता रै छाया चढै ज्यू। जमींनडी एडै लागगी। खरचो के सहज है आ चुनावा मे, पीसो पाणीज्यू चालै।

—अण की कमायो कोनी, मा पूछ्यो।

—कमावै काई हो अण तो खोयो, सवा री धुन ही ई रै, टाबरा रो काई हाल होवतो, लोग तो चार दिन रोवै, फेर भेडा भेली भेड, कुण कीनै याद करै, काई याद करै, लोगा री आपरी कोनी सरै।

—बात तो ठीक है, मा बोली।

—म्हू फिकर म डूबर्‌यो हू, राजनीति तो गदो खेल है, इण जिसी गदगी की धधै मे कोनी। म्हू अबार राजा हू अर एक पल मे की कोनी। म्हू अबार महल मे हू, एक छण बाद हो जेल मे। मौत तो अठै चप्पै-चप्पै पर है। घर स्यू निकळू अर पूठी लाश आ ज्यावै। तू सुणै कोनी, रोज एड्डी खबरा आवै, फलाणी जगा राष्ट्रपति अर प्रधानमत्री नै मौत री घाट उतार दिया अर सेना रो शासन होग्यो। पाकिस्तान मे लैरै सो होयो ही हो।

—गाधीजी जिसै भलै आदमी नै ही कोनी बकस्यो, मा बोली, दूर क्यू जाओ, बा बीरी काचळी मे हाथ दियो हो।

पापा बोल्या—जद् ही तो म्हू कहू हू, ईं राजनीति रो कोई भरोसो कोनी, कद् काई हो ज्या, म्हू एक बात सोची है।

—काई ?

—आज हेमराज माथै आ वात बीती, आपणै सायै भी बीत सकै है।

—थूको मूडै स्यू इसी बात चेतावो ही मत।

—बात सगळी सोचणी पडै, फेर थारो कुछ धणी, बैठण नै ठाव कोनी, टाबर रुळता फिरै, लोग हसै—अै है सा-बै।

मा बोली कोनी, फिकर में डूबगी। पापा आगै कयो—आपां एक मकान सो बणाल्या, आज तो चलतो चक्कर है। इण मौकै सो क्यू हो सकै है, वक्त बीत्या की कोनी।

—मकान आळी बात ठीक कयी।

—म्हारै निगाह में एक जगा है। एक आदमी मोल देर्यो है, बीरै माय ही खेत है, पूरो पचास बीघा। बिजली है, बीच में मकान साक् जगा बणा लेस्या।

बात तय काईं हुई, बठै पाचवै दिन सो कारीगर लागग्या, चिणाई सरू होगी भर दो मीना में मकान त्यार—च्यार कमरा, ऊपर पापा सारू एक चौबारो, चोखी खुली आगणवाई, रग-रगन लगा'न त्यार, बारै एक मोटो झूपडो आया-गया सारू। पूरी पचास बीघा जमीन, मायनै एक बेरो, जमीन में बेरै रै पाणी री सिचाई। टेम पर की बीजो।

मकान मत्री रो हो, बिजली अर टेलीफोन जरूरी, सगळी व्यवस्था सरकार रै खरचै पर हुई, म्हे लोग एक दिन बोखो दिन देख परपणा कर दी, कोठी अर इणमें भीत फरक, पण इणम जको अपणायत रो मिठास हो, बीरी होड कठैई कोनी।

म्हे लोग मोन राजी हुया, दादी नै पतो लागणो ही है, दादी एक दिन आगी।

दादी आवता ही सगळो घर नै देख्यो। वा बोली—युयकारै जाओ, घर आछो बणा लियो।

दादी नै मकान दाय आयो। पण दादी री बाता तो मजेदार होवै, म्हे सगळा दादी री बाता सुणन बैठ ज्यावा।

दादी गाय री बातां बतावै । दादी बोली—वो मर ज्याणो, खीवलो है न, कवं, तेरै बेटै धन कमा लियो, अबै राजधानी में कोठी बणाई है, कोठी ।

म्हू बोली, अरे मरज्याणा, तेरो काळजो क्यू तळतळीजै, बणाई है, पीसा कमाया है, *अगलै री हिम्मत है, तू ही बणा ।*

बो बोल्यो—नाम तो जनता री सवा रो जनता नै गूरड-गूरड खावै है ।

म्हू नो लड मरी—रोवणजोगा, तू बिसोक जायन दियां हां, कै तू नाम धता, जकै रो खाग्यो । पण एक बात है । मेरो पूरो जी सोरो जद होवै, जद् आपा इमो ही मकान गाव में बणावा, जद् आ राम-मार्‌या रै काळजै में धोबा लागै ।

—बठै काई कना, मा, कुण रैवै ? म्हू बोली ।

—अरे, थे पढ तो गया, पण गुणीज्या कोनी, बायळी रैवणो भाइया मे ही चाहे वैर हो । बठै है न, बो भेरियो चूनियो, ओ खीवलो, रोवणजोगा, चूतर्‌या पर बैठ ज्यासी, ऊचा गोडा कर कर, थारी काट करै, और साप-खाद्‌यो, थारै चूचाडी लागै, थे थारो आपो सभाळो, बी एक री राड तो कूअै म पडन मरगी बो एक मुसरो, फिरै इया ही दोजक ढोवतो, राड तो आखै दिन हाडती फिरै रोहियां म, घाघरियै री लावण मूडे मे ही रवै, आप करै चोधर । एक ही डीगरी कोनी ब्याहीजै, बीस साल री होगी, याड पाडती फिरै ।

—थारो काई लेवै, मा बोली, आपा क्यू लोगां री थाछी मदी करा ।

—बीनणी कह्वै जको सुहावै, दादी बोली । काई था रडया रो लेवन खायो है, म्हू तो की कनै ही उधारै नै ही कोनी जाऊ, मनै क्यू सेवै, रोवै आपरै जामणिया नै, अरै था है न डूमडो, नाम हैं की बीरो, हा, घोटियो, अरै छाज बोलै जकै तो बोलै, पण, छालणी बोले जकै रा सत्तरसो वेज, ऊतगयेडा, तेरी राड तो तेरै वस मे ही कोनी, बो ही कवै—विरमानद, सेठा नै लूट-लूट खावै, तो बेटो रा काढ, अगलै री हिम्मत है, खावै, तू ही खा, म्हू तो सीधी मूडै पर मारी । पण, म्हू तो एक ही बात कऊ—आपणै बठै एक कोठी बणावो, जद्, म्हारो जी सोरो होवै ।

—थारै कनै पीसा है, थे ईंट गिराद्‌यो, वणा म्हे देस्या, म्हू कयो ।

—म्हारै कनै पीसा, कयारा हुवै, दादी बोली, दो सालस्यू तो काळ ही पडै है, गुवार तो सेर ही कोनी हुयो, अळ लागली, बाजरी हुई चावण जोगी, अबकै हाडी मे ही दम कोनी, मावठ हुई कोनी, की पवन पान न मारी, तो को सरस्यू वण ज्यासी, पण पक्की ईंट गिराणी सोरी बात कोनी, बेटा, माया लागै माया, माया दादी कनै कठै। एक मरज्याणै फूसियै नै दे राख्या है हजार रिपिया, बो कवै—देस्यां ताई, देस्या, अरै देमो कद तेरे छोरै रै ब्याव मे दिया हा थोरै टावर चार होग्या, पण तेरै स्यू मारला पीसा कोनी देइजै, पण बिचारो गरीब आदमी है, काई देवै, कठैऊ देवै।

मा कयो—माताजी, आप तो अबै अठै ही आ ज्याओ।

—अरै, काइ आ ज्याऊ, दादी बोली, मेरो जी अठै रैवण न करै अर बा जगा भी कोनी छोडीजै। म्हारो भी बा बिना जीवडो कोनी टिकै, वा मरज्याणा नै दो सुणाद्यू अर दो सुणल्यू जद काळजो दब्बै, खायेडो पचै। म्हू बी तो खोडली हू या जमीनडी री लीर है, दो डूढियार है, बारै सारै पडी हू। जे अठै आज्याऊ तो बो घर तो गोर बण ज्यावै, बी जमीनडी मे की होवै तो की मेडै कोनी, म्हू तो हाड बठै ही नाखस्यू।

दादी अर मा बया ही बाता मे लागा रह्या, म्हू तो उठ परी पढणै मे लागगी, म्हारा दो दिना पाछै इम्तिहान हा।

मा नये मकान नै सजावणै मे लागगी, म्हू भी मा नै मदद करती। सामान तो म्हारै कनै हो ही कठै, नई दर्‌या मा मगाई, फरनीचर मगायो, सोफासैट मगायो, पापा रै कमरै नै ढग सिर बणायो, मा आपरो कमरो न्यारो बणायो, म्हारो कमरो न्यारो, म्हारै कमरै मे म्हू अर भइयो जको अबार दसवीं मे आग्यो हो।

मा आपरै कमरै म एक आलमारी मे देवी देवतावा री फोटू मगान सजाली। मा अबार देवी देवतावा नै ऐहडी सजाई के पापा नै भी अचभो होग्यो। आ बात लाबी चाली। पापा बोल्या, स्वराज, आजकलै तेरी मा आपा सगळा नै छोड दिया जका मे जीव है, निरजीवा री पूजा सरू करी है, वै मा नै हस्या। पापा ज्यू-त्यू नास्तिक हा। मा री आस्तिक्ता भी ओजू ताई सामै कोनी ही।

—आ रा ही दिया दिन है, मा कयो, जेल वो दुनिया गई हो, कोनै ही

मनीस्टरी कोनी मिली।

—तो आ बात है, पापा कयो, म्हारली करी कराई अयां ही गई, सारो श्रेय अण ता आ फोटूआ नै दे दियो।

—आपा नै ओ वहम है, मा बोली, जो कुछ करे है भगवान् करै है, मिनख तो बीरै हाथ री ही कठपुतळी है मैरो तो जी हालण लागग्यो जद् हेमराज जी रै गोळी लागी। वानै भगवान् ही बचाया है, मारण आळै तो बानै मार ही दिया हा। बो ही न्यायकारी है।

—न्याय करण आळो बात म्हारै कोनी जचै, पापा जबाब दियो, बावली तू देख, आज इण धरती माथै कित्ता गरीब बिखरूया पड़या है। दिन-रात कमाई करै है, अर भूख मरै, न्याय करै है, पण जका चौबीस घंटा खोटा धंदै, वै ऐश करै है, महला मे रवै, कूलर रै नीचै सोवै, घारा भर हवाई जहाजा म चालै, म्हू कया मानल्यू के बो न्याय करै।

—इसी बाता मनै कोनी आवै, म्हू तो एक ही बात जाणू के खोटा करन जे कोई भगवान् री सरण मे आ ज्यावै, बीनै ओ माफ कर दवै, ईरी किरपा होवै तो डूबतै नै तार ले, आगम्यू बचाले, मौत रै मूडै स्यू काडण आळो ओ ही है, मनै तो ओ ज्ञान आग्यो, थारी बात थे जाणो, म्हू तो आ रै ही चरणा मे हू।

मा री इत्ती ड्रुगी आस्था देखन पाप भी तरका री तलवार कोनी चलाई। आ ही बात मजाक मे कहदी—कोई बात नी, तू तो म्हारो आधो अग है, थारी करणी मे म्हू आध रो हकदार हू।

13

म्हू म्हारै मकान री छात रै मायूणं पासै कुरसी ढाळन बैठगी। म्हानै म्हारै इम्तिहान री त्यारी करणी ही। पोथी म्हारै हाथ मे ही। म्हारो मकान पूरो एकान्त मे हो, एक सड़क ही फक्त दिखणादै पासै, बो पर अबार ताई

ट्राफिक तेज कोनी ही। पाच चार बस दिन मे आया-जाया करती, कदे-कदे कोई कार, जीप टिप ज्यावती। पण उतरादो पासो तो सफा उजाड हो। दूर डूगरा री एक लाबी कतार ही, डूगरा अर म्हारै मकान रै बीचै कोई मकान नी, बीहड जगल हो जठै मोकळी किस्मा रा झाड बोझा खडया हा, जगळ सुहावणो कोनी, डरावणो हो। डूगरा पर बादळा रा मोटा-मोटा टोळ उठै हा, जका भोत हो मन भावणा लागै हा। म्हू पढणै सारू बारै आई ही, पण बी दरसावनै देखन म्हारो जी इण दरसाव मे रमग्यो। सोचण लागगी स्यात् बिरखा आ ज्यावै। बिरखा तो ई दरसाव नै भोत ही मनोहारी बणा देवै। म्हू वा बादला नै दखती रही—देखती रही। बादळ धीमै-धीमै ऊपर उठै हा, दूर टोका मे बिरखा री धारा चालण लागगी ही, डूगरा पर बिरखा भोत मजेदार लागै, फेर धीमै-धीमै छाटा औसरण लागगी, छाटा घणी तेज होगी। म्हू छाटा औसरता ही कुरसी मायनै लेगी अर फिर ई आछै बिसराम रो आणद लेवण लागगी।

मेहा क्यू बरसै? धरती प्यासी होवती होसी, प्यास तो हर जीव नै लागै, धरती भी कोई जीव है, धरती री आ माग है, मेहा आ, म्हानै अबै प्यास लागरी है, धरती बुलावै, मेहा आवै—बुलबुलावतो, गरजतो, चमचमावतो, झबझबावतो, आपरी जुवानी रो प्रदर्शन करतो। धरती आपरी बावा फैला राखी है—आलिंगन सारू, मेहो बरसण लागर्‌यो है।

दादी आवता ही कही ही—अरे, स्वराज तो अबै जुवान होगी, थानै फिकर कोनी, अट् मा क्यो हो—हा, छोरो देख राख्यो है, अठै बी ए, मे पढै है, घर रो तो गरीब है, पण छोरो भोत आछो।

पापा अर मा भी आ ही बात करी। मनै तो बडी सरम आई, वारै सारै ही कोनी बैठी, पण एक जी करै, बात पूरी सुणल्या, एक जी करै, सुण्या कोनी करै है, इसी बाता, दूर जाणो ही आछो।

विजय भइयै भी एक दिन एक बात कही ही—पापा अर मा तेरै ब्याव री बाता करै हा।

म्हू सीसै मे मूडो देखू तो म्हू ही लाज मरू। चालू तो धरती लाज मरै। सडक पर चालती नै छोरा घुर घुर देखै, कई सीटी बजा देवै, कई सारै कर टिपता गाणो गा देवै। एक दिन तो एक ...

म्हारी चुन्नी हवा में उडै ही, सारै बरस टिपनै एक छोरी म्हारी चुन्नी हो ले उडग्यो । बा चुन्नी म्हारै पूछ्यो तो मोत ही सरम आई ।

मेह बरसण लागर्‌यो हो — दुबलग, मूसळधारा, बिजळी कड़कड़ावै ही, चिमकै ही, धरती रो जी सोरो होर्‌यो हो, बीरो ताव दीसतो होवण लागर्‌यो हो बा गुसै अगा पसरी पड़ी ही । म्हारै डील में गुदगुदी होवण लागरी ही—म्हूं गट्टे पर पड़गी अर एक तकियो माथा में लेलियो । मेह अबार भी बरसै हो, चमनाटा चालै हा, गाढा बादळ लागर्‌या हा, फिर धीमै-धीमै मेहो थमग्यो, बादळ साफ होग्या, आभो ओजू नीलो दीखण लाग्यो जाणै धरती री प्यास बुझगी अर बो धप्यो गयो । इतै में बीरै म्हूं मोरचाली आगी, बा चाय ल्याई ही ।

—ल्यो, बाई-सा, चाय पील्यो ।

—अरै ! तू मोर स्याणी ए राधा, टेम पर चाय ल्याई ।

—बीरो नाम राधा हो, म्हूं बीनै रोज ही छेड़्या करती—राधा, तेरो किसनो कठै ?

बा चाय कप में घालै ही, आज तो मनै बीनै छेड़न री सूझी—राधा, राधा, किसनो कोनी आयो ।

बीरै धणी रो नाम तो दुरगो हो, पण म्हूं तो बीनै किसनो ही कैवती ।

—मर तो होसी, मरज्याणो कठै ही ।

दुरगो ब्याया पछै आयो ही कोनी, कठै ही दिसावर चाल्यो गयो ।

म्हू बीरै साथै मजाक पर उतर आई—क्यूं ए, राधा, सावण बना, तनै बो याद कोनी आवै, तेरो गोविन्द ।

—क्यूं मसकरी करो, बाई-सा, चाय पील्यो ।

—चाय तो पीस्यूं ही, पण देख, सावण री झड़ी लागरी है, तू लुगाई री जात है ।

मनै बो गीत याद आग्यो—तेरी दो टकें की नौकरिया, मेरा लाखों का सावन जाय, म्हूं बीनै सुणायो, पण बा एकर तो मुळकी, फेर बीरै आंख्यां में सावण बरसण लाग्यो । म्हूं मन में डरी, बिचारी रै लागग्या जबर चोट हुई है ।

—लै तो, चाय पील्यो, आपरा माथै, तू भी चाय ले ले ।

म्हारै साथै ही बैठन चाय पिया करती, पण आपरै काळजै नैं दाबणै मे भोत पटु ही, फटाक स्यू मुळकी, फेर हसण लागगी, पण बीरा आसू ओजू बीरैं गाल पर ही पड्या हा, सूक्या कोनी हा।

—माताजी लड़ैली, आ बात कहर बा नीचैं गई, म्हू चाय पीवती रही, पीवती रही, राधा री जिंदगी नैं लेयन सोचती रही।

राधा म्हारै अठै दो मीना पैली तो आई ही। बीरो बाप अठै छोडग्यो, मा नै बो जाणै हो। बीरो मा पर जी टिकै हो। पाच साल पैली ई रो ब्याव होयो, बस ब्याव ही होयो, बण तो ईंरो तात ही कोनी ली। वो दीसावर चल्यो गयो, पाछो आयो ही कोनी, बठै ही रमग्यो। राधा मा बाप रै भार होगी ही, मा, बाप राधा रै भार होग्या हा। मा बीनैं आपरै कनै बुलाली। नारी री जिंदगी रो आ ही तो विडम्बना है। पण राधा रो जीवन कदे उमड्यो ही होसी, पण अबार तो बो सूसण लागर्यो हो जाणै हवा भर्योडो ढोल सूसण लाग ज्यावै है।

म्हू नीचैं गई तो पापा आग्या हा। कोठी रै आगै गाडी खडी ही।

पापा कमरै मे हा, बारै कनै एक आदमी बैठ्यो हो। म्हू नेडै गई तो पतो लाग्यो—वै तो मोहनसिंह जी हा। म्हू बानैं पीछाण्या ही कोनी।

मनी वणणै रै बाद अबार ही आया, वै तो म्हारा पडोसी हा। पापा जेल मे हा—जद् वै ही म्हानैं सभाळ्या करता। बारी लुगाई भोत आछी ही, बारी लडकी म्हारी सहेली ही, म्हारै साथै रम्या करती। पण अबार तो वै ऐन बूढ़ा होग्या, सिर धोळो होग्यो। मूडै सळ पडन लागग्या।

म्हानै देखता ही वै खड्या होग्या, म्हारै माथै पर हाथ फेर्यो। बोल्या—म्हारली सुमित्रा री तरियां होगी। तू भी तेरै पापा री फिकर होग्यो।

पापा बोल्या—सुमित्रा भी बडी होगी होसी।

—बीरो ही तो फिकर होर्यो है, मोहनसिंहजी बोल्या।

पापा ओळमो दियो—भई, मोहनसिंह, इत्ती काई नाराजगी, तू आयो ही कोनी।

—अरै बडा आदम्या, काई आवा, किरायो कोनी लागै, कोई काम होवै तो आवै, नी ईंया ही आयन काई लेवैं।

—म्हूं तो घरे बैठ्या घणी वार याद कर मैंवता, पूछो म्वराज स्यूं, पापा क्यो, सगळा ही आया है अठै, मालमसिंह मिल लियो कई बार, फूसाराम घणो वार मिले है, म्हूं गयो हो वठै आपणे क्वार्टर में गयो हो, सगळा हूं मिल्यो घरे जाय जायन पण तू कोनी मिल सक्यो, छुट्टी पर हो।

—हा सुणी ही थे आया, मनैं बडो पछतावो रयो, पण अबार हाथ मारणी पडी, बिना मतलब आवणो भी आछो कोनी, अबार मतलब ही तो आयो।

—बोल, चाय प्याऊ, छाय प्याऊ, कॉफी प्याऊ।

—की कोनी पीऊ, अण राज थारले पाणी प्याव दियो, थी चकरी में एड़ो चढ़र्‌यो हूं पूछो मत।

—ना, पीवणो तो पड़सी ही।

इतै में मा आयगी, आवता ही बोली—ओ हो हो, आज सूरज कीनै ऊगैलो, थे तो मोत ईद रा चाद होया, क्यूं है थे पाइव मरता मरग्या, पण सोमवती अमावस कोनी आई, म्हूं कूं, म्हारै मोहनसिंहजी कोनी आया।

—आवतो तो अबार हो कोनी, भाभी-सा, पण अब मारन आयणो पडयो, राड तो रडापो काटै पण रडवा कोनी काटण दे।

इतैन मोहनसिंह साह चाय आगी, पापा अर मा भी साथ दियो।

—अबै बताओ, थानै आवणो क्या पड्यो, थानै तो कागज स्यूं काम पर देखा, म्हूं थारो गुण कोनी भूलू, मा बोली, पण थे सुमित्रा री मा नैं साथै क्यूं कोनी ल्याया।

—अठै टेम सिर रोटी रा सासा पडर्‌या है, थानै सुमित्रा री मा री लागी है, म्हूं मैंकडू रिपिया खराब कर चुक्यो, भो तो हारी रो भाव चाव्यो है।

—बात तो बताओ, मा बोली, आधी रात थारै सारू हाजर हां, मोहनसिंहजी तो इत्ता साला में एकर ही तो कोनी आया।

—काई कू, सरम आवै, थारो खास आदमी, मूछ रो बाळ कोडाराम एम० एल० ए० म्हारो तबादलो करा दियो कोसा दूर जाण-बूझन।

पापा हस्या, थानै तो नीति रो ज्ञान हो जदी तबादला पाछै वणा राखी ही।

—कोडाराम जी थास्यू नाराज है, ये थारा वोट बिगाड़ दिया, पापा कयो।

—म्हू एक बात कू आपनैं, मोहनसिंह कयो, कै तो आप जनतंत्र रो ढोंग रचो मत, जे रचो तो फेर एहड़ी कोजी अर ओछी बाता पर मत आओ। म्हू जाणू हू राज रो नौकर राज रैं पक्ष अर विरोध में बोल नी सकैं, भाषण नी दे सकैं, कनवेसिंग नी कर सकैं, फकत बीनै वोट देवणं रो हक। म्हू कठै ही बोल्यो हू, वोट माग्या हू, वोट सारू मजबूर करयो हू, तो थारो जूतो अर म्हारो सिर, काई हुवै कठैइ दुकान पर बैठन बात करली, भाया में बैठन बात करली, इत्तो ही नी कर सका तो फेर आपणो राज काई? आ पाबन्दी तो राजा ही कोनी लगाई ही। ये म्हे बैठन राज नैं गाळी काढ़ता ही, छोडो इण बात नैं म्हू थानैं मदद करी, ये म्हारा भायला हा, म्हू कर दी, पण थारा आदमी तो खुल्लम खुल्ला प्रचार करैं, गाव-गाव फिरैं, घर-घर घूमैं, म्हे जे बोलग्या तो गुनाह होग्यो।

—तो कोडाराम करयो ओ काम, मा बोली, ये कोडाराम कनै गया?

—गयो क्यू कोनी, गयो, मनै के कोडाराम स्यू डर लागै, बो कवै म्हू करायो, जाण-बूझन करायो, भोत तबादला कराया हा। ये लोगा म्हारो विरोध करयो। म्हू कयो—जनतंत्र उठारयो, वोट मागो क्यो, कहदयो—राज म्हारो अर म्हारै बाप दादे रो। क्यू करोड़ू रिपिया जका जनता रो धन है बीनै फूको, आग लगाओ।

मोहनसिंह जी काफी ताव में हा, पण पापा तो रोज ऐहड़ी बाता सुणैं, बा पर ऐहड़ी बाता री कोई प्रतिक्रिया कोनी हुवै।

मा ही बोली—ये कठै ठहरडा हो, आ बताओ।

—धरमसाळा में, मोहनसिंह कयो।

—आ घर कोनी, मा ओळमो दियो, जाओ थारो सामान अठै ली आवा, म्हू गाडी भेजू हू।

—मा ड्राइवर साथे मोहनसिंह नै भेज दियो।

लैरै स्यू मा पापा नै कयो—आ काई व्यवस्था करी है, राज रा नौकरा नै क्यू परेशान करो हो।

पापा कयो—राज करणै सारू सौ कौतक करणा पड़ै, बै करता रवै तो

काम करै या नी करै, वोट तो देवणा ज्यै। म्हानै तो राज करणो। वो इग्यारा, नौ इत्ता अद काम चालै।

—मोहनसिंह रो काम कराणो है, मा कयो।

—काम तो कराणो है, मगर अटको लागग्यो, अबार काम हावता ही ओ ही लागतो तीन लावणो फिरतो। ओ बोदूराम गे तो पैर भी वी काजी हुवै, पण आपां भी तो बोदूराम नै लड़ा कोनी राख्या, वीनै बगलो काट नाखदेस्यां। आ राजनीति है, देखो जी।

पण मा ई राजनीति नै कोनी समझती। मोहनसिंह जी घरै आया हा। वै आपरा बांगिया बिस्तर बठै ही पड़ा ल्याया।

मा नै चैन कठै, पण तो बोदूराम नै दिन रिरै यू देखी धुमा दिया। वो अठै ही आपरै क्वार्टर मे मिलग्यो।

पत्तो भी मा रै काई जची, पण बोदूराम नै आंगणा ही मनरवाणै ले लिया।

—बोदूराम जी, मा बोली, आ ही है थारी राजनीति, बाढ न मूण्या ऊ काई पैर कोनी लीलरै, म्हारा तो कोई होय री जिवार मारो कीड़ी टिम-टमी स्यू कोई लाभ कोनी मिलै।

—माताजी, कोई बात तो।

—बात भी बतास्यू, ध्यावस राखो। थे मोहनसिंह जी नै कोनी जाणो। ■ मो काल मारै नेड़ै आया हा, अ मोहनसिंह जी थारै सामै बैठ्या है, अद म्हानै दुनिया भर रा संकट घेरैला हो, कोई म्हारै नेड़ै कोनी आवतो, अै सगळा ई धरती पर ही मरै हा जका ऐन एक नम्बरी देसभगत बण्या फिरै है, घोटपोसिया होर्‌या है, शहर मे बड़ै ही नावड़ै हो कोनी थे एक ही म्हारै सारै कोनी आया, अं मोहनसिंह जी म्हारै आधी रात रा काम आया करता, आरो हू गुण कोनी भूलू।

—काई बताऊ, बोदूराम कयो, अै म्हारै खिलाफ रह्या, म्हानै वोट कोनी दिराया, म्हारी खिलाफत करी।

—ओ तो थारो इमो ही बोट है, अं काई करै, पढ्या लिख्या आदमी है, अं सैं समझै है, थारा कारनामा है इसा हो, म्हारै ऊ तो छाना कोनी,

द्यू। लोग म्हारै कनै रोज अठै आवै, इण राज रा सतायोडा। की रो तबादलो करा दियो, कीनै ही नोकरी कोनी, कीरै ऊपर झूठो मुकदमो चला दियो, कठै ही फौजदारी करा दी, कीनै पाणी कोनी, कठै स्कूल कोनी, कीनै पुलिस आळा कूट दियो, म्हू तो आखै दिन ओ ही राडो रोवणो देखू है, थारा काटा म्हानै बुहारणा पडै, राजनीति रो मतलब ओ तो कोनी के थे मिनख पणै नै ही भूल ज्यावो। वो भगवान तो देखै है, तडकै नै वठै काई मूंडो लेयन जावैला।

कोडाराम नै काटै तो खून कोनी, बण तो नीचो मूंडो कर राख्यो हो।

मा तो बोलती ही रयी जाणै बा आपरो सो हवडास काडै ही—काल म्हारै कनै एक लुगाई आई, आयन पग पकडन रोवण लागगी। बुरी तरिया, झरर-झरर बीरी आख्या झरै, बोल कोनी पाटै, म्हू मसा बीनै थमाई। बण क्यो—म्हानै पुलिस आळा सतावै, म्हारै एक कुवारी छोरी है, म्हू काई बताऊ, रोज दारू पीयन आ ज्यावै।

म्हू आई० जी० पी० नै फोन कर्‌यो। बै तो धरमात्मा आदमी, बोल्या—काई बतावा, च्यारू कानी आग लागरी है, इनै बुझावा तो परनै लाग ज्यावै, बीनै बुझाया तो इनै लाग ज्यावै। घणा तो थारा एम० एल० ए० दुख देवै है। अै थाणेदारा माथै मिलन पीवै। काई करा। थारै एम० एल० ए० री नी राखा तो बै कोनी पार पडन द्यो, राखा तो ओ हाल है, म्हानै तो नौकरी करणी है, रिटायरमेंट रा ग्यारा मीना रह्या है।

आ बात आई० जी० पी० क्वै, मा बोली, जको पुलिस रो मलिक है। अरै भाई कोडाराम जी, राजा जुल्म कर्‌या करता, म्हू जाणू हू, पण जुल्म करण आळा हा कित्ता ? गिणती रा, पण अबार तो राज अणगिणती लोगा रै हाथा मे है, एम० एल० ए० बारा मरजीदान, गिणती ही तो कोनी। क्यू बिचारै गाधी रै मूडै पर तोवो मसळो हो। अै थोडा सा धरम-करम आळा आदमी पुराणा राज मे है, गिण्या दिना मे सगळी ही सेळभेल होवण आळी है।

मा ठैरै क्यारी, बीनै तो आज बोलणो हो, बोलती तो गई। इया लागै ही जाणै रीस विचरगी।—म्हू तो भाई, म्हे नौकरी मे हा तो भोत सुखी हा, आपरी नीद उठती आपरी नीद सोवती। स्वराज रै पापा टैम सिर काम

पर जावता अर टेमसिर आ ज्यावता। पण अबार तो झाझरकै वठ्ठ अर आधी रात री मोऊ हूं। रोटी खावणे रो ही पतो नो, कदे-कदे या हीं भूल ज्याऊ, कठै ही कूणे-कचूणे में बठन आख झपकू तो लोग थाही कोनी झपकण दे, लोग कवे—आ (विग्मानन्द) कोठी बणासी, वो तो मनै वैरो है, काई बणासी, कयां बणासी, ओ सगळो म्हारै माथै पर बगजो है, म्हानै रात नै सूतां नै नींद कोनी आवै, अखबारा आळा रो राम नीसग्यो है। भाई, लोगा रा मुंह खुलग्या, गरम गेर दी, मरजी आवै ज्यू बक ज्यावै, मरजी आवै ज्यू लिख मारै। वानै कवे तो कुण कवै?

मा इत्ती बोली, इत्ती बोली के मा रो जीव टिकग्यो, मा मे इत्ती बाता छिपी पडी ही, म्हानै वेरो ही कोनी हो।

कोडाराम बैठ्यो-बैठ्यो सुणतो रयो, मोहनसिंह जी भी कोनी बोल्या, मै जाणै हा, माताजी आज कोई कसर कोनी राखी।

मा इण दुनिया नै देखन घोत स्याणी होगी ही। आखर मे वण एक स्याणी बात कयी—देख कोडाराम, तबादलो तो आरो तनै कैनसिल कराणो है, पण जे तू गाठ बाधै के मोहनसिंह म्हारो ध्यान पटासी तो म्हूं आरो तबादलो है ज्यू ही रैवण द्यू, क्यू के तू तो बदळो लेवण री सोचै लो, और कोई कबाडो करा देसी, आनै सतासी, उळझादेसी अं फेर म्हारै कनै भाजन आसी। म्हूं कठै आडो आस्यू पण तेरो मन साफ होवै तो तू अबार ही आरै सागै बात कर लै, आदमी कोजो घोत होवै है, इंरै काळजे मे घणी गाठ्या है, छुरा है छुरा तीखा तीखा।

मा तो चली गई, धीरे नाम स्यूं फोन आयो हो। मोहनसिंह जी अर कोडाराम दोनू मिल बैठन बात करण लागग्या, दोनूं हसता दीखे हा, घुट-घुटन बात करता दीसै हा, सागै चाय री चुस्की लगावै हा।

तीन दिन पाछै मोहनसिंह जी आपरो हुकम लेग्या।

14

—तू कठै गई ही ? मा पूछ्यो ।

—ऊपर तो ही, म्हू कयो ।

—काई करै ही एकली ?

—एक उपन्यास मिलग्यो हो, पढण लागगी, म्हू कयो ।

— ठीक है ?

मा रो जो टिचग्यो, मा मेरो ध्यान राखती, कठैइ ऐरी गैरी जगा न चली ज्याऊ । घर मे भी सौ भात रा मिनख आवता, मा बारो भी ध्यान राखती । म्हू की साथै ज्यू-त्यू हसती, बोलती भी कोनी, फेर भी मा टोक देंवती ।

म्हू यह देंवती—मा काई बावळी हू ।

मा कैंवती—तू तो बावळी कोनी, बेटा, आ ऊमर बावळी है । आपणै हा न एक कलक्टर सा'ब, बारी छोरी नै मा-बाप घणी छूट दीनी, बेरो है काई होयो ?

—हा, बेरो है, मा ?

—बस तो, बा छोरी बावळी तो कोनी ही, स्याणी ही बी० ए० मे पढै ही, किती बदनामी हुई ?

म्हू तो चुप ही, काई कैवती, म्हा स्यू की छानी कोनी ही, कुण किसी, कुण किसी । पण राम जाणै काई बात ही, कौ जुवान छोरा ही हिम्मत हीं कोनी ही, म्हा स्यू बात करै । आ बात कोनी ही के म्हू फूटरी कोनी ही, पण बडै बाप री बेटी ही, बासना री आख म्हा पर गडावता बानै डर लागतो ।

पण आ बात कोनी ही के म्हू सफा भाटो ही, म्हारै भी मन हो काळजो हो, म्हारै भी हिवडै मे कल्पना रा पखेरू उडाण भरया करता । रात नै सुहावणा सपना अधबीच मे नीद उचाट देंवता । आभै रा तारा मुळकता दीखता, चाद हसतो दीखतो । मोरिये री पीऊ' 'पीऊ'''टीटूडी री टी उ '' टी उ मन मे गुदगुदी पैदा कर देंवती ।

म्हू छात पर घणी बार एकली बैठ ज्यावती, बैठी रैंवती, बैठी रैंवती,

म्हारै आसै-पासै की रो ही घर कोनी हो, कीं री छात कोनी ही, म्हारै नैणा रै सामै मुध प्रकृति होवती, हर्‌या-भर्‌या मोटा-मोटा रुख, दूर आभो धरती जठै मिलै बठै ताईं रूख ही रूख दीपता, एक कानी परवत ही परवत, बादळ री टोखा सुहावणा, मन भावणा। कठै-कठै ही रोहिड़ै रा लाल-लाल फूल भोत फूटरा लागता। एक कानी पूरो नगर आपरी ऊंचाई साथै टिक्योडो, जम्योडो मन नै ओपतो। दिखणादी सडक पर कदे-कदे मोटर री घर्‌र-घर्‌र स्कूटर री भर्‌र-भर्‌र, कार री सर्‌र-सर्‌र सुणती रैवती। म्हू मोटर नै जनता मानती तो कार नै रहीसी अर स्कूटर नै जवानी री उपमा देवती, साइकिल तो गरीबी रो रूपक हो ही। पगा चालता जका—गरीबी री रपा स्यू नीचा, कीनै ही भाकडा स्यार करणा है तो की सडक पर खड्या हो ज्याओ।

आ दिना म्हारी जिन्दगी म एक ठहराव सो आग्यो हो। इम्तिहान तो खतम होग्यो, करू भी तो काई करू। राजनीति म भी कोई हलचल कोनी, पापा आपरो काम करता रवै, मा अपणो, विजय भइयै ने इम्तिहान देवणो है, फिर बो तो छोरो है, छोरो तो कठैइ आपरा दोस्ता मे चल्यो जावै, अबै म्हारी सहेल्या भी दूर पडगी, अठै इत्ती दूर आवै कुण ? आसै-पासै कोई ढग रा घर नी, इनै-बीनै छोटी-मोटी झूपड्या जका मे लोग आपरी जूण पूरी करै, म्हारै घरे कीं नौकर-चाकर आपरै धन्धै लाग्या रवै, म्हारै सारू वेल कीनै।

म्हू कदे छात पर चढ ज्याऊ, प्रकृति नै देखती रऊ, कदे नीचै आ ज्याऊ, रेडियो सुणती रऊ, लोग आवै जका सीधा मा कनै जावै या पापा नै पूछै, म्हू ऊन-सी गई काईं करा।

ऊपर बैठी ही बिया ही ज्यू रोज बैठ्या करती। सामै ही दरखता रो झीड। बिरखा रुत मे ई रो रग सातरो हो ज्यावै, सागै रूख पत्ता स्यू लद ज्यावै, न्यारा न्यारा पण एक साथै, डाळ स्यू डाळ जुडर्‌या हा, जिया बै बाथ घालन मिलै, कठै खरडी ही तो कठै कीकर, कठै झाडकी ही तो कठै ही जाळ, कठै ही रोहिड़ो हो तो कठैइ कैर। बधणै म कीकर रो मुकावलो कोनी, पण खेरटो न तो पसरणै मे तकडो न बधणै मे आ मध्यम श्रेणी री प्रतीक हीं, जाळ रो फैलाव आछो सात्तरो, गहरी चोखी छिया ही घणी, पण रोहिड़ा

आपरै रूपरंग मे नाकं ही दीखै, नखरै मे डूब्योडा। बारी भी एक दुनिया है, अठै भी गरीब, अमीर है, आपरी-आपरी ठौड मे सगळा खडया है पूरै जी सोरै स्यू, कठैई कोई टकराव नी, बाथ स्यू बाथ घालन मिलेडा। कठैइ पीपळ अर वड भी खडया की पूंजीपति-सा भारी भरकम, वारै नीचै छाव तो घणी पण वाकै आसै-पासै को बन्चू नै पागरण दे नी।

इत्तै नै राधा भाजन आई—बाईसा, बाईसा थारो ब्याव मडग्यो।

ब्याव मडग्यो, म्हू अचभै मे पडी, कोई बात नी चीत नी, ब्याव कया मड्यो, म्हू मन मे करो। म्हू की पूछती, पण राधा खुद ही कह बैठी—दस दिन पाछै पच्चीस तारीख नै।

म्हारै पगा रै थडा वधग्या। म्हू पढी-लिखी छोरी ही, म्हा स्यू पूछ्यो तक कोनी, म्हानै मण ही देखी तक कोनी, म्हू की नै देख्यो तक कोनी, स्यात् एक बात चालै ही, एक लटको है, अठै ही बी० ए० मे पढै है, गरीब है, स्यात् बो ही हुवै। पापा नै तो वेल कोनी, मा तो स्याणी है। जमानो बदळ्यो है इं बदळाव नै दोना ही महसूस स्यू कोनी कर्‌या, म्हारी राय तो कोनी ली, लडको बो ही है तो वीनै तो म्हू देख्यो है।

ब्याव तो साच्चाई मडग्यो। ब्याव रा दिन ही दस रह्या। मन मे की और तारिया होवण लागगी, एक अजीब तरा री उदासी, एक अजीब तरा री जिज्ञासा, एक अजीव तरा री खुसी। म्हू भुआ री लडकी रै ब्याव मे गई ही, भोत धूम धडाको हो—बनडी गावती छोर्‌या, पण अठै तो कोई छोर्‌या ही कोनी ही, पडौस ही कोनी हो, हा जका ऐन गरीब-गुरबा, खेता मे मजूरी करण आळा, भात भात रै दस रा, आपणा गीत बानै आवै भी कोनी। मां रो घणो जी करै, पण करै काई? म्हारी छोरी रो लाड कोड कोनी होयो। भुआ री छोरी नै तो एक मीना पैली गूद जमान दियो, म्हारै बो भी कोनी दियो। तीन दिना पैली म्हारा पीळा हाथ कर दिया, कठैक एक पडत बुलायो, दो छोर्‌या मिला एक दो गीत गा दिया, काम सो कर्‌यो। पापा नै फुरसत कोनी, मा नै फुरसत कोनी, कुण भात नूतण जावै, दादी नै भी कोनी बुलाई। घर मे ब्याव सो लागै ही कोनी हो, न बान, न बनौरा। पापा कह्यो—आपा आदर्श ब्याव करा हा, सगळा पडपच है, फरेब है, ढोग है, फकत फेरा, न कोई दायजो न कोई बनेव, पाच आदमी आसी अर फेरा

करन ले ज्यासी।

सावण दिन बारात आवी पर जीप मे पाच आदमी। न टुवाव, न माडो, एक पडत आयो, फेरा करावण लागग्यो, म्हू नया भाभा पैरन एक पाटै पर बैठगी। पापा आया ही कोनी, हा मुख्य-मंत्री हा, विधायक भी हा, कई मंत्री भी हा। मुख्य-मंत्री पापा नै फोन कर्यो बे कठै ही दौरे पर हा। पापा उत्तर दियो बताया—म्हू काई करस्यू, आप भी तो बाप री जगा हो। म्हू उघाडै मूडै फेरा लिया।

दूजै दिन ही म्हू ता भीर होगी, मा मनै विदाई दीनी, भीर हावता-बक्त कण ही कैयो—स्वराज अर आनन्द रो विसोष मेळ है। म्हारै आख्या म आसू आया, म्हू रोई, म्हारै रोवणै रै साथै गीत भी हुया करै—लस्कर पाछो घेर, ओळ्यू तो आवै' भुआ री छोरी विदा हुई तद् ओ गीत गाइज्यो, छोर्‌या भी आपरी सायण नै भीर करै—म्हारी सायण चाल पडी, म्हारा डब्-डब् भरि आया नैण' इण घरती रो सो रोवणो भी गीत साथै होवै, म्हारा फेरा म न ही गीत काई गुज्या—चोथो ए फेरो'' हुई पराई, म्हू इण गीत बिना ही पराई होगी। गोवर पसर्‌यो ए, आभी तरी धीय बिना' अे सगळा गीत म्हारै मन मे गू ज्या अर गूजता रया, आखै मारग म्हानै याद आवता रया।

जीप एक गाम मे जा ठैरी, एक घर रै आगै जकै री हर ईंट कच्ची ही, छोटो सो बारणो, गाम री लुगाया अर छोर्‌या मनै घेर ली, पतो नी वयू, म्हू आखै मारग उघाडै मूडै ही, पण अठै आवता ही म्हू घूघटो खींच लियो।

इण घूघटै म जको मनै आणद मिल्यो, वो उघाडै मूडै मे कोनी हो। आवै जकी छोरी अर लुगाई म्हारो घूघटो करल म्हारै मूडै नै देखै अर म्हानै सरावै—'ओ हो बीनणी तो भोत फूटरी।' इण फूटरै सबद स्यू ही म्हारो पाव खून बढै। लुगाया री बाता बडी मजै री ही—'बीनणी, आख उघाडो'—म्हू आख उघाड द्यू, पतो नी क्यू मरम आवे ही, म्हू लाज स्यू माय ही माय गडी जावै ही, अठै आवता पतो लाग्यो के नारी याय कित्ती ही पदल्यो, बीं रो मूळ रुप लुक नी सकै, लाज तो नारी रो खास लखण है। आख उघारता ही छोर्‌या कवै—ओ हो आख्या तो मट्टा सी है। 'ओठ देख ए, कित्ता लाल है, ए मर-याणी, रच्येडा है काई' 'ना तो, रच्याडा-सा

लागे है, बडै घर री है, भीत बडै घर री, ए रग देख, राममारी, लाल सुरख,''' इसी बाता करती रयी, फेर म्हारो गठजोडो बाधीज्यो, म्हारी सासू म्हारो स्वागत कर्‌यो—'लाडो आयो जीत रे ?' एक रिवाज, एक परम्परा, पुराणै जमानै मे जमीन अर जोरू जोती जाया करती, जद् स्यू ई ओ गीत जीवतो है। फेर तो आखो आगणो ही गीता स्यू गूजण लागग्यो। रात नै रातीजोगो लाग्यो, सगळै देवी-देवतावा नै याद करीज्या। आदमी आपरी कमजोरी मे देवी-देवतावा अर भगवान रो सारो चावै चाये वो ही या ना हो। कदे-कदे म्हारी निजर मकान री भीता कानी चली ज्यावै, आखो मकान ही कच्चो, गोबर लिपीज्यो, पण मकान मे जगा-जगा सौरम ही सौरम ही, नये भात री सौरम—मेहदी री ज्यू हुवै।

मनै दो छोर्‌या पकडन छात पर लेगी। म्हू छात पर बैठगी। म्हारी जिन्दगी मे थे सगळी अजीब बाता ही, जाणै कोई सपनो हुवै, म्हू कदे इसी बाता री कल्पना तक कोनी करी कै कदे म्हारै मे इसी भी बीत सकै, कदे दादी काणी कवती—एक राजा हो, वीरै सात बेटी, राजा आपरी बेटी नै पूछै—तू कीरै भाग रो खावै—बापू थारो। राजा खुस। एक बेटी कह दियो—म्हू मेरै भाग रो खाऊ—तो लेज्याओ इनै जगळ मे, मोर, कागलो मिलै जकै नै ब्याव दीज्यो। फेर बीरो ब्याव मोर साथै होयो।'

म्हानै बा कोठ्या, बगला मे रमा'र पापा ओ काई करचो, काई पाप करचो हो म्हू।

म्हू एकली पडी-पडी मन ही मन मे रोवती रयी, ऊपर चादणी म्हारी पीड नै देखन मुळकै, यो ही सागी चाद जको म्हारी कोठी पर चमक्या करतो, बो लैरै ही आयो, म्हारी मजाक उडावण सारू।

आगणो जद् ऐन चुप होग्यो तो धीमै-धीमै कीरा ही पग वाज्या, म्हारी आख्या मे नीद कठै ही, पतो नी, म्हारो काळजो क्यू धडकण लागग्यो—धडक-धडक। म्हू तो नीचै पडी ही, एक सूती विछावणो हो। वा आवता ही म्हारा दोनू हाथ पकडन मनै माची पर बिठादी। फेर पत्तो नी वानै काई सूझी, बोल्या—'म्हानै माफ करदयो, स्वराज, म्हारो कोई कसूर कोनी, थारै पापा री ही आ जिद् ही, वा म्हानै थारै साथै ब्याव दियो। म्हू आपरै कनई लायक नी।

म्हू बाई बोलती, म्हू तो रोवण लागगी, चसर-चसर, पतो नी म्हारो रोज क्यू फूट पड्यो।

—म्हू हाथ जोड आपरै आगै, बा कह्यो, आप रोओ मत, म्हारी भी तो गलती कोनी। म्हारै बापू नै मना लियो। म्हू बापू स्यू कैवतो रयो— म्हारो बीरो कोई जोड कोनी। आपा गरीब आदमी। मसा गुजारो करा, बै मनीस्टर, कोठी, कारा आळा। पण थारै बापूजी कयो के बै मनै आपरै कनै ही राखसी। बठै ही पढासी, नौकरी लगासी। म्हारै बापूजी रै लाळ पडण लागगी, थारै बापूजी रै आगे म्हारी चालती भी कया, बारी बात टळै गया।'

म्हारो रोवणो थीमो तो कोनी रयो, पण म्हू बशयसिया पाटती रही, फिर बानै भी नीद आगी अर म्हानै भी। म्हारी सुहागरात रो याद इण शदीरोवणै मे ही छिपग्यो अर परभात रै साथै ही म्हारी जीप पूठी चाल पडी, म्हारी मा रो एहटो ही आदेश हो।

आनद बारो नाम हो, पण मा बानै कवरसाहब कैवती। कवरसाहब भी म्हारै साथै हा। कवरसाहब भी दो दिन ठैरया अर पूठा आपरै घरे आग्या। इनै कवरसाहब गया अर बीनै स्यू दादी आगी।

दादी तो अवार बिकराळ रूप धारण कर राख्यो हो, पूरी चढी वणरी ही। मौको भी इसो पड्यो के पापा अर मा दोनू एक जगा बैठ्या मिलग्या। आवता ही बोली—था दोना री अक्कल मे तो फाको ही कोनी।

—क्यू मा, पापा कयो।

—तू स्वराज रो ब्याव करघो, मनै तू ठाव ही कोनी पडन दियो।

—टैम कठै हो, मां

—टैम तेरै कनै कोनी हो, बीनणी कनै कोनी हो, आ क्या फिरै तेरै आगै पीछै, कीनै कयन दो बाक मढवा देवतो, म्हू आ ज्यावती।

—काम मे म्हू तो सूनो होरयो हू, मा, बो ध्यान कोनी रयो, म्हूं भी कोनी हो।

—तो आ आछी बात ही ? मनै सो ठाव पड्यो, छोरी रा कोई लाड कोड होया नी, गीत गायाजी नै, बान बनौरा होया नीं, दान-दाइजो ही कोनी, तनै तो तेरी अक्कल पर घमड होग्यो, तू मनीस्टर काई बणग्यो,

भगवान् वणग्यो, दूजं नै की गिणै ही कोनी ।

—आ बात कोनी हो, मा, तू समझी कोनी ।

—म्हू काई समझू, तू अबै बडेरो होग्यो, मनीस्टरी तो म्हू कोनी कर जाणू, पण ब्याव-स्यावां नै आपस्यू बडेरा नै पूछन करै है, बारो वाण कायदो राख्या करै, बास्यू सलाह लिया करै है, तेरै तो भातवो कोनी आया, बानै भी कोनी बुलाया। तेरै स्यू सासी सरदा आछा, जका आवरी रीत तो कोनी छोडै, तू तो सफा ही मनै नीची दिखादी, मेरी नाक काटली, मनै अबै मिनखा मे कोई बोलण कोनी दे, आ तो करी तो काई करी ।

—मा, तू पैली चाय पाणी पीले, म्हाले छोने घणेडी है न, फेर बातं करस्या ।

—म्हू तो तेरो पाणी कोनी पीऊ, तू चाय री बात करै ।

—मा इत्ती नाराज मत हो। म्हू तनै समझास्यू ।

—तू कांई समझासी ? मेरै पर तेरै जित्ती ही अक्कल कोनी । बावळी धून, काई देख्यो तू, बी जीवणियै रो बेटो है ओ, म्हू जाणू हू बी घर नैं, बैठण नै ठूढा कोनी, पैरणनै पूर कोनी, खावण नै दलियो कोनी, बठै तू छोरी नै ढोवी है। चुनावा मे फूकण नै तेरै कनै धन है, लाखू बाळै है, की ढग, सिर घर देख लेंवतो, छोरी उमर मे सुख पावती, आ बता, तेरो धन ई छोरी रै काई काम आयो, थो कोठी काई काम आई। आतो बीं जीवणियै रै घरे पोठा गेरै ली, तू अर तेरी लुगाई अठै कूलर री ठडी पवन मखोला, धूड तेरी ई कमाई मे ।

पतो नी, मा रै काई हुयो, बीरै आख्या मे पाणी आग्यो, बा उठन मायनै चली गई ।

पापा एकदम गभीर होग्या, जद् पापा गभीर होवै तो बारो मूडो की तपसी मिनख स्यू कम कोनी दीखै । पापा बोल्या—मा, आपा समाज नै जाणबूझन विगाड राख्यो है । छोरी आपणे भार होवै है, आपा छोरी जामता ही रोवा हा, करळावा हा, बीनै भाटो माना हा, दगड माना हा, फक्त ई वास्तै कै आपानै बीरै ब्याव मे दान-दाइजो देवणो पडै, कोरी कमाई ऊ कोनी सरै, लोगा रा घर फोडणा पडै, लोगा रै जमीन गिरवी राखणी पडै, ओ रिवाज, बोल, कित्तो माडो है। फेर तू ही तो कया करै है—काई तो हूत

रो सरावै, काई बणहूत नैं बिसरावैं। जगा-जगा लोग छोरयां नैं कूटैं, मारैं, समूळी बाळ देवैं है, तू सुणैं कोनी।

—सुणू तो हू, दादी बोली।

—फेर म्हे लोग जका आज समाज रा अगुआ हां, लोगां रैं सामैं आ आदर्श राखां कै ब्याव इयां भी हो सकै है, न दान, न दाइजो, न बरात, न बान, न बनोरो। तू जाणै है, इण छोरी रैं ब्याव रैं नाम स्यूं म्हू लाखूं रिपिया बटोर सकै हो। दस-दस हजार रिपिया मनैं बान रा देवण त्यार बैठ्या हा, पण काई करां बी धन रो, बठैं मेलता। मा, जकैं कनैं धन नीं होवै, बीनैं धन मोत प्यारो लागै, जकै कनै धन है बो धन स्यूं धाप्यो बैठ्यो है। दाळ रोटी मिल ज्यावै, बीस्यूं मोटो धन कोनी। लडकी नैं लडको चाहिजै, लडको चज रो है तो धन हो जीसी, लडको चज रो नी है तो धन चाहे टीबा बधेडा क्यो नी बड ज्यासी।

—आ बात तो साची है तेरी।

—तू। मा, सगळी बात साची मान लेसी, ज्यूं म्हे करचो है लोग करण लाग ज्यावै तो साची मान, लोग बस ज्यावै, ब्याव तो अबार उजडणै रा ढग बणरया है, दोसैं-दोसैं आदमी बरात म, काई बठै लडाई रोप राखी है, फेर बठै दारू पीवणो, हुरळ मचाणी, कोई बात है आ, लाख-लाख रिपिया री समठूणी, फेर भी सगो राजी कोनी।

—बात है तो ठीक, तू जे लाख रिपिया लगावतो तो लोग बया कोनी टिक्ण देवता, कैवता, खाग्यो खुरड'र देस नै।

—आपां समाज बणाणो चावा हा, मा, आपणो देस कयां आछो बणै, रीत री बात छोड, रीता तो नई बणाणी पडसी, पापा कयो।

—बात तो तेरी ठीक है, पण लोग कोनी मानै।

—तू लोगां री छोड, समाज ने नई दिसा देवण सारू लोगा री चिन्ता नीं करणी। स्वामी दयानद अर गाधी हरिजना सारू जकी बात क्यी, कित्तो विरोध होयो। चूतरिया पर बैठण आळा लोग देस नैं कोनी बदळ सकै। देस नैं बदळन सारू मर्द चाहिजै जका विरोध री आग नैं चीड फाड आगै निकळ ज्यावै। लडको म्हू देख्यो है लाखा मे एक।

वात पापा री साची निकळी, आनद जो आपरै बी ए रै इम्तिहान

मैं विश्वविद्यालय मे दूजैं नम्बर पर आयो, बारा नम्बर इक्तर प्रतिसत हा। बानैं देखता म्हू तो रोहिडै रो फूल हो। बा सारू कोठी म एक कमरो धरणीज्यो। बानैं सहकारी विभाग मे नोकरी मिलगी, बा अबै कानून री पढ़ाई साथै चलाली।

15

म्हारो पीर अर सासरो एक जगां होग्यो। आनदजी रै कमरै मे बड़ती तो सासरो अर बारै म आवता ही पी र। आनदजी डील रा साफ सुथरा हा। रग गोरो, पण डील पतळो, न लाबा न ओछा। म्हू बारै आगै मोटी लागती, तगड़ी लागती।

बाकै टेम घणकरो पढणै मे बीततो। रात नै पढता ही सोवता अर चार बजे उठ'न पढण लाग ज्यावता। म्हू बारी इत्ती ही सेवा करती, उठन बानै चाय बणा देवती, कम बोलता पण बोलता जद नाप-तोलन बोलता। मनै बारी बोली मीठी लागती, ज्यू-ज्यू वै नेडै आवण लाग्या, म्हू बानै समझण लागगी, बै मनै समझण लागग्या, पण वै एक बात बारै माथै स्यू कोनी मिटी—बै मेरै सामै अपणै आपनै ओछा मानता, मनै हुकम देवता सकता। बा मनै कदेही कोई काम कोनी कयो, म्हू खुद ही आपणो फरज समझन करती। झाझरकै जद् बै उठता, म्हू आपी जाग ज्यावती, बा मनै जगायो कोनी। कदे मनै नींद आवती रैवती, तो बै खुद ही उठन चाय बणा लेवता। जद् म्हू कैवती, 'मनै जगा लिया करो।' वै आ ही कैवता—'मनै काई जोर आवै है, आछो है नींद उड ज्यावै।'

एक दिन म्हारा सास-सुसरा कोठी मे आग्या। म्हू बारै पगा लागी। साम सुसरा ठेठ देहाती आदमी। देहाती भेस, देहाती बोली, देहाती चाल, न मोट न मुरजाद। सासू रै घाघरियो ओढणो, काचळी अर सुसरै रै कुडतियो अर धोती, साफो। मा बानैं कूलर री शीतळ हवा म सुआया, पण बानै नै

बा सुहायी कोनी, बै दोनू एक नीम रै नीचै माचो ढाळन बैठग्या ।

म्हू बानै आ दिना मे ही बोली—मा सा, बाप-सा आ नीं समझे के म्हे बारै बेटै नै खोस लियो ।

आनदजी बोल्या—आ कदे हो सकै है, म्हारी तनखा रा पीसा बानै पूचादयू हू । नौकरी करै वारो इत्तो ही तो सीर होवै है ।

मा बानै विदा कऱ्या—सीवळ अर कामळै रै साथै मा बानै हजार रिपिया दिया । मा, बाप ज्यू-त्यू पीसा ऊ राजी होवैं, बै राजी होयन गया ।

दीवाळी रो सै दिन । दीयां रो त्योहार, अधारो पड़ता ही च्यारू कूटा मैं दीया री जगमगाहट स्वोचन्नण । म्हू अर आनदजी कोठी पर दीया जगावा । माटी रा दिया, दीया मे तेल भर बाती, फेर लौ स्यू लौ मिलावा, एक दीयै रै साथै दूजो दीयो, दीया री पूरी लगस, भोत सातरी लागै । आनदजी तेल घालै, म्हू बाती मेलू, लौ स्यू लौ जगावणै रो काम म्हे मिलन करा । दोनू ध्यान राखा, लेरला जगायेड़ा दीया बुझ न जावै, बायरो दीया न झटको दे सकै, पण पवन तो एकदम थमेड़ो ही, झटको लागै क्या । आनदजी इण बात न लेयन दर्शन पर उतर आया, जिदगी रो दर्शन । नारी अर-पुरूष मिलन इण सस्कृति रो निरमाण करै ज्यू आपा करा, ध्यात भी राखणी पडै, कोई इण सस्कृति रा दीया बुझा न देवै ।

आज कोठी मे धटाऊ कोनी, सगळा आपरै घरे गया, आपरै घर री दीवाळी मनावण नै, त्यूहार सिर तो घरे जावै ही । जिदगी रा झझट तो कदे मिटणै रा ही कोनी, अै तो चालता ही रैसी । पापा भी घरे हा, बै भी आगणै म बैठ्या हा । मा खावणै-पीवणै रै सामान मे लागरी ही ।

पापा वेला हा, कोई आज मिलण आळो कोनी । पापा जद् वेला हुवै तो भोत खुस होवै । वै भी पेड्या-मेड्या ऊपर आग्या । म्हे दीया जगावै हा ।

ऊपर आवता ही बोल्या—'भई कमाल है, भोत ही फूटरी दीया री लगस लगाई है, अबै म्हानै कोई फिकर नीं, स्वराज एकलो ही भोत दुख पावती, अबै स्वराज साथै आनद ।

मनै भोत सको आयो, पण अबै बडे कठै । अब तांई म्हे बात करता, वा बद होगी, पण काम बद कयां होवै ।

पापा तो बात करै जद् घणकरी बात ही बारी दर्शन री होवै । अबै तो

वै चूकै ही क्या। बोल्या—स्वराज साथै आनद रो मेळ हुवै, जद् ही वो स्वराज हुवै, पण वो आनद होवै क्या जद् शासन चालै फेर समूचो सहयोग जरूरी है।

पापा भी काम मे लागग्या, वै दीया भेळा करण न एक साथै मेलै।

म्हू कयो—थे जावणद्यो पापा। वा कयो—अरै, म्हू म्हारी मा रै एकलो बेटो हो, म्हारी मा तो खाणो-पीणो बणावती, म्हू दीया जगावतो, म्हानै दीया री बडी अटकळ है।

अबै म्हे तीनू दीया जगावणै रै काम मे लागग्या।

दीया झिलमिल झिलमिल भोत ही सुहावणा लागै हा।

इत्तै नै पापा, ध्यान कर्‌यो, कई लैरला दीया बुझग्या हा।

पापा कयो—बेटा, लारला दीया रो भी ध्यान राखो, ओ भोत जरूरी है। वै फेर दर्शन री बात ल्याया—नई विचारधारा आपरी थरपणा सारू पुराणी नै मारणी चावै, कवै, पुराणती मर्‌या विना म्हानै कुण पूछै, पण वै भूल ज्यावै है कै थे पुराणा पडस्यो जद् लोग थानै मार देसी। जकै दीयै मे तेल है, बाती है, बो आगी तो कोनी बुझै तेज बायरो बुझा सकै है, पण एक-दूसरै को बुझावण लाग्या फेर ओ रग कया लागै जको अब लागर्‌यो है, आपणी सस्कृति नयै पुराणै री थोपतो मेळ है, भारत जद् ही भारत है, लारली नै सावत राखाला—जद् ही आपा जीवता रैस्या। आ कहन वै लारला दीया नै ओजू जगाया।

अबै म्हे च्यारू कूटा लगस सही करदी, फेर बी दरसाव मन भरन खूब देख्यो। च्यारू कूटा जको दीया रो नजारो हो बो भोत ही सातरो हो, हियै म कोड गहरो उठै, टाबरां रा पटाका, फुलझडिया नै इण रग नै और ही बढावो देवै हा। विजय भइयै गुवाड मे आपरै आसै पासै रा टाबर भेळा कर राख्या हा, बो पटाका मे लागर्‌यो हो। हर काम ऊमर सारू होवै है।

इत्तै म मा हेलो मार्‌यो—आओ जीमल्यो।

—म्हे तो अडीकै ही हा।

मा मगळो मामान लयन चोक मे आगी। पापा बोल्या—आज तो आपा पुराणै तरीकै स्यू जीमस्या।

पापा ही नीचै बैठन जीमता। कद मेज पर बैठ्या तो कवता

क्यूं फांसी पर लटकायो हो ?

मा सगळा सारू दरी बिछादी । मा सदा ही देसी चीज बणावती— सीरो, सब्जी, पटोळिया, रोटी ।

पापा नैं पटोळिया रो भोत कोड हो । मनैं सीरो आछो लागतो, भइयै नैं भी सीरो आछो लागतो । पण पापा नैं मा हरी सब्जी घणी खवावती ।

म्हे कदे-कदे सगळा भेळा होयन जीम्या करा । आज राधा कोनी ही, बा आपरै घरै गई ही । सगळो काम मा नै ही करणो पड्यो ।

— सीरो किसोक बण्यो, मा पूछ्यो ।

— तेरै हाथ री चीज कदे माडी बणी ही कोनी, पापा कयो ।

मा फेर पूछ्यो—पटोळिया ।

म्हू कयो— पटोळिया तो भोत सुवाद है ।

भइयै कयो—सब्जी आछी कोनी, मा ।

—अरे, आ तेरै पापा री है ।

—ओ घास-फूस मेरै खातर होवै है, भाई, पापा कयो ।

पापा नैं सब्जी ज्यादा खावणी पड़ती, बानैं डाक्टर बताई ही के पालक री सब्जी घणी खावता ।

आनदजी भी साथ देवै हा, पण वै बोलता कोनी, वै भोत सरमाळु हा ।

मा बां सारू कैयती भी—स्वराज ! कवर साहब, सबी भोत करै, बानैं तू म्हारा जिमा दिया कर ।

— सबी तो करता ही होसी, पण बारो सुभाव ही है ।

—थैं पीसा खापरण द्यो, म्हू थारो मकान ही म्हारो बणा देस्यू ।

दूजो दिन रामरमी रो हो, शहर रा भोत लोग पापा स्यूं मिलण सारू आया । दिन छिपै रै आसै-पासै पापा आपरै लोगां स्यूं मिलण चल्या गया ।

पण दूजैं दिन एक तार स्यूं म्हारै झटको लाग्यो । म्हारी सासू चालती रयी । म्हू तो रोयी कोनी, म्हानैं बेरो ही कोनी हो, पण आनदजी भोत रोया, बानैं थमाणैं में म्हू रोवणो भूलगी । म्हानैं रोवणो जद आयो जद मा कयो— तनैं साथैं जावणो पड़सी ।

म्हारै सारू जीप त्यार होगी । मा आनदजी नैं दो हजार रिपिया ल्यान दिया, कै कोई काम पड ज्यावै ।

म्हू मन मे करी—अठै डग रो डाक्धर नो, वैद नो, इया ही गोळी गुटका देंवता फिरै, बानै वेरो काई ?

—बठै ले आवता तो ठीक रैंवतो, म्हू क्यो।

—म्हानै काई पतो हो, आ होवेंली, आ तो सोची कोनी ही, बुखार तो घणी वार चढ ज्यावती।

—कोई बीमारी ही इसी ही जकै रो थानै वेरी ही कोनी लाग्यो।

—बीया तो अै माडा होवण लागग्या हा, म्हे जाण्यो, बुडापो है। रोटी भी कोनी भावती, डील मे करण-करण होवती ही रैंवती।

—खैर, बानै जावणो हो, चल्या गया, आपणो इत्तो ही सँस्कार हो।

मोकाण आळा दिन मे आवता, मोकाण आळा नै चाय प्यावणी पडती, बारै आळा नै रोटी भी खुवावणती पडती, जद् लुगाया मोकाण साल आवती, म्हानै रोवणो पडतो। रोवणै मे म्हू अर जेठाणी, पडौस री म्हारै ही भाया मे म्हारी एक द्योराणी अर सासू ही, जकी भाजन आवती। चाय करणै री ड्यूटी मानै सभाळणी पडी। रोटी जिठाणी बणावती।

म्हारै घरे डागरा री पूरी रणक ही। एक भैंस दूध देवै ही, दो पाडया ही, एक पाडी पाच मीना पाछै ब्यावण आळी ही। एक पाडकी छोटी ही। एक गाय जकी पाव, आधसेर दूध देंवती। बा चाटै पर दूध देंवती। एक बच्छो हो, एक टोगडती ही। म्हू क्यो—ओ काई, थारै तो आ डागरा को मोत खरचो है।

जिठाणी क्यो—ओ कजियो तो है, पण जमीदार रै डागर धन है। आपणी भैंस अबार पाच हजार री है। रोज रो सोळा किला दूध है। धाप'र टाबर दूध पी लेवै मी खा लेवै, चाय पी लेवै। ओ घीणो है जीरयू इसा बटाउ आपा पोसावा हा, पतो ही कोनी लागै।

वात साची ही, चाय रो पतीलो तो चढ्यो ही रैंवतो, दूध आळै नै दूध, चाय आळै नै चाय। सगळा नै आ भैंस ही धपा देंवती।

जिठाणी जद् दूध काडती, म्हू सारो देवण लागगी। म्हू पाडकी नै पकड लेंवती, खूटै रै बाध देंवती। जिठाणी दूध काड लेंवती। जिठाणी दूध दूवता ही, आपरी चाय बणावती, कड्डी बरगी चाय, मनै एक कप देंवती। बी चाय स्यू जीसोरो हो ज्यावतो।

ज्यू-ज्यू म्हू जिठाणी रै नेड़ै गई, जिठाणी रो हिवड़ै रै रूप सामैं आवण लागग्यो। बीरो काळजो काच जेडो साफ सुथरो, कठै ही काळस कोनी। बा तो आ ही कैंवती—थारो डील भोत अमीर है, म्हारो तो को कोनी बीगड़ै, थे काम मत करो पण मनैं तो काम मे जी लागण लागग्यो।

जिठाणी दिनउगे स्यू पैली ही उठती, बठै तो कोई घड़ी कोनी ही, म्हू घड़ी जरूर राखती, पण अठै तो टेम ही रोळदट्ट होग्यो जिठाणी रो टेम हो—एक तारो उठया करतो अगूण नैं, सगळा ऊ मोटो, बो तारो उगता बीनैं जिठाणी मोटो झाझरको कैंवती। डागरा नै नीरणो, चाकी पीसणो, बिलोवणो करणो। भोत धधा हा, पण म्हू भी सूरज उगणै स्यू पैली उठ ज्यावती, म्हारो काम तो उठता ही चाय बणावणो हो।

आनद जी अर जेठजी—बारै ही सोवता। दिन मे बेल ही कोनी मिलती। रात नै जिठाणी बाता आवती—म्हारी सासू आछी भोत ही, कदे ही बण आपरै नाडियै रै चाबी कोनी राखी। सौक्यू म्हारै सारू खुली पड्यो रैवतो। कदे ही बा मनैं तुकारो कोनी दियो। होठ रो भी चोट कोनी मारी, फटकारो कोनी दियो। कैंवती—बेटी म्हारो काई है सौक्यू थारो ही है। बैं कदे ही माचो पर कोनी सोया। कमजोर हा, पण काम करता ही रैंवता। डील मे घोबा चालता ही रैंवता, पण कदे ही सारो कोनी लैंवता।

एक दिन आनद जी नैं पढाणै री बात चाली—म्हारै सुसरै जी री बटी नियत ही रै घर म एक तो पढै। सगळी ही पढाई बारै हुई पण सदा ही फस्ट फस्ट आया। खरचो तो लाग्यो पण खरचै रो हक आग्यो, मीं तो थारो अर म्हारो भाई मेळ। थानैं भाई बताऊ थारो ब्याव होया पछै म्हारी इत्ती इज्जत बदी है रे पूछो मत, आसैं-पासैं रा मोटा मोटा मिनख म्हारै अठै धोक देवैं है, ओ पढाई रो ही पुन परताप है। म्हू देवर नैं कऊ—अरे देवर, तू म्हानैं भी कोठी दिखा, म्हू तो सहर ही कोनी देख्यो, मेरो जो मोटर म चढ़णै सारू करै, जिठाणी हसन बोली।

—अबार म्हारै साथै चालियो, म्हू बोली।

—बठै बेल है, जिठाणी कहया, भैंस धुहारवी है, म्हू भैंस रै कारणै पीर कोनी जा सकू, म्हारो बाबो बीमार है, रोज समचार आवै पण भैंस मेरै टाळ दूध बीनैं दवै कोनी जिठाणी रै दो टाबर हा—एक छोरो

छोरी । छोरै रो नाम गोदियो, मोटो ताजो सूमसाम, छोरी रो नाम चम्पा । टाबर ज्यू-ज्यू गावा कोनी पैरता, इया ही रेत में लिटता रैवता । बडे-बडे जिठाणी नैं औसाण आवतो तो नुवा देवती, पण टाबर बिना न्हाये-धोये सूमसाम रैवता, पण बारो डोळ बिगडेडो रैवतो । नाम रैं बारैं म्हू कैवती— ओ काईं नाम मडायो ईंरो गोदियो ।

—मडावैं कुण हो, डील रो भारी हो तो इनैं गोदियो कैवण लागग्या ।

—पण छोरी रो नाम फूटरो है—चम्पा ।

—ओ ईंरो भूआ आछो हो, बा मडागी ।

दिन मे लुगाया । मौकाण आवती तो सगळी ही म्हारी सासू री बडाई करती, की तो मर्‌या फेर लोग मरेडैंन सराया ही करैं है, बी सासू आछी ही ।

दुख ज्यू-ज्यू दिन नीकळया मट्‌ठो पडण लागग्यो, चोट लागता ही पीड घणी करै, फेर तो सैंणैं पडज्या । रीत कठै ही टूटी कोनी, न बैं तोडणो चावैं हा, न तोडणैं री हिम्मत ही । तीजै दिन आनन्दजी सासू री अस्थिया लेयन गगाजी गया । लुगाया सासू नैं बूढी करार दे दी, घणी बूढी तो कोनी ही, पण जुवान भी कोनी । बेटा, पोता सगळा ही ता हा, फेर रोवणो क्या रो । दिन मे लुगाया हरजस सरू कर दिया, रात नैं भी कर दिया, अबै तो रोवणो मट्‌ठो पडग्यो, भजन भाव घणा बदग्या ।

म्हू एक दिन जिठाणी नैं बोली— म्हू तो इण धोती अर सिलवार कमीज मे अपरोगी लागू, म्हू नी घाघरो ओढणो पैरल्यू ।

जिठाणी म्हारी बात मान ली । वण एकर पैरेडा गाबा म्हानैं काडन दिया । म्हू बोरियो बाध्यो, कावळी पैरी, घाघरो पैर्‌यो । जिठाणी देखता ही मुथकारो गेर्‌यो—फूटरी तो फूटरी होवैं, चाये बीनैं की पैरादयो ।

म्हू बोली, ओ पैराण ही आपणो है, लुगाई ईंमैं जिसी फूटरी लागैं, क्या मेइ कोनी लागैं । आपा दूजो पैराण तो देखा-देखी ले आज्यर ।

दस दिन निकळया ग्यारवें दिन तो धटाऊ भेळा होवण लागग्या, काम की बध्यो, सगळा परिवार घरे आग्या, काम मे पूरो सारो मिल्यो, बारवों दिन भी आयो, म्हू मा, पापा नैं अडीकैं ही । पापा जाण-बूझन कोनी आया । मा अर भइयैं नैं आवणो ही हो ।

आरो जी लागग्यो।

मा बोली—बेटा, म्हारा तो सैं भात रा दिन देखेड़ा है, स्वराज स्यूं काई छानो हो, टाबर तो ही, पण भूलें थोडी ही, वै दिन तो भगवान् कीनै ही न देवै, फेर अठै आपणै मिनखा रो जाड़ है, म्हू कोठी मे जरूर रऊ हूं, पण बठै आपणा कुण है, अै तो लोग आपणा आवै जावै है, जी लागे ज्यावै, कदे-कदे कोई नी होवै तो उजाड़ गो लागै, जी लागै ही कोनी।

मा अर जिठाणी घणी देर बात करी। जिठाणी अर मा दोना रो ही जी सोरो होग्यो।

मा नै जाणो ही हो, मा चली गई। म्हू अर आनन्दजी दो दिनां पाछै गया।

16

म्हू कोठी मे गई जाणै एक जुग बीतग्यो हो। दिन तो पूरा बारा-तेरा ही बारै रही, पण लाग्या जाणै बारा मीना पाछै आई। पापा अवार दौरै स्यू पूठा आया ही हा, सरकारी गाडी बारै खडी ही। म्हू आय'र मा रै पगा लागी, मा म्हानै पैली मिली, फेर पापा कनै गई, पगा लागी, पण पापा कनै दो आदमी बैठ्या हा, जका मे एक स्वामी जी हा, पापा खाणो खावण लागर्‌या हा। म्हू पगा लागी, पापा सिर पर हाथ फेर्‌यो। फेर म्हू स्वामीजी रै पगा लागी, स्वामीजी भी सिर पर हाथ फेर्‌यो। पापा स्यू पैली ही स्वामी जी बोल्या—'विरमानन्द, तू स्वराज रो ब्याव कर्‌यो, म्हानै कोनी बुलायो।

पापा बोल्या—म्हू खुद ही कोनी हो, बुलावतो किनै। आपणै अठै काळ पड्यो हो, कलकत्तै गयो हो पीसा ल्यावण नै।

स्वामी जी बोल्या—मोत आछो काम करघो, म्हू अखवारा मे पढी ही, आदर्श ब्याव होयो, मोत आछो होयो, जनता जे एहड़ो अनुकरण करै तो

लोग न्याल हो ज्यावै, पण आजादी रै बाद आदर्श आणै मरणासन होर्‌यो है, लोग दिखावै पर धणा उतरया है, पण कारण भी साफ है। गलत कमाई गलत खरचो।

पापा कीं कोनी बोल्या, चुळू करण लागर्‌या हा। स्वामी जी कयो—पढाई लिखाई भी वदी है, पण ज्यू-ज्यू लोग पढै है सुरळो भग होया वगै है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, रिश्वत वदती जारी है।

पापा बैठ्या हा, थोडा आडा होग्या, फेर बारो कीं दिमाग जम्यो। बोल्या—स्वामी जी, क्या पाधारणो होयो, अबार तो थे बोळा मोडा दरसण दियो।

स्वामीजी कयो—म्हू तनै कागज लिख्यो हो, बा ही बात। म्हारै कॅलिज होवणो चाहिजै।

—बात करी ही, और बात करस्या। पण थारै साथै ओ मोटयार कुण है ?

—हा, आ सुणो, स्वामीजी बोल्या, ओ है थाणैदार, मोसल होयोडो। आरी कहाणी सुणो, बेहद अजीब, आज रै जमानै री जीवती जागती तसवीर। ओ थाणैदार—बहद ईमानदार। न खावै, न खावण द। नतीजो काई—अफसर नाराज, नीचै रा अहलकार नाराज। आरै ईलाकै में अमल री एक सैठो व्यापारी। जीप स्यू अमल भेजै। अण भाई, बीनै पकड लियो —काई मण अमल। वो व्यापारी बोल्यो—दस-बीस हजार लेल्यो, म्हानै छोडो, अण छोड्यो कोनी। जीप थाणै में चली गई, नीचै रा अहलकार रपट बणाई बीरै बोस दाई मण री जगा तीन मण अमल लिख दियो। जाण-बूझ'र एहडी रपट बणाई के ओ भाई फसग्यो, ऊपर आळा अफसर नाराज हा ही, ई भाई नै सस्पैंड कर दियो। अण भाई म्हारो नाम सुण्यो, म्हू ईनै तेरै कनै ल्यायो हू, ईनै सकट स्यू बचाणो है, जे ईमानदारी अया मरसी तो फेर ईमानदार रैसी कठै।

पापा फेर भी इत्ती बात करी—देखस्यां, म्हू आई० जी० पी० स्यू बात करस्यू। पापा नै स्वामीजी री बात पर कोई टिप्पणी कोनी करी, देस मे ईमानदारी री बेकदरी पर अफसोस कोनी जतायो, ईमानदारी री सजा पर बारै काळजै में दरद कोनी उठयो, रीस कोनी आई।

पापा फेर बी मोटयार कानी देख्यो, फेर बोल्या—भाई, कानून आंधो है, ईंरै आंख कोनी, जदै ईंरै आंख होसी, जकै दिन अन्याय मिट ज्यासी, पण न तो कानून रै आंख होवै, न अन्याय मिटै। कानून री निगा में तू तीन मण अमल पकड्यो, आधो मण अमल अण उडवायो, अबै ओ वर्चे क्या, ओ ईमानदार है, ईंरो कोई सबूत कोनी, ओ बेईमान है, ईंरो सबूत है। अद् तनै बेरो हो के लोग म्हारै सेरै लागर्या है, तनै सावळचेत रैवणो चाहिजै हो, सावळचेत न रैवणै री सजा भुगतणी पडसी।

फेर पापा स्वामीजीकानी मुड्या—स्वामी जी, आज देस में ईमानदारी अर बेईमानी री लडाई कोनी। राज बेईमान है, आ बात म्हे कया करता, अबै लोग म्हानै बेईमान बतावै। फेर ओ कोई सरकार आ ज्यावो, म्हे फेर बानै बेईमानी म्हे बतावण लागस्या। इण बात न लेयन चाला तो राज एक दिन कोनी चालै। एक साफ सुथरो राज तो 'यूटोपिया' है, पण ओ 'यूटोपिया' भी जीवतो रैवणो चाहिजै, नी तो आदमी आगै कानी बदै। म्हे लोग भी आछै राज री कल्पना लेयन आगै चाला, जनता सुखी रवै, आखै जगत रो कल्याण हो, आ भावना लेयन चाला, पण इण सारू भी कई खोटा काम करणा पडै। आप ऊपर आयन देखो तो आ बेईमानी, ईमानदारी टाबरा आळी सी बात लागै, अठै तो शुद्ध 'पावर' री लडाई है। राज कीरै हाथ में रवै, आ लडाई है। म्हारा शर्मा जी यानी मुख्य मंत्री जी आजकाल म्हारै साथै जूतणै री चेप्टा में है। बानै मोटी कुरसी म्हे दिरायी, आप जाणो हो, पण बो आ सोचै, आज इण मसीन रै जुग में जद् गाडी बिना बळद, ऊंट चाल सकै तो फेर राज चलाणै म की दूजै मिनख रो सारो क्यूं। बो म्हारै मिनखां नै फाटण लागग्यो, आप कानी लेवण लागग्यो, बो एक ही बात कवै है—ईं विरमानन्द कनै काई पड्यो है, ओ तो अडवो है, न तो खावै न खावण दे, राज भी करो अर भूख मरो, आ कुणसी थ्योरी है। चकाचक उडावणी है तो म्हारै साथै आओ, लोग तो छाया में माचो ढाळै, म्हारै कानी क्यूं रवै, म्हे थारै कॉलेज सारू बात करी, मूडै ऊ बोल्यो कोनी, बीरी नियत ही कोनी कॉलेज खोलणै री, आप तो एक ही काम करो—बीरी कोठी रै आगै भूख हड़ताल करन बैठ ज्याओ, फेर म्हे जाणा अर म्हे जाणा।

स्वामीजी मुख्य मंत्री रै कोठी रै आगै भूख हड़ताल पर बैठग्या।

स्वामीजी साहू मुख्य मंत्री री कोठी रै आगै एक तम्बू तणग्यो। आछा पथरणा बिछग्या, तकिया लागग्या, स्वामी जी बठै जम'र बैठग्या। अखबारा मे स्वामी जी री फोटू छपी, भूख हड़ताल रो कारण छप्यो। मुख्य मंत्री पर क्षेत्रवाद रो लाछण लाग्यो। स्वामी जी कयो—म्हारो ओ आमरण अनशन है, कॉलेज खुलसी जद ही अनशन टूटसी।

दूजै दिन फेर खबर छपी जकै मे मुख्य मंत्री आपरो वक्तव्य दियो। मुख्य मंत्री आपरै हलकै मे कॉलेज खुलणै रो कारण बतायो, स्वामी जी री बात नै काटी। मुख्य मंत्री स्वामी जी पर हठधरमी रो लाछन लगायो।

तीजै दिन फेर खबर छपी—स्वामी जी आपरी कॉलेज री माग रो कारण बतायो, मुख्य मंत्री पर घणा लाछण लगाया, वा अठै तक कहदी रे इसो मुख्य मंत्री राज रै लायक कोनी, जको आपरै ही हलकै मे घणकरो पीसो खपावै, मुख्य मंत्री आखै राज रो मुख्य मंत्री होवै है, एक हलकै रो नी।

कई अखबारा मे स्वामी जी नै एक लूठो समाज सेवी बनायो, बारी पूरी जोड़बाण छापी, वारा फोटू छाप्या। इनै स्वामी जी रो नाम चिमकण लाग्यो तो बीनै बारी हालत पतली पड़न लागी। वै नीबू रै रस नै छोडन री कोनी लेवै। बारो भार घटण लागग्यो। स्वामी जी पर एक डाक्टर री ड्यूटी लागगी, वो हरदम स्वामी जी कनै रहवै। पुलिस तो तैनात ही। पत्रकारा री भीड़ लागी रहवै।

चौथे दिन मुख्य मंत्री जी पापा कनै आया। म पापा पर लाछण लगायो' मे ये म्हानै बदनाम करणै साहू आ काम करायो है। पापा अर मुख्य मंत्री तू तू-मैं मैं भी हुई। फेर मुख्य मंत्री जी स्वामी जी कनै भी गया।

जकै दिन अखबार इण हड़ताल न मेयन रख्या पड़्या हा। हर आदमी रा दोस्त अर दुसमण तो होवै ही, फेर जित्तो मोटो आदमी होवै बीरा बित्ता ही मोटा दुसमण। मुख्य मंत्री रा जठै दोस्त सवड़ा हा तो दुसमण भी मैठा हा। अबै मुख्य मंत्री री बदनामी रा चोखा बहाना दुसमणा नै मिलण लागग्या—मुख्य मंत्री एक भ्रष्टाचारी आदमी है, अण लाखू रिपिया रो धन हड़प कर लियो, ओ क्षेत्रवादी आदमी है। अण दूजै इलाका री कीमत माथै आपरै क्षेत्र रो निरमाण करयो अर करण लागर्यो है। ओ आपरै क्षेत्र

लागै है। हर आदमी माल मोवण नै जगा होवती, मोकळ नै विस्तर हांसता, कई आदमी तो इता घमंड होग्या हा, बानै माडी ठेगण पूगावण जावतो। मा एक ही बात कैवती—'परमात्मा आपानै आरै भाग माफ देवै है, आपानै भी मिल ज्यावै है।' मोग रोवता आदमी, हसता जावता। अबै पापा रो काम करावणो रो काम भी हलको पड़ग्यो। जको काम पैली धनसिंह जी करावता, बो काम मा गाम लियो, धनसिंह जी रैवता पण काम धणकरो मा करावण लागगी।

अबार एक बात आप-आप दीखण लागगी ही के प्रशासन राज पर हावी होवण लागग्यो हो। सारा 'पावर' तो प्रशासन रै हाथ में, सरकार करै तो काई। इयां लागै हो जाणै राज रै हाथ में तो फोन हो, कोई फोन री बात सुणै तो बा भला, नीं सुणै तो नो सुणै सरकार बीरो करै काई राज री नौकर री जड़ पताळ में।

एकर रेखा पापा कनै आई, बोली—'काई करू, म्हारो डाइरेक्टर कयो कोनी मानै।' पापा रो दबदबो तगड़ो। पापा फोन उठायो, डाइरेक्टर स्यूं बात करी—'डाइरेक्टर, म्हूं बीरमानन्द, बोलूं हूं।'

पापा नै रीस आवती जद् बै मुकारै पर आ ज्यावता, म आगलै रै 'जी' लगावता न आपरै।

पापा कयो—'सुण, तनै बैरो है, ओ राज कीरो है, जनता रो, जनता ई राज री मालिक है, 'तू राज रो नौकर है। जे नौकर मालिक रो काम नीं करै तो बी नौकर नै रैवणै रो कोई हक नी। मेरै कनै रेखा बैठी है, बा सिकायत करै है के तू बीरो हुकम मान्यो कोनी, तेरी इती औकात।'

डाइरेक्टर महया स्यूं पैली पापा स्यूं मिलण आयो, रेखा फेर कदेई सिकायत कोनी करी।

पापा कया करता, इण व्यवस्था में जनता असा ही रोवती कूकती रैवसी, अै नौकर जनता पर राज करसी, मनीस्टर, विधायका कनै काई है। बै आ भी कैवता—आरो तो डोळ भी कोनी। आज जनता रा प्रतिनिधि ही बेडोळा है, पच स्यूं लेयन केन्द्र रै मन्त्री ताई पीसै रो राज है, कठैई इ व्यवस्था में खोट है।

पापा तो फेर आ मोटोडा अफसरा रा कान खीच देवता। एकर एक

सैक्रेट्री पापा री बात कोनी मानी। बा बोनै 'सरपलस' कर दियो, फेर वण छ मीना ताई चक्कर काटतो रयो।

आ दिना राज रै नोकरा री हडताल हुई, हडताल हुई तो एहडी हुई के आखे राज रो कामकाज ठप्प। स्कूल बन्द, कचेडया बन्द, दफ्तर बन्द। दफ्तरा, स्कूला, कचेडया मे कबूतर बोलै। चपडासी स्यू लयन बाबूआ ताई कोई काम पर कोनी। अफसर बैठ्या माखी उडावै।

असेम्बली चालै ही, पापा असेम्बली मे भोत जोरदार भाषण दियो। पापा कयो—आज राज रो नोकर हडताल पर है, वो तनखा बधाणो चावै है, बो भूखो है। वानै बेरो ही कोनी, भूख काई हुवै है। भूख देखणी है तो गावां मे चालो। लोगा कनै बावण नै पूरी-सूरी जमीन कोनी, जमीन है बठै दाणा कोनी। झाझरकै उठै, आधी रात रा सोवै। भूखा उठै, भूखा सोवै। बारै पैरणनै कपडा कोनी, ओढणनै बिछावणा कोनी, टाबर नागा रवै, लुगाया मर्‌या देदे आपरी लाज ढकै। गरमी मे गरमी मरै, सर्दी मे सर्दी, बिरखा बारै डील पर बरसती रवै, न्हाणै-धोणै रो तो बठै जिकर ही कोनी। नाज नै पाणी रै सगा-लगा खावै। कोई दुकानदार बानै उधारो कोनी दे। सह्या नै कमायन नी ल्यावो तो भूखा सोवो। खेतीखड री आ हालत है कै पाच साला मे एक साल जमानै रो होवै, कदे बिरखा कोनी, तो कदे घणी बिरखा, कद ओळा पड ज्यावै तो कदे पवन चाल ज्यावै, आखी जिंदगी भूख अर करजै मे पिसीजती रवै, बठै है भूख। राज रो नोकर भूख री बात करै जका रा टाबर आछो पैरै, आछो खावै, स्कूला मे पढै, नोकर अर नोकर री लुगाया पखा रै नीचै सोवै, बारी तनखा पर न ओळा पडे, पवन न चालै। आपा जकी व्यवस्था दी है, ईं रै माय पूजी पूजीपति कानी चालण लागरी है, गरीब घणा गरीब होवण लागर्‌यो है। आपणा बणायेडा कानून नोकर री आलमारी मे सडण लागर्‌या है, आपणा हुकम नोकर री फाइल रा मजाक बणर्‌या है, आपणो समाजवाद नोकर री ठोकर मे ग्डन लागर्‌यो है। मनै खुद नै ईं राज मे रंवता सरम आवै है, की जात रै सगठन होवै दंगो मतलब सो तो कोनी के बीग वै नाजायज फायदो उठावै। आज नीचै स्यू लयन ऊपर ताई आ नोकरा रिस्वत रो तवाही मचा राखी है, आनै न डर है न आ पर रोब। आठै ताई कै आपा भी आरै साथै मिल दोनू हाथा स्यू खावण

लागर्‌या हा, आ जनता थानै म्हानै बकसैली नी।

पापा रो भासण अखबारा मे छप्या, ई भासण री भोत चरचा हुई। सगळा ही इण साची बात नै सराही, पण नौकरा री आलोचना पापा रै महगी पडी। नौकर रोज जलूस तो निकालता ही, मुख्य-मन्त्री रो पुतळो जळावता, पण दूजै दिन म्हारी कोठी रै आगै नोकरा प्ररदसण करयो, पापा रो पुतळो जळायो। म्हानै भोत रीस आई, पण जोर काई ?

कोठी रै आगै पुलिस रो इन्तजाम हो, कई देर ताई पापा रो नाम लेयन—'मुरदाबाद' रा नारा लगाया हाय हाय करी, पण आपता होयन आपी चल्या गया।

मा बोली— आपा किता आरै दुख म पडा हा, किसो आरो भलो करा हा, फळ ओ मिल्यो है।'

पापा हसन बोल्या—'ओ जनतन्त्र है देवी, अठै तो सगळा ही रग देखणा पडै।' तू म्हारै सागै कोनी चालै। सागै चालै तो पतो लागै, लोग म्हानै काळा झडा दिखावै, म्हारै ऊपर भाटा फेंकै, एकर तो मनै पाटडै नीचै बडन ज्यान बचावणी पडी, एकर एक मीटिंग म म्हानै बीच मे पुलिस री गाडी मे बैठन भाजणो पडयो।

हूँ, मा रो सास नीचै रो नीचै अर ऊपर रो ऊपर रैग्यो, म्हारो जी तो भोत ही खराब हुया।

मा बोली – इसी बात है तो बाळो फूको इण जजाळ नै, म्हू तो भाजती भाजती आखती होगी, म्हू तो एकर गई तो दरवाजा बण्या हा, फूल माला घली ही, नोटा री माळा डली ही।

—हा, तरी बात भी साची है, पण कठै-कठै जूता री माला भी घलैया है, एक जगा तो म्हू गयो तो राम जाणै लोग कठैऊ खूसडा भेळा करन ल्याया हा के विरखा होवण लागी तो म्हानै गाडी पूठी मोडणी पडी, रस्तो बदळयो जद् नाको लाग्या देवी, ओ राज है, राज म सगळा धधा करणा पडै। पण अबै म्हू भी आखतो होग्यो हू, काम री कदर कोनी, हथकडा है, जोडतोड है, तोर-तरीका है, राज मे अबै कुरसी री लडाई है, खीचताण है, उठाव-पटक है, जको मजोरो है, वो रैसी, बाकी जासी।

मुख्यमत्री रा नया-नया हुक्म निकळै, पण नौकरा री हडताल चालू।

मुख्य-मंत्री एक दिन रेडियो पर भासण दियो जकै मे राज री माली हालत मोत माड़ी बताई, फेर बतायो के नौकरा री मागा स्यू राज रो करोड़ रिपिया रो घाटो जको राज रै खजानै री सामरथ स्यू बारै। इण वास्तै नौकरा री मोच सही मारग पर चालणी चाहिजै बानै हड़ताळ तोड देणी चाहिजै। फिर मुख्य-मन्त्रीजी गरजन कयो जे नौकर हड़ताल चलू राखी तो राज बुरो पेस आसी --बारी नौकरी खतम करदी जासी। मुख्य-मन्त्री एक तारीख दीनी के बी तारीख नै जका नौकर नौकरी पर हाजिर हो ज्यासी, बारी नौकरी सही, बाकी आपरी नौकरी खतम समझो। मुख्य-मन्त्री रो भासण इसो लखावै हो जाणै नौकरा पर असर पड़सी क्यूके राज मे भूख घणी, नौकर री तनखा वदणै स्यू भूख बदसी, नौकरा नै भी रहम आसी, वै आपरी मागा पूठी ले लेसी।

म्हू पापा स्यू बात करी तो पापा नै हसी आगी, वा बात टाळदी।

मुख्य-मन्त्री री घरपेजेड़ी तारीख आई ही, पण एक भी राज रो नौकर हाजर कोनी होयो, म्हू मन मे सोची—अबै देस मे राज नाम री चीज कोनी। राज रो मतलब की मिनख री नाम कोनी, राज रो अरथ है राज री हुक्म नी तो राज ही नी। लडाई चाली आ पूरी इक्कीस दिन, राज रो पूरो काम ठप्प। मन्त्री लोग भी घरे बैठ्या माखी मारै। न कोई काम न काज। इक्कीसवें दिन मन्त्री लोगा नै मुख्य-मन्त्री बुलायो, बातचीत करी, फेर नौकरा रै नेतावा नै बुलाया, बातचीत चालू हुई। पण फेर बातचीत फैल। अबै तो राज आपरै रग मे आयो, गिरफ्तारया चालू हुई, घणकरा नेतावा नै जेला मे दे दिया, कई नौकरा नै जका थोडा दिना रा असथाई हा बानै नौकरी स्यू काड दिया, पण जलूस और तेज होग्या, भासण और तीखा होग्या, कठै-कठै हिंसा भड़कण लागगी, म्हू समझी—अबै राज झुकैलो नी, पूरो एक मीनो होग्यो, फेर बाता चालू हुई अर इण ही दिन सरकार ढीली पड़गी, अण हाथ पादरा कर दिया, घणकरी मागा मजूर होगी, म्हू मन मे करी—ओ क्यारो राज। आज एक मीनै ताई जनता दुखी हुई—छोरा भणीज्या कोनी, दफ्तरा मे काम होयो कोनी, बिजळी, पाणी सगळो सकट ही सकट रह्यो, आ बात तो अकै दिन ही हो ज्यावती, जकै दिन आ माग राखी ही, इत्तो नाटक क्यू।

पापा बतायो—तू क्यू कोनी समझी, म्हू बताऊ।

—काई ?

—मुख्य-मन्त्री बदनाम होयो, ईंरी कुरसी हालो।

—पापा, लोग थारो नाम लेवें के थे हड़ताल कराई।

—म्हू तो थारें खिलाफ बोल्यो।

—आ भी राजनीति ही।

—आ म्हारें खिलाफ परदरसण करयो।

—आ भी राजनीति ही।

पापा हसण लागग्या, बोल्या—अबैं बेटो, राजनीति समझण लागगी। तेरो मतलब ओ है के म्हू आ नोकरा नैं बहकाया, फेर वा हड़ताल करदी, फेर म्हू भासण दे दिया, केन्द्र म्हारें ऊपर वहम न करे, फेर वा म्हारें खिलाफ नारा लगा दिया, वहम सफा दूर होग्यो। आ ही तो बात कैणो चावै है तू।

—पापा, म्हू कोनी कऊ, ओ अखबार कवै है।

म्हू अखबार ल्या दियो, पापा सो जाणे हा, पापा बोल्या—हा बेटा! आ राजनीति है। म्हू इत्ती ओछी हरकत नी करला, मुख्य मन्त्री आ रीम म्हारें ऊपर काढ़ै है वण केन्द्र मे म्हारो नाम भी लियो है, अखबारा मे बदनाम भी करै है, वण म्हारै साथै लड़ाई चालू करदी।

पापा बैठ्या हा, इत्तैं मे चपरासी आयन कह्यो— कई गाव रा लोग आप स्यू मिलणो चावै है।

पापा 'हा' करदी।

लोग एक ही गाव रा हा, दस पन्दरा आदमी तो हा ही।

पापा उठन वारी आवभगत करी। लोग नीचै दरी पर बैठग्या, पापा भी दरी पर बैठग्या।

—बोलो भई, पापा पूछ्यो।

बा आपरो नाम ठाम बताओ, वो मे एक सरपच हो, और आदमो हा जका मे दो-च्यार पच हा, बाकी गाव रा मुखिया हा।

वैं बोल्या— सा, म्हारै कानी एक नहर रो खाळियो आरयो है। वो मे पैंली तो म्हारैं गाव रो नाम हो, पण अबैं वो मिटग्यो। म्हे लोगा पूछताछ

करी तो पतो लाग्यो कै एम. एल ए. री महरबानी इसी हुई के बै आपरै एक लवेज मे एक गाव हो वीरै कानी बो खाळियो मुडग्यो अर म्हानै छोडग्यो। एम० एल० ए० साहब कनै पूच्या तो वा बतायो के एक्स० ई० एन० सा'ब ओ काम कर्‌यो है, म्हारो कसूर कोनी। म्हे बी सा'ब कनै पूच्या तो बा कयो के बीस हजार रिपिया करद्यो तो म्हू ओ काम करद्‌यू, नी तो एड करो। म्हे लोग बीस हजार कर देवता, क्यूके आजकलै मगळो काम लेवा देवी ऊ चालै है, पण गाव मे है पारटीवाजी, पीसो घणै कोनी जद् थारै कनै आपा के ये ओ काम कराओ।

पापा बोल्या—थे लोग अरजी लिखन ल्याया हो।

—हा लिखन ल्याया हा।

पापा बारी अरजी ले ली, 'बात करस्या' आ बात कहन बात खतम करदी।

पण गाव आळा रो जी सोरो कोनी हुयो। बा मे एक आदमी कयो—'भाई बतावा सा, आप दोरा नी होवो तो एक बात कवा, पैली म्हारै अठै एक पटवारी हो, अबै तो अहलकार भी घणा होग्या, घणी ही रिस्वत होगी।

फेर एक आदमी बोल्यो—ज्यू-ज्यू विकास होयो है, नौकर बद्‌या है, तो रिश्वत बदी है।

एक आदमी फेर कयो—पैली म्हे लोग ओहडै रो पाणी पीवता, अबै म्हारै अठै वाटर वर्क्स है, म्हे ओहडै ने खतम कर दियो, अबै वाटर वर्क्स मे कदे बिजली कोनी तो कदे तेल कोनी, पाणी रो इत्तरतै तोडो रवै।

दूजै बोल्यो—बिजली तो आगी। म्हे चिमनी, लालटेन राखणी छोड दी, अबै रोटी अधेरै मे खावा हा।

तीजो बोल्यो—म्हारै सासरै मे नहर है, बठै बै आपरै ओवरसीयर अर जिलेदारा री हाजरी मे खड्या रवै।

पापा कयो—विकास होसी बठै नौकर बदसी, नौकर बदसी बठै रिश्वत बदसी, गुलामी बदसी।

जद् सरपच कयो—सा, पैली आपा फक्त राजा रा गुलाम हा, अबै तो पाणी रा गुलाम, बिजळी रा गुलाम, नहर रा गुलाम, गुलामी चोगणी बदगी।

पापा बोल्या—गांधीजी एक बात कयी ही—मशीन मत ल्याओ, मशीन ल्याओला तो गुलामी ल्याओला।

फेर एक आदमी बोल्यो—म्हारै अठै स्कूल है, पण पढ़ाई कोनी। न मास्टर टेम सिर आवै अर न छोरा।

जद दूजै कयो—काई है पढ़ाई में आजकलै, नौकरी तो मिलै कोनी, चाहे बीस पढ़ल्यो।

—अरे पढ़ाई स्यूं मिनख तो बणै है, एक कयो।

—आजकलै पढ़ाई स्यूं मिनख बणै है, आ कण कहदी तनै पढाई स्यूं छोरो न घर रो रवै न घाट रो। वो तो जत्ता कुलछण होवै सै सीखै। बीनै पैरणनै चोखा गाबा चाहिजै, खावण नै चोखी रोटी चाहिजै। स्कूल में पढ़ाई कोनी, ट्यूशन कराओ, रिस्वत देओ, जद पास करै। बलारा तो यो बदळले है पण आव एक बीनै आवै कोनी। न बो हिसाब जाणै न बो पढ़णो। हिन्दी रो कागद कानी पढ़सकै।

एक आदमी और बोल्यो—म्हे लोगा मोत कोसिस करी के म्हारै अठै रो स्टाफ बदळ ज्यावै, स्यात् पढ़ाई ठीक हो ज्यावै, पण अफसर बोल्यो—काई खोट है बामे ?

—सा, वै पढ़ावै कोनी ?

—म्हूं थानै इसा आदमी दे देस्यूं, जकै पढावै भी कोनी, दारू पीयन गाव मे दुरळ मचावैला।

—तो आप बारो की कोनी कर सको।

—म्हूं काई करूं, अफसर कयो, कोई एम० एल० ए० रो आदमी, कोई मंत्री रो आदमी। एक सघ और बतायो, बा काम करण ही कोनी देवै।

फेर एक आदमी बोल्यो—अठै रोब कोनी, बठै राज कोनी, अै अहलकार तो सफा मुफत रो तनखा लेवै है। काम रा पीसा झाडै है। अहलकारा री आज मोटी-मोटी कोठियां बणरी है, कोई पूछण वाळो कोनी।

एक आदमी अठै तक कह दियो—रीस मत करिज्यो, ईं राज स्यूं वो राज ही चोखो हो, बठै न्याय तो हो, अबै तो एक बोसळ स्यूं मरजी आवै ज्यूं करल्यो। पीसै री पूजा है पीसै री, आज पीसो चाहिजै चाहे कित्ती कतल करद्यो, छूट ज्यावो।

अे वाता लोग रोज क्वै, कोई आमें नई बात कोनी ही, पण पापा भोत उदास हुग्या, बेहद उदास होग्या, इत्ता उदास वै पैली कोनी होवता, इसो लागै हो जाणै बारो हौसलो कमजोर पडण लागरयो हो। बा एक ही वात कहन लैरो छुडायो—गाधीजी कैवता, समाजवाद मे नौकरसाही बदसी, भ्रष्टाचार बदसी, रिस्वत घटसी। समाजवाद नैं काम रा करणा है तो पैतृक हक खतम करणो पडसी।

18

गाव स्यू समाचार आयो के दादी बीमार है, म्हू पूठो समाचार करायो रे बै अठै आ ज्यावै, पण दादी कोनी आई। म्हे मन मे सोची के कोई ताप सिरवा चढी होसी, गोळी गुटको ले लियो होसी, ठीक होगी होसी। आ बूढा आदमिया रै कोई मोटी बीमारी तो होवै कोनी, इया ही चालती बीमारया होवै है—पेट दूखण लाग ज्यावै, जुखाम लाग ज्यावै, ताप चढज्या, देसी दवाई कर लेवै, अजवाण री फाकी लेली, ताप री गोळी लेली, जुखाम नै तो की समझै कोनी, चीकणो खाणो छोड देवै, छाछ, खाटो कोनी लेवै, लूकी सूकी खावै, इत्तै मे ठीक हो ज्यावै।

पण फेर एक समाचार आयो के बूढळी तो माची झालली, तो म्हानै फिकर हुयो, म्हे एक गाडी भेजी, गाडी खाली आगी। दादी कुआयो—'चिन्ता मत करो, ठीक हो ज्याऊली, नी होऊली तो कोई बात नी, म्हारा काई अबै लाव जेवडा वणै है, म्हू तो अठै ही हाड नाखूली।' दादी कोनी आई। पण आदमी बतायो—'बूढळी कोनी आवै, बीया थारी सेवा करण आळा घणा है। बा तो एक ही बात क्वै है—'म्हू पराई धरती मे क्यू मरू, मरूली तो अठै ही मरूली।' बा पूरी जिद्दण है बा कोई नी आवै।

मा बोली—काई करा, बै तो कोनी आवै, म्हारो जावणो होवै. तेरै पापा नै एक मिनट री वेल कोनी। न भी जावण जा

म्हारै बालगोपाळ होवण आळो हो। सातवों महीनो लागण त्यार होग्यो हो।

मा नै बोल्हा फिकर होयो, पण मा नै माची पूछो तो मरणै री वेळ कोनी।

मा पापा नैं भी कयो पापा तो उदास होयर, फेर बोल्या— मा मरै कोनी, मोन पकड़ा राइ है। लफर तो वा ठेठ आयल पूठी आ गई है।

मा मन म करती– राजनीति री आ सांकळ तड़ही गळ मे घलो है बै नीरळै ही पानो, आज म्हारै साथ म्यू कांई नी पूछसी तो माग कांई कैसी, ऊमर भर कोनी जीवण देसी।

मा भात कृगी सावनी, आगै रो माथतो, पापा रो मजरियो और हो मो भाऊ तो अै कोई बात ही कोनी हो, लाग कांई कैसी ? आ बात तो मा कदे सोची ही कोनी हा, 'लोगा नैं कांई करणो चाहिजै, कांई सोचणो चाहिजै', आ बात ही थारे माथे मे, बैं मर्द लीक माडणै रो फिकर राखता, मा लीक नै छोडण त्यार कोनी ही, फेर भी दोनूं एक साथै चालता अर वठैह वा मे फरक कोनी आयो।

दादी नै दिन आया मरणो हो अर वा मरगी, बी वखत पापा एक जगा भासण देवै हा, मा आयेडा विधायका री खातरी मे लागरी ही म्हू आठ महीनै रै पेट रै टाबर नै लेयणै मे सूनी ही, दादी कनै कोई कोनी पूछ सक्यो पण कोई काम बाकी कोनी रयो, बीनै लोगा नेम स्यू न्हायो भी, बीरो कफन भी ल्याया, 'राम-राम सत् है, कहन मुसाणा मे भी लेग्या, बीरो दाग भी हायो, पण बीरै आगै दडोत करण आळा पोता कोनी हा, लाय लगाई जद् मा कहन हेलो मारण साळू कोनी ही, बीरा हाड चुगन गगाजी जावण आळो कोनी हो, बारा दिन ताईं घरे शोकाण आळा साळू बैठण आळो कोनी हो, लोगा तो आ ही कही होसी—'इसैं मोटै आदमी री मा कुत्ते री मोत मरगी। ईंरै गेरै कांई कोनी हो, बेटा, पोता, राम जी री दीन लागरी हो, पण विरमानन्द आपरै मोटापै मे धूळ गिरालो। मा आ दिना जेड़ी दुखी ही के, पूछो मत। पण एक ही बात कयो—'अै दिन सदा कोनी रैसी, एक दिन आ चमक-दमक जावणी है, लोगा री जामा वगै है, राजा रा राज चल्या गया, आ तो माग्येडो चीज है, कित्ताक दिन रैसी, पण फेर लोग न

मनैं बोलण देसी, न मेरैं टाबरा नैं। आ काई हुई, बूढळी रो जमारो भूंडो जग्यो, औ राजनीति रो हाड एहडो गळ मे घल्यो है के घर री रीतिनीत नैं भी भूळग्या, दुनिया रो आपो तो आडो आसी रे नी, पण इण आपैं नैं बिसरा दियो, पीढिया नै दाग लागग्यो, अबै कोनैं मूडो दिखास्या, आपणै काई कोनी, सगळा रा ही पीर सासरा, भाई, कुटम्ब कबीलो है, सगा, सरीका है, सरीको क्या बालण देसी। मूडो लुकान कठैही कूट मे भला ही पडया रह्यो, जीवणै रो ढग तो है कोनी।'

पण पापा तो मा री मौत नैं भी दर्शन री डोरी मे पिरोली, पापा तो मोटा आदमी हा, वा रो मूडो कुण पकडैं, मा भी वारै सामैं इत्ती दबरी ही के बा भी बारी 'हां' में 'हां' तो कोनी मिलाती, पण वारी बात नैं उथळणै हिम्मत कोनी ही।

दादी तो चली गई, पण दादी री बात भी च्यार दिन चालन चली गई, इण धरती रो आ ही आदत है, आ मिनख भखणी है तो मिनखा री बात भखणी भी है। आ इतिहास रा इतिहास गरागाप करगी, आ तो बात ही काई ही। दोना मीना पाछैं ही म्हारै नानियो होग्यो, नया रगचाव सरू होग्या सारली बात खतम होगी।

पण आ दिन पापा घणा रीसाणा होवण लागग्या। हरेक पर झ्याई लेवण लागग्या। आयै गए साथै भी वारी बरताव आछो कोनी रयो। वै ज्यू-त्यू हरेक रै गळै पडण लागग्या।

पैली पापा म्हा सगळा रै बीचैं बैठना, हसता, बोलता, मस्त हो ज्यावता, पण अबार तो वैं न्यारा ही आपरै कमरै मे बैठया रैवता, एकला बैठया रैवता, रोटी भी बठै भी मगा लेवता, मूडो चाळ्टण लागग्यो, वारा हसो-इपणो पतो नी कठै चल्यो गयो। वाम्यू बोलणै री हिम्मत कोनी होवती। वास्यू अजार डर लागण लागग्यो।

म्हू मा नैं पूछ्यो—मा, पापा रै काई होग्यो ?

—हो काई गया, आजकल मुख्य मत्री अर तेरैं पापा मे खटपट चदरी है। एम० एल० ए० जका तेरैं पापा रा हा, वैं आनैं एक-एक कर छोडण लागरया है।

म्हानैं भी फिकर होयी, म्हू आ दिना हेमराज नैं कोनी देख्यो जको

इतो भलो आदमी हो अर्के रै गोळी लागी तो पापा खून दियो हो। कोडाराम रुळीचद, भागीरथ, मनोराम, फूलचद बा माय स्यू एक ही कोनी दीखै।

म्हू फेर एक दिन मा नै पूछयो—'मा पापा रो सुभाव खराब होग्यो, अद् पापा नै लोग छोडग्या।

—गी बेटा, मा बतायो, मुख्य मत्री शर्मा एम० एल० ए० रै कान मे एक मतर पढ़ै है। टेम है, निवळ ज्यासी, वक्त चूकग्या तो पछताओला, मेरै साथै आओ, सोनै अर चादी साथै खेलो, सुख साथै रैवणो है तो बीरमानन्द कनै जाओ। बानै रिस्वत, तस्करी सगळी छूट दे दी, खूब खाओ खूब लगाओ। त्याग-प्याग मे की कोनी पडयो। अबा अठै लट्ठरिया करता, बा मे एक ही कोनी।

एक दिन पापा चौक मे बैठ्या हा, सागै की लोग बैठ्या हा। पापा उदास हा पण हा शान्त। सागै रा लोग भी बात, शान्ति स्यू सुणन लागरया हा। पापा कयो—दुनिया मे दो ही कोम है— गरीब अर अमीर। अमीरा कनै धन है, धन स्यू वा सगळा मिनखा रै मानस नै गुलाम बणा राख्या है। अमीर आपरै धन स्यू लोगा नै सोषण समझण री अक्कल देवै है स्यू रै बारै हाथ मे प्रेस है। वा सोषण समझण आळा मिनखा नै भी आपरा गुलाम बणा राख्या है। गरीब कनै धन तो है ही कोनी। बारी अकल भी अमीर रै हाथ मे है। जे कोई गरीब रो नेता बणनै री सोचै बो मिथ्या दिना मे भात खावण रो जुगाड बणा लेवै है। अमीर कम है, गरीब घणा है, पण बहुमत अमीरा कनै है। अमीर राज कोनी करै, पण राज करावै है। म्हू मुख्य मत्री शर्मा नै आपणो आदमी समझ्यो, बीरो सोषणै रो तरीको गरीब हित मे हो पण बो भी अमीरा रै धडै मे चल्यो गयो, बण आपणै आदमिया नै भी धन रो टुकडो दिखान आपरै हाथ मे ले लिया, अबार शर्मा मोटै अफसरा नै कैय दियो के बै बीरमानन्द रो काम न करै, अबै म्हारै कनै तो कुरसी है, राज कोनी, पतो नी आ कुरसी भी छाडणी पड ज्यावै।

पापा एक लाबी सास ली, सागै बैठ्या लोग मौन हूया बैठ्या रहृया।

पापा कदे दफ्तर जावै, कदे कोनी जावै, दौरै पर आवणो भी कम कर दियो, अबो चौगान मिनखा स्यू भरयो रैवतो, बठै अबार धोड पडगी।

पापा स्यू लोग मिलण आवता, पण वै और भात रा हा, कई मोटै पगड

रा, कई पागडी आळा, पण वैं पापा री पार्टी रा कोनी हा ।

पापा तो बात कोनी बतावता, पण अखबार पापा रैं मन री बात कैय देंवता । अखबार बोलता—मुख्य मन्त्री अर बीरमानन्द मे 'टनराब, बीरमानन्द गो विरोधियां स्यू सम्पर्क।

पापा अबार काई करैला, पापा राज छोड देसी, कुरसी छोड देसी, फेर काई होसी ? राज रा तो रग न्यारा ही होवैं है, अै रग एक झटकैं रैं साथै चला ज्यासी।

आ दिना देस री माहौल ही बहुवरचो हो, चोखा-चोखा पार्टी रा नेता पद छोडण लागरघा हा। बैं देस मे वापरेडै भ्रष्टाचार स्यू बेहद परेसान हा।

एक दिन पापा रैं मूडे स्यू निकळी—म्हू ईं शर्मा नैं लो रा बीणा बबार छोडस्यू घर लो पोसियो री हो वळसी, पण सुख ऊंदरा ही कोनी पावैला।

जद् एक साथी कयो—'थे कदेइ पारटी मत छोड दीज्यो, थारा वैर शर्मा स्यू है, पार्टी स्यू कोनी।'

पापा कयो—मिनखा स्यू पार्टी बणै, जे मिनख माडा होवण लागज्या, तो पार्टी बीचारी काई करैं, जी घर मे बास आवण लागज्या, अर बास नीकळै कोनी, तो बो घर छोडणो ही आछो।'

बो साथी सोच समझ बोल्यो—'कदम उठायो तो आछी तरियां सोच समझ लीज्यो, राजनीति तो एक खेल है, दाव मे चूकग्या तो हार मे आ जीस्यो।'

पण पापा अबार खासा रीसाणे हा, बनै की कोनी दीखतो, शर्मा ही दीखतो, वैं शर्मा नैं ढ़ायणै री जोड-तोड मे लागग्या, चाये आनैं की करणो पडै, पापा रो काळजो जगा छोडग्यो हो, वैं जाड भींचता ही रैंवता। पापा रो दाव आज ताई खाली कोनी गयो, म्हे अबार देखण लागरघा हा।

चुनाव री चिरचा चालण लागगी, आम जनता खासा परेसान ही, लोगा रा काम होवता कोनी, होवता तो पीसा लगान होवता, जगा-जगा जूता फजीती, कठैई मिनखां नैं चैन नहीं। मह्गाई आपरा पावडा पूरा पसार राख्या हा, अराजकता बदरी ही, विरोधी लोग जनता पर हाथी होवण लागरघा हा, लोग कैवण लागग्या—'इण सुहाग स्यू तो रडापो ही आछो। राज तो पैली आळो हो, [illegible] हो, अबार तो पीसा देवो,

पार ऊतरी।'

पापा कैवण लागग्या हा—'ओ शर्मा मह में बैठनो मडका भरै है, जद् जनता रैं सामी आवैसी, जद् पतो लागैनो।

पापा अवार दिल्ली रो दौरा घणा शरू कर दिया, याई करता, बीस्यू मिलता, पतो कोनी लागता दो चार रैयन फेर आवता, एक दिन चाण चकै रेडियै स्यू खबर आई—केन्द्र रै एक मंत्री च्यानण सिंह मंत्री पद स्यू अस्तीफो दे दियो, वण पार्टी स्यू अस्तीफो दे दियो दूजी पार्टी रो गठन कर लियो, वीरै साथै हजारू कार्य-कर्त्तावा, नेतावा पार्टी स्यू अस्तीफो दे दियो, अखबारा में ईंरो भारी स्वागत होयो इसो लागै हो जाणै देश अबार बदलाव चावै हो, चीज चाहे आछी हो या माडी, ठोड पडी भारी लागै, बदळनो तो चाहीजै ही, सत्ताधारिया रै को 'अह' भी घर करग्यो, म्हानै घडगी जकी थाड में बडगी, हर मिनख न रैं ओ सोच बडग्यो—आनै तो बदळो ही।

जकै दिन पापा रो मूडो चैळकै हो मिनखा री भीड भी घणी वदी, पण अबार जका मतलबिया आवता, वै आवण ही बद होग्या या भीड री थाय अबार कोनी घणती, भीड आळो छावो भी अबार माठो पडग्यो।

इनै शर्मा एक झटको और दियो—चुनाव सारू जकी समिति बणणी ही, वीरै माय पापा रा आदमी कोनी लिया, पापा रो नाम राखणो जरूरी हो। पापा नै पतो लागग्यो कै अबै आ तिला में तेल कोनी।

19

थोडा दिना पाछै एक दिन म्हे चाय पीयन उठ्या तो अखबार आळो अखबार देग्यो, म्हू अखबार उठायो तो पढ्यो, म्हानै मोत अचभो हुयो। अखबार में पैले पेज पर मोटै आखरा मे पैनी खबर छपेडी ही—विरमानद रो पार्टी स्यू अस्तीफो, मंत्री पद स्यू अस्तीफो, वीरै साथै हजारू कार्यकर्त्तावा रै

अस्तीफै री वात, साथै तीन मन्त्रियां रो भी अस्तीफा जकै मे रेखा रो नाम वास हो। पापा चार दिना स्यू दिल्ली मे हा।

म्हू मम्मी नै हेलो मारचो—अर खबर पढन सुणायी, मम्मी रा होठ सूक्या, आंख्या मे पाणी आग्यो, आंख्या नै पूछती बोली—आ तो दीखै ही, बेटा। थारा पापा बोळो वाता मे जिद्दी है, चढती हाडी रै ठोकर मारै है, अबै पतो नी काई होसी, अै मानै कोनी कीरी। म्हू तो कयो—तनै काई लेणो देणो, रोटी खाय अर मौज कर। काई कष्ट हो, मौज होरी ही, शर्मा कोई लाट सा'ब है, दोनू वणाय राखता, मौज करता, पतो री, अबै काई होसी। मा सीधी भगवान् कनै गई, आचल पसारन रोवण लागगी। स्यात् वा दुआ मागै ही पण वगत वदळै तो वो भगवान् रै भी मारै कोनी रवै।

वगत वडै वेग स्यू वदळयो, पापा नई पार्टी वणाई, पापा रै साथै विरोधी लोग भी आ जुड्या। पैसी रा लोग अबै कोनी रह्या, नया नया लोग आवण लागग्या, भीड थोडू सरू होगी, पण अवार भीड और तरिया री ही।

चुनाव सरू, पापा रा तूफानी दौरा सरू। पापा जनता मे भोत लोकप्रिय हा, ईंरो अदाजो म्हू एक भीड मे देख्यो' लाखू आदमी, भीड मावडै कोनी। शर्मा आपरो ताकत अजमावै, पापा आपणी। सघर्ष भोत जवरो। चुनाव काई हो, एक जुध हो, कुरसी खातर जुध, राज सारू जुध।

एक दिन जुध तो वन्द, वोटा री गिणती सरू, पापा अर पापा रै साथियां री पार्टी बहुमत मे, सत्ता रा पार्टी अल्पमत मे। जकै दिन पापा अर पापा रा मोटा-मोटा साथी, म्हारै अठै मिल्या अर लडन वारै निकल्या, अबै मुख्य मन्त्री कुण वणै आ लडाई सरू अर सरू म ही लडाई करन उठग्या, इत्तै मे एक समाचार मिल्यो कै आरी पार्टी रा चार आदमी शर्मा तोड लिया, वानै एक एक लाख रिपिया दिया। पापा आळी पार्टी शर्मा री पार्टी रा पाच आदमी तोड लिया। म्हू सुणी कै अवार राजनीति भी वडी अजीब वेली गई। विधायक अर नेता भी आपरी पार्टी सारू वफादार कोनी हा। हर उम्मीदवार आप-आप री चाल पकडी। पापा घणकरा सत्ता आळी पार्टी रै उम्मीदवारा नै भी मदद करै हा, आ वनै गहरी चाला ही। पण आरी चाल पार पडी कोनी।

बात अया हुई के राजपाल शर्मा नैं राज वणार्ण साह तुला लियो, तरक हो के वैं सगवाऊ मोटी पार्टी रा नेता हा। फेर तो जनता में घणो रोष ऊमग्यो, चुनावां मे वहकायेडा मिनख हिंसा पर उतरग्या, जगा-जगा प्रदर्शन अर तोड फाड, आसूगैस, लाठीचार्ज अर आखर सेना बुलाई गई अर उमडती भीड़ा पर गोळ्यां चाली जकै स्यू घणा आदमी मर्या अर घणकरा घायल होग्या, दूजै दिन ही राज मे राष्ट्रपति शासन वणग्यो।

जकै दिन ही स्वामीजी आग्या। आपरी झोळी झडा नाखै मलन बैठग्या, पापा भी आग्या। स्वामीजी वलै वैं ही वाता—अरै विरमानद, थ म्हे एहडो राज सारू तो जेळा कोनी भोगी ही। लोग लडै ज्यू कुत्ता लडै इनै ही कहवै है आपणो राज।

पापा तो पैली स्यू ही निरास हा, बोल्या—म्हे सारा तो थिर्ण दिना मे ही पोत दे दियो।

—यात तो पोन आळी है, चुनाव तो होया ही करै है, चुनाव मे जकी बाता सुणी, है भी माडी, फेर दळबदळ री बात और माडी, वीरै बाद राजपाल रा बात बीस्यू भी माडी, फेर जनता री नाटक सगळाऊ माडी अर अबार गोळी बारी धाप'र माडी। दोष कीनै देवा, राजनीति जनहित म कोनी, आप हित होग्यो। म्हारै माथे म तो आ जची कोनी।

—जची तो कीरै ही कोनी, स्वामीजी, पण जनतन्त्र रा तो औ ही नाटक होसी, कीरै बस रा कोनी, हर व्यवस्था मे अपणी अपणी खामी है, अं खाम्या दूर कोनी हू सकै। पापा स्वामीजी नैं बतायो।

स्वामीजी फेर बात मोडता थका बोल्या—पण अबै आ बता के आगै कांई होसी, राज कीरो रैसी।

—राज शर्मा रो, पापा क्यो।

—पण वहुमत तो बारै कनै, फेर शमा रो राज कया। स्वामीजी पूछ्या।

पापा बतायो—अबै राष्ट्रपति शासन स्यू शर्मा नैं पूरो मोको मिल ज्यासी, बो म्हारा आदमी भजै स्यू तोड लेसी।

—ओ काम यैं लोग भी कर सको हो।

—बा मतै केन्द्र री ताकत है, अबै अठै राज केन्द्र रो है फेर म्हे लोग

एकमत भी कोनी। म्हे लोग म्हा गे मुख्य-मन्त्री भी कोनी बण सक्या। न बणा सका।

20

बात पापा री साची हुई, एक मीनैं पाछैं राजपाल विधान-सभा रो अधिवेशन बुलायो, शर्मा कनै इक्कीस आदमी वदग्या। पापा रा घणकरा आदमी शर्मा साथै चल्या गया। कीनै ही मनीस्टरी रो लालच, कीनै ही और पद रो लालच अर कीनै ही पीसा रो। कया नै पीसा अर पद दोना रो लालच देखा, खडगसिंह, मोडाराम, हुक्मचन्द, धर्मसिंह जका पापा रा ऐन नेडा हा, वै भी शर्मा साथै जा मिल्या। अबै तो पापा बेहद उदास रैवता, बारै कनै कोई काम कोनी हो। तार, सतरी, पैरा तो पैली ही चल्या गया हा। न कोई आवतो, न कोई जावतो। काग बोलै, कुत्ता घूसै।

पापा कनै कोई काम कोनी, कदे वै बारै छप्पर में बैठ ज्यावता, कदे ऊपर आपरै कमरे में चल्या ज्यावता, कदे नीचै म्हारै कनै आया दो चार बात कर लेवता। मूँडै पर जको चैळको हो बा अब अबै उतरण लागग्यो। बा एक तास री जोडी मगवा ली ही, बा वै आपही खेल लेवता। कदे वै मनै बिठा लेवता, म्हूं बानै साथ देवती। म्हूं कदेई राजनीति री बात बास्यूं कोनी करती। म्हूं जाणती, पापा नै इण बात स्यूं ही बारै घाव नै उचेडणो है।

मा म्हास्यूं बात जरूर करती। मा कनै अबै काम कोनी हो। मा कैवती—कित्तो करती, कदेई थकेलो कोनी आयो, अबै पतो की काई बात है, थोडो सो काम करता ही शरीर थकेलो मान ज्या है, आखै गोडा टूटग्या।

मा ठीक कैवती। मा पर बो हौसलो कोनी रयो। मा अबै काळी पडण लागगी, सरीर कमजोर पडण लागग्यो।

मा रै कदे कदे आसू आ ज्यावता। कैवती—'मालक कै तो आछा दिन

दिखावैनी, पै खोसै वी। बात सच्ची ही, पतो नी, म्हा लोगा काईं पाप करयो के परमात्मा म्हारा आछा दिन खोस लिया। कित्ती भीड रैवती कित्ता लोग मीठा बोलता, गाडया, जीपा री कतारा लागी रैवती। अ लोग कठै गया, क्यू कोनी आवै।

दिन में एक-दो चोखा आदमी जरूर आवता, म्हानै भोत खुसी होवती मा बडै चाव स्यू बारी चाय बणावती, मा रो बडो जीसोरो होवतो। जद आवता, जद मा कैवती —आप घणा दिना स्यू आया, आया करो, आरो भ जी लाग‌्या।

वै कैवता— काईं करां, टैम ही कोनी मिलै, टैम मिलै तो जरूर मिल हा म्हारै आस्यू मोटो पुण है।

मा मन म करती —'थैंनी म्हानै टैम कोनी ही, अबार थानै टैम कोनी *वगत-वगत री बात है।'*

एक दिन चौगान मे बैठ्या हा एकला ही, मा मैं अर पापा। म्हू पापा नै सकती सी कयो—पापा, आप पार्टी न छोडता तो ठीक रैवता।

पापा हुमन बोल्या—'स्वराज, सवाल पार्टी रो कोनी, सवाल सिद्धांत रो है। म्हू तो जबै दिन ही हार चुक्यो हो जकै दिन केन्द्र म आपणा आदमी कमजोर पडग्या। तू इण बात नै कोनी समझै। ऊपर भी पूजी री लडाई है, नीचै भी पूजी री। दुनिया मे भी पूजी री। देस आजाद हुयो, का विदेशी पूजी अर देसी पूजी री लडाई है। अबै देस म पूजी री लडाई। म्है लोग तो बा लोगा री कटपुतळी हा, बारा नचाया नाचा हा। बै लोग जिया देस नै नचावै नाचणो पडै।'

म्हारी बात नै पापा हसी उडाई के म्हारै सामै कोई सवाल ही बाकी कोनी रयो, इण पूजी री लडाई नै तो पापा समझै हा, म्हू तो कोनी समझी न समझणं री चेष्टा ही करी।

म्हू पापा नै जिसी म्हारी अक्ल ही बीगी फेर बात करो, पण मा कैय बैठी, 'तरा पापा तो जिद्दी है, ई शर्मा सायै न विगाडता तो बात इत्ती कोनी बिगडती।'

पापा फेर समझावण लागग्या—'तू भी बात नै कोनी समझै, म्हू शर्मा स्यू म्हारै सिद्धांता रै मुजब काम करावतो, ऊपर रा लोग आपरै सिद्धांता

मुजहब काम करावता, जे शर्मा म्हारी पार्टी सार्यं रंवतो तो बीनैं जगा कोनी ही, म्हारै सार्यं वो भी रोवतो फिरतो, चलो, आपणो पुराणो साथी तो है ही राज मे, विरोध मे है तो कोई बात कोनी।'

मनै एक बात और सूझी—पापा रेखा भी आपा नैं छोडगी जकी आपणैं इत्ती नेडै ही, हुकमचद भी छोडग्यो जका थानैं देवता री तरा मानता।

पापा फेर हस्या अर कयो—तो तू बेटा, औजू बरोनी समझी।

पण मा बीच म ही बोली—बा राड तो हरामजादी निकळी।

पापा बोल्या, तू गाळ काढै, मेरी बात पूरी होवण देतो, बेटा, बा आपा नैं छोडघा कोनी, आपा ही यानैं छुडाया है।

—है, मनैं पापा री बात पर अचभो हुयो।

—'है' मत कह, बेटा, म्हू ही बानैं राज मे बाडघा है, पार्टी छुडायी है, नी तो आपणो कोई कोनी हो, धारै बैठया माखी मारता रैवता। आपणो अडचो काम सरै, आपणै ऐन नेडै आदम्या री अडचो काम सरै, नी तो राज आपणो पीव'र पाणी काढ नाखतो। हा, अबार, आपा जनता री सेवा नी कर सका। अबै त्याग री राजनीति कोनी रयी, स्वारथ री राजनीति है, आ परम्परा ठेठ वणी रैसी अद् ताई जनतत्र है, फेर आगै बदा तो कह सका हा, जद् ताई ई हाडमास रो वणैणो मिनख है।

मा फेर बोली—'जे आ बात है तो बै आपणै घरे तो कोनी आवै।' मा अबार रीसाणी ही। मा फेर ऊफणी—म्हानैं सगळी बाता याद है, बो है न हरगोविन्द जको दिल्ली मे मनीस्टर वण्यो बैठ्यो है, आपणै घरे रोज मरतो, म्हारै हाथ री रोटी खावतो, माताजी, माताजी करतो लैरै लैरै फिरतो, बो अठै घणी बार शहर मे आवै, एक दिन ही घरे कोनी मरै, माताजी मरगी कै जीवती है, दुख-सुख री पूछण कोनी आवै, बोनैं अबै उद्घाटन भाषण, घाटण स्यू ही वेल कोनी मिलै, बीनैं थे ही राजनीति मे ल्याया हा, बो फिरतो खुरडा घीमतो—वकील सा'व हा बै, टाबरा नै वगत सिर रोटी ही कोनी मिलती, म्हानैं ठाव है।'

—आ रेखा नैं पापा ही मनीस्टर वणायी, बा मास्टरणी ही। म्हू कयो।

—ओ हुकमचद काई हो, मा कयो, कठै ही नौकरी मिली कोनी, पापा रा जूठा बरतन चक्या करतो ।

—बो कुरडाराम, म्हू बोली, पटवारी हो ।

—पटवारी कठै हो, मा बोली, पटवारी रो बस्तो चकण आळो । किता नाम गिणाऊ । कोडाराम, धर्मचद, नाथूदास, रामजीलाल जका आपनै राजा स्यू कम कोनी समझे ।

पापा सगळी बाता सुणता रया, फेर हस्या बोल्या—क्यू फी दोरी करै, कुण कीनै ल्यावै, कुण हटावै है, समय रा फेर है, आपणो टेम इत्तो ही हो निवळग्यो । राजा लोग जका रै फूक स्यू घास बळ्या करतो, जका जनम स्यू मखमली गद्दा पर लोट्या करता, आपा तो हा काई, याद कोनी, बो कच्चो-कोटो, मा आळी पीकर, बाटा आळी वाड, एक सीग आळी गावडती, दिन उगता ही रात आळो रावडी, आथणगै मागेडी छाछ री कढ़ी ।

पापा मा रो भाजनो सो ले लियो । मा तो चुप होगी, पण पापा फेर बारया —ओ राज तो जनता रो है, सगळा नै ही मोको मिलणो चाहिजै । आपा कोई ठेको थोडो ही ले राख्यो हो, जका राणी रै पेट स्यू पैदा होया करता, वै ही कांनी रया, आपणी तो औकात काई ही ।

मा एक लाबी सास ली, बा आ दिना घणी फीकी रैवती, पापा बीनै की धीरज बधायो । पापा मे आ खूबी ही कै बै जीसो आदमी देखता, बीसी ही बात कर लेवता । बारो कदे-कदे सगळियो आवतो तो बै हसी ठठ्ठा पर उतर ज्यावता तो इसा लागता आपो वे ऐन साधारण मिनख है, पण जद् कोई विद्वान आवतो तो बै दार्शनिक बण ज्यावता । राजनीति आळै स्यू राज री बात करता तो घर आळा स्यू सुख-दुख री ।

पापा फेर बात नै मोड दे दियो, बोल्या —बोल, तेरै लाडलै रो काई हाल है ।

—बो तो क्रिकेट खेलण गयो है ।

—ओ क्रिकेट ही खेलै है, की पढ़ै भी है ।

—बिना पढे बी० ए० क्या करतो, मा कयो ।

—म्हू तो बीनै पढता कम देखू ।

—पढै तो है, पापा, म्हू कयो, दिनगै चार बजै उठै, आपी चाय बणावै,

फेर पढै।

—स्वराज, तेरो मवाल कित्ताक दिना में त्यार हो ज्यासी।

—थे काल देखन आवान, पापा, अबै तो देर कोनी, घणै ऊ घणा दो हफ्ता।

इत्तै मैं एक कार आई, कार में दो आदमी हा, दोनूं गाव रा आदमी। बै ऊतरया अर पापा स्यूं नमस्ते करी। बै दोनूं ही पार्टी रा आदमी हा।

म्हे लोग उठग्या। मां वेगी ही चाय बणान चली गई।

मा री बाण तो बा सागी ही रयी। बा लोगां बई देर ताई बात करी, फेर चालण लाग्या जद् मा वाही बात क्यी—आया करो, सभाळया करो।

बै बोल्या—काई बतावां, माताजी, सपनो साचो कोनी होयो, हाथ में आयेड़ी लाव नीसरगी, नी तो बताता, राज काई होवै, ऐहड़ो राज ल्यावता के लोग याद राखता, अबै तो है काई, बै ही नाळिया, बा ही मडाघ। जनता रा भाग माडा है, जनता तो घणो ही साथ दियो, पण पार कोनी पड़ी। मार्टैं रो ढोकै डाग न फाडै, पण बानै भी म्हे चैन री सास कोनी लेवणदयां। अबै एक आन्दोलन छेडाला, वारी काई औकात है, घरसी हाल जिसी, बस आरो साथ चाहिजै।

—बस, एहड़ी बात करो, म्हारो जी सोरो होवै, मरज्याणा जनता रै खून स्यूं सींचन सिंहासन पर बैठ्या है।

पापा फेर हस्या—हा, भाई, इसी बात सुणाया करो, ईंरो जी टिकै आ तो दिन-दिन सूकया बगै है, सूखन खेलरो होगी।

बा दिना ही चैनसिंहजी आग्या। चैनसिंह काळै डैरे बरगा होरया हा। कै तो बारो काघो मच्यो रैवतो, पण अबै नाड निवळरी ही।

माताजी आवता ही पूछयो—कवर साहब, औ काई?

—माताजी, बस भाई,जी रो राज काई गयो, म्हारो ढोळ विगड़ग्यो, फेर चढ़गो ताप, ताप स्यूं वणग्यो अजार, अबै की ठीक होया तो मवार उठन आयो हूं।

—अठै तो कोनी हा थे। मा पूछयो।

—गाव हो एक मीनै स्यूं, अठै काई करतो। पालनू

खरचो लागतो, सोच्यो, मिल आऊ, सायसगळिया ऊ, भाई सा'ब ऊ, माता जी ऊ।

—आछो काम करयो, म्हू तो सोचतो, अवै कुण आवैं, चैनसिह ही छोडग्या, सेठ रो तो पतो ही कोनी।

—सेठ तो थारै साथैं लागरयो है, चैनसिह बताओ, वाणियो है, स्याणो हुवै है वाणियो, आपणै जिसो बावळो थोडो ही हुवै, चालता ही तेश में आयन पडी हाडी रै ठोकर मार देवा।

—ठीक क्हो, चैनसिहजी, देखो थारै भाई सा'ब, आही तो करी, देखल्यो सगळा ही मौज रै भेळै आ मिरया, म्हे ही बावला निकळया।

—भाई सा'ब तो एम० एल० ए० ही कोनी रहया। लोगा नैं बणाया।

—आ कोई अक्कल री बात ही, चैनसिह बोल्या, म्हू कयो भी, थे पार्टी मत छोडो, चलो, थामी स्यू लडाई है तो पार्टी कै माय बैठ लडता रैस्या, फेर लडाई क्यारी ही, आखर आपा अगलै नै चीफ मिनिस्टर बणायो है, की तो आपरी चलावै ही, की थारी भी चालती रैवती। गरीब कानी कोनी देखै ओ तो, ओ ल्यो ओळमो। अबै साची बताओ, माताजी कित्ताक गरीब थारै कनै आवै अबै। छोडग्या।

मरज्याणा, फोरो ही कोनी खावण देवता, म्हू आ खातर रोटी पाणी भूलेडो ही। एक देकचो चाय रो चढावती, मेरै खातर ही कोनी बचती, एक हाडो भरन राबडी रादती, म्हू तो बिना राबडी रैवती, अबै पतो नी, वै कठै मरग्या।

आज राज आ ज्यावै, माताजी, मूड सा सै ओजू मेळ हो ज्यासी। इत्ता मतलबिया है लोग, माताजी, सिर भी थारो मोगरी भी थारी। म्हू तो देख राख्या हा, भाई सा'ब दया रा भरया पडया है म्हू कैवतो, सोचन खातो, था दुनिया बडी दुरगी है। अबै थानै दीखै है कोई गाडी री लीक भी तो, भाई सा'ब नैं आधी रात नै उठा लेवता। कैवता, म्हानै प्लेन पकडनी है, वात कराओ। मेरी भी अक्कल काढ लेवता।

—म्हारी तो निकळेडी ही।

—थे तो थे ही हो, माताजी, चायं की क्वो, थारी थर भाई सा'ब री होड कोनी होवै। पण दुनिया कानी देखां तो भोत जीदोरो हुवै। म्हानै याद

है, माताजी, म्हू लोगा रा घणा काम कराया, भाई सा'ब नै पंवणै स्यू । घर स्यू खरचो लगायो । गरीब है बिचारा, पण अबै जद वोट रो टेम आयो वै लोग दूर खड्या मिल्या । म्हू कयो—रै थे काम सारू म्हारी खोपड़ी खायी, वोट आळै वेळै, नारै सरको । कांई कवै—माताजी थै, पारटी रो सवाल है सा क्या है थर मतलब है, माताजी, म्हारो तो हजार बार पीतायेड़ी बात है, आरा किता ही गुण करदयो । सगळा कूअै मे पड़ै है । खैर, टेम जाणिये ।

फेर माताजी सगळा नै एकर-एकर याद करया जका माताजी रै आमै-सामै सूटरिया करता, अबै कदेहो दुख-सुख री ही पूछण कोनी आवै ।

धंर्नगिह आखर आ ही गयी—अै दिन नीं आवता तो माताजी, थानै मिनख री पीछाण कया होवती । ओ भी आवणो जरूरी हो, दुनिया रो पतो तो लाग्यो । खैर, की कोनी बोगड्यो, कोई बात कोनी, खरचै ऊ सों बचो हो ।

म्हू फेर चाय बणान लागी, म्हे तीनू भेळै ही चाय पी ।

इतै म विजय आयो, एक बडो परचो दिखायो जकै मे एक आन्दोलन री चेतावनी ही, पापा रो बीरै माय मोटै आखरां मे नाम हो ।

21

आन्दोलन तो सरू होणो हो, होयो । झूठी-साची किसानां री मांगा त्यार करीजी, परचा छप्या, गांव आळा नै प्रदर्शन सारू त्यार की करीज्या । विधान-सभा सरू होवता ही गांवा रा किसान कई हजार सख्या मे 'जिंदा वाद मुर्दावाद' रा नारा लगाया, तकड़ो जलूस निकळ्यो, विधान सभा रै सामै ऊनजलूल नाटक करीज्या, जकै रो नतीजो जको निकळ्या करै है बो ही निकळ्यो, लाठीचार्ज, आसूगेस, कइया रा सिर फूट्या, कइया रा हाथ, पापा रो भाषण हुयो, साथै और नेतावा रो भी । पापा रै भी हळकी-सी -

चोट आई, पापा दिन छिपे घरे आया।

पापा आया, पण मा बानें लडी—ओ काई धयो है, चैन स्यू बैठ जाओ। शर्मा राज आज छोडे न काल। अयां बाद में मुल्या बैर कोनीं मीसरै। आज तो आ थोडी-सी लागी है, सिर फूटज्या, आदमी मरज्या तो म्हारी कुण धणी। लोग दो दिन रोयन रैय ज्यासी। बी खातर मरो खपो हो, चलती रो नाम गाडी है, फेर तो फेर ही है।

मा जकी पैली इती भागती दोडती, जनता सारू भार्जी फिरती, कदे थकती कोनी, पती नी बीनें काई 'असरजी' हुई के बीनें अ बाता सुहावें ही कोनी।

पापा क्यो—बस धापगी, बावळी है तू, जिंदगी बार-बार कोनी आवें, ओ शरीर तो जनसेवा सारू सौंपड़ो है, जेल गया जनता सारू, राज करपो जनता सारू अर्ब विरोध करां जनता सारू। राज करण आळा स्यू राज तो कोनी छुडावा पण बानें चेतो तो कराबा के जनता सूती कोनी। जे बे माडो करैली तो आ ही जनता बानें तोड फेकसी। हार मानलो तो हार है अर हारया जनता री हार है, न्याय री हार है। जे विरमानद हार मान लेसी तो और कोई नद खडया हो जोसी। आ जोत तो जळती रैसी, कदे मद्दी तो कदे तकडी। तो फिर विरमानद आपरो माजनो क्यू देवें, ईनें भी जीवतो रैवणो है इण शरीर रा कोई लाव जेवडा कोनी बणे, काम है तो कर्म है और काम सारू चाया नैं चवेंसो नी मानसो, देवी, दिमाग बदळ, ऐश करी तो त्याग करणो पडसी।

मा जकी एकर अधकार मे चली गई ही, ओजू जोत में आगी।

पती नी कठऊ स्वामीजी आग्या। स्वामीजी आवता ही आपरा झोळा-झीडा मेलन बैठग्या—अरे भाई, आज सेरो मिलणो आराम स्यू होयो, राज में हो जद कया कोणा-कचूणा में लुकयो मिलतो, कठेई सिपाही खडया रैवता तो कठेई चौकीदार। अबै तो बा सागी खाट अर सागी रगडग।

—हा, स्वामीजी, पापा बोल्या, बा तो कैद ही, कठे आ सकता नी, कठे जा सकता नी, भाई बेलो स्यू भी नी मिल सकता। भीड भी ऐडी के पूछो मत। स्वामीजी, एक बात म्हू राज स्यू सीखी, राज स्यू जका लोग जरूरतमद है बारी जरूरत पूरी कोनी हुवै, जका लोग ठाडा है चाहे वै धन

स्यू टाडा हो चाहे जन स्यू बै आपरी जरूरत पूरी करै, जद् ही तो धन आळा घणा धन आळा बण ज्यावै है, गरीब गरीब। एक आदमी म्हारै कनै आयो एक काम लेयन, सफा गलत काम। म्हू बीनै सफा नटग्यो, बण जवाब दियो—आछी बात, मत करो, म्हू तो करवा लेस्यूं, म्हारै कनै ताकत है, पण थे जद् आवो जद् ध्यान राखन आइज्यो, म्हू फूना री जगा जूता री माळा पैरास्यूं। म्हू जाणै हो के वो म्हानै पीसा भी देवतो अर वोट भी दिरावतो, जद् बो काम तो करावै ही, चाहे माडो होवै या आछो।

—तनै बार-बार कंवतो, स्वामीजी बोल्या, थारी इण व्यवस्था में कठैई खोट है।

—म्हारी आत्मा मानी कोनी, राज में रैवणो तो आसान बात ही, पापा बात बताई।

—ईं रो इलाज, स्वामीजी पूछ्यो।

—आदमी आछै राज सारू इकलग चेस्टा में लागरयो है। कदे-न-कदे इण चेस्टा रो फल तो मिलसी ही। बया हर व्यवस्था में आप आपरा खोट है, आप आप रा गुण। इसी लाद ओजू तक लादी ही कोनी जर्के में कतई खोट नी हुवै।

—स्यात् लादै भी नी, स्वामीजी जवाब दियो जका घणा समझदार हा। बा कमो—म्हू रूस गयो, चीन गयो, जापान गयो, अमेरिका भी गयो पण सच्चो सुख कठैई कोनी, कठैई की राडो रोवणो कठैही की।

पण स्वामीजी अधार आया ही हा, बाता ही बाता में की टेम निकळग्यो, बै फेर नहाया, धोया, चाय पी अर घणै जीसोरै स्यू बाता लागग्या। बारी बाता में आज मिचीव चालण आळो कोई कोनी हो।

म्हू जद् बारै कनै गई तो स्वामीजी आपरै कॉलेज री बात बतावै हा—बिरमानद, म्हू तो कॉलिज खोलन पछतायो।

—क्यूं, पापा पूछ्यो।

—कॉलेज कोनी रयो, बिरमानद, आ तो एक कास होगी।

—कॉलिज अर कास।

—हा, टीगरा रै पढणै तो है कोनी, रोज हडताल, कदे प्रीसीपल रै खिलाफ, कदे की प्रोफेसर रै खिलाफ जद् गुरुवा रै खिलाफ चेला हो सकै है,

बठै शिक्षा कठै, गुरु नैं तो गोविन्द स्यूं ऊंचो मान्यो है ।

—पुराणी मानता बदळरी है, स्वामीजी ।

—आ तू सफा गलत बात कयी ।

—बात बताऊं, स्वामीजी, आपरै अठै नहरा आगी, जमीनां मोकळी । धन आळा छोरा कॉलिज में आवै । गरीब तो मसां स्कूल तक जा सकै है, फेर अमीरां रा छोरा स्कूलां में पूगै, बानैं पढणो-लिखणो है कोनी, कॉलिज में करै काई ? सुरळ मचावेंसा ।

—आ बात मानी, स्वामीजी कयो, बस बात आ है । जाड है बठै चीणो कोनी, चीणो है बठै जाड कोनी । म्हूं कई बार होस्टल कानी निकळ ज्याऊं, छोरा होस्टल रै कमरा में जुआ खेलै, दारू पीवै । स्कूल आळा छोरा तो इबै ऊ मान ज्यावै, अै बयां स्यूं मानै, ओ तो राडी रोवणो होग्यो । न अै राज ऊं डरै न राम ऊं । करा तो काई करा ।

—म्हू आ ही कई आपनै, अै लोग अठै ऐश करण नै आवै । आ कनै मोकळी जमीन है, घरे सीरी कमावै, आरा माईत आथणनै बैठन दारू री बोतल खोलै, फेर अै भला कठैस्यू बणै ।

ईंरो इलाज, स्वामीजी सोच में पडग्या ।

—एक ही रास्तो स्वामीजी, देस में धन बराबर बाटणो पड़सी, गरीब अमीर री खाई पाटणी पडसी, ओही इलाज है ।

—तो सरकार करै क्यूं कोनी ?

—सरकार तो अमीरां रै हाथ में चली ही गई, स्वामीजी और राडी रोवणो कयोरो है । गरीब में चेतना कोनी । जद् कोई बात उठै तो मूठा साधा आन्दोलन चढीज ज्या, सरकार नै दबाले । सरकार नै वोट अर नोट लेवू चाहिजै । गरीब रो वोट भी अमीर रै हाथ में है । अमीर प्रेस अर प्रचार स्यूं हर मोड दवेणो जाणै है । गरीब अमीर री गुलामी करो अर पेट भरो ।

स्वामीजी घणा उदास होग्या । बै तो तुरत इलाज चावै हा ।

स्वामीजी बोल्या—म्हूं तो इण माळ आयो हो के कोई बढिया प्रोग्राम बना जको बी मायाजाम नैं कन्ट्रोल में कर लेवै । कोई नरडो आदमी जको इबै स्यूं उडगै नैं सुधार लेवै ।

—स्वामीजी, इबै रो टैम भी गयो, पाणी कयो, आपां न स्याणा रया ।

न मावळा । मावळा डडै स्यू घमज्यावै, स्याणा अक्कल स्यू । अदविचला रै न डडो काम देवै अर न अक्कल । फेर भी आप आया हो तो आपनै आदमी देस्या जको डडै आळै न डडै स्यू अर अक्कल आळै न अक्कल स्यू साम लेवै ।

—हा, हा, बस, बस, म्हारो मतलब ओ ही हो ।

—निरास होयर बैठणो ही नी चाहिजै आदमी नै, पापा बोल्या । समय सारू तो गाडी चलावणी ही पड़सी ।

—हा, स्वामीजी बोल्या, तू तो बात एहड़ी करी कै न तो नौ मण तेल होवै न राधा नाचै । म्हू तो ऐन निरास होग्यो । कद् धन रो बटवारो होवै कद् कॉलेज चालै ।

—नी, पापा कयो, आपा मौजूदा हालात नै भी बस मे कर स्या, इसी काई बात है जकी होवै, कोनी ।

स्वामी जी आया जद् निरास हा पण जावण लाग्या जद् आसावादी होयर गया ।

22

पापा रै अबार काम कोनी रह्यो हो, कदे-कदे की मीटींग मे चल्या जाया करता । जद् कदे म्हू पापा नै देखती, वै भोत ही गभीर मुद्रा मे रैवता, काई सोचता, काई घड़ता, काई मड़ता, पतो ही कोनी लागतो । मा भी बैठी कैवती—तेरा पापा आजकलै उदास भोत रवै, भोत कम हसै, भोत कम आपणै मे बैठै, हरदम फिक्र ही फिकर । माडा होवण लागग्या ।

म्हू मा नै धीरज बधावती—मा, पापा कनै काम कोनी, करै काई । कोई आवै जद् घणी बात करै । देख, स्वामी जी आया दो दिन तो भोत खुस रया ।

—जद् तो म्हू कऊ आयै गयै न रे बे आया करो, आरो जी लाग ज्यावै, मा बोली ।

—थोनै वेल है, मां, अबै तो पापा री कोनी, एम० एस० ए० भी कोनी रया, लडया ही कोनी। बिना काम जी लागै क्या, थारै म्हारै क बात ही काई करै।

मा नै भोत सोच रैवतो, मा जाणती कै घर मे पापा ही एक दियो है जको रो उजास बारै तो है ही, पण घर मे ही है। इण घर रै दियै नै पूरो तेल मिलणो चाहिजे, पूरी बाती रैवणी चाहिजे। घर री इज्जत, आबरू सगळी आ ही है। धीमै-धीमै घर रो रवरूप फीको पडन लागग्यो। घर रो साथो चौडो गुवाड हो, बीमै दिनगै पैली झाडू निकळ ज्यावती, बी गोर बणग्यो। दरखतां रा पत्ता झडेडा है तो झडेडा ही पडया रैवता, गोबर पडयो पडयो सूख ज्यावतो, कुण उठावै। पैली तो पत्तो भी विस्ता आसै पासै रैवता, कुण काई करतो, पत्तो ही कोनी लागतो, अबार मा काई कर लेवै, राधा ही चली गई। एक दिन छप्पर री एक टूटी खराब हूंगी, खराब होगी तो होगी, कुण ठीक करै, कुण ठीक करावै। दूजो दावन बोनै बद करी। छप्पर रै आसै पासै री बेला सगळी बळगी। पापा चिन्तन म रैवता अर मा चिन्ता मे।

एक दिन पापा छप्पर रै आगै माची पर आडा होरया हा एकला ही। बै सामै गुवाड कानी इकटक देखण लागरया हा। म्हू आई तो बोल्या—"बेटा स्वराज, कदे तो अठै बुहारी लगा दिया करो, कोजो लागै है, आयो गयो काई समझैलो।

म्हू फटाक स्यू बुहारी ल्यायी अर काडण लागगी, पापा री निजर मेरे कानी ही। म्हू काम कर दियो तो पापा एक लाबी सास ली, बी लाबी सास मे सगळी बाता मांगै ही आगी ही।

आदमी कित्तो ही ऊचो विचारक हो, डूगो सत हो, पूगेडो महात्मा हो, ईं दुनिया री ताती ठडी लाग्या बिना कोनी रवै।

पापा रो सूरज अबार ढाळ मे हो तो म्हारलो बी ऊपरनै आयो। आनन्द जी रजिस्ट्रार होग्या अर म्हानै एक सरकारी जीप मिलगी। म्हारो मकान त्यार होग्यो। फेर म्हारो पापा नै बी सारो होग्यो। पण पापा री उदासी मे कीं फरक कोनी आयो।

एक दिन म्हू म्हारै घरे बैठी ही, मा आई—स्वराज, तेरै पापा रो पेट

दूखै है, कवरसाहब कठै है ?

आनन्द जी भाजन पापा कनै गया, सारै म्हू गई, विजय पापा रै पेट पर हाथ फेरै हो, पापा बुरी तरा करण लागरघा हा ।

आनन्द जी गाडी लेयन डाक्टर नै बुला ल्याया । डाक्टर एक इजैक्सन लगा दियो, की गोल्या दी, फेर एक गाडी आयन पापा नै अस्पताल लेगी । मिनटा मे घोषणा होगी के पापा रो आप्रेसन होसी । पापा रो केस भोत गभीर बतायो ।

म्हे लोग ओपरेसन रूम रै आगै बैठघा हा । चीफ मिनिस्टर शर्मा बठै आग्यो हो, और मनीस्टर भी बठै हा, रेखा भी बठै ही, कई एम० एल० ए० इतै मे रामप्रसाद जी भी आग्या जका पापा रा ऐन विरोधी हा ।

मा रो काळजो कापण लागग्यो । धीरे आंसू तो आवै ही हा, धूजणी छूटगी । रामप्रसाद जी मा नै इं रूप मे देखी तो वै हाथ पकड़न आपरै साथै घरे लेग्या । रामप्रसाद जी की अळगा होग्या तो मा बोली— बेटा, सगळा दुसमण भेळा होग्या, अबै तेरै पापा री खैर कोनी ।

रामप्रसाद जी रै साथै ही म्हारै खातर चाय आगी । मा चाय पीवण लागगी । रामप्रसाद जी मा नै बोल्या—विरमानन्द जी री जिन्दगी भोत कीमती है । अै है तो म्हे हा, अै नी तो म्हे भी नी । शर्मा आज आयन क्यू खडयो होग्यो । विरमानन्द जी रै विरोध नै शर्मा ही डाट सकै है, विरमानन्द जी रो विरोध खतम तो शर्मा खतम । विरमानन्द है तो रामप्रसाद है । म्हानै विरमानन्द जी सारू ढाळ रै रूप मे म्हानै अडघा राख्या है, विरमानन्द जी है तो म्हे मनीस्टर हा । विरमानन्द जी नै नेता रै रूप मे अर मिनख रै रूप मे जीवतो राखणो भोत जरूरी है ।

इतै मे फोन आयो—आपरेसन सफल, विरमानन्द जी री जिन्दगी खतरै स्यू बारै । माता जी नै भेज द्यो ।

रामप्रसाद जी म्हानै कार स्यू अस्पताल पूचा दी । बारी कोठी ऐन नैड ही, फेर भी कार भेजी ।

म्हू मन में करी—बडी अजीब राजनीति है, अठै कुण आपरो कुण परायो, पतो ही कोनी लागै । पण आपरेसन करण आळा डाक्टर जी हरिसिंह पापा रा ऐन प्यारा हा, वै माता जी स्यू मिलन बोल्या—केस

पोत घारताक हो, अलगर, आपरेगन म्हारे हाथ में हो, अबार इलाज म्हारे हाथ में, चिन्ता मत करोज्यो। राजनीति में दुसमण, दोस्त रो पतो कोनी लागै। ईंयै जको ऐन नहैं दीसै बो दुसमण होवै, अर जको दुसमण दीसै बो दोस्त होवै। समसाद्रयु, अबै दूजै नम्बर रो ऐन नेडै होवै बो सोचै—ओ मरज्यावै तो म्हू एक नम्बर रो नेता बण ज्याऊं, किसी गदी है आ राजनीति, फेर बै हा···हा···हा···करनत खुल्ला हंस्या, म्हानै आपरेशन सफल होवण री घणी खुशी ही।

पापा ठीक होग्या घर आग्या, पापा री पट्टी भी खुलगी, डाक्टर हरिसिंह जी रोज सभालता, पण पापा ऐन सुलीजग्या, आगै आगो गाळो सून पाड लियो, मास लोप लियो, हाडघा छाग सी। पड़ै गयो पापा रो बो सरीर जको पालता अर् घरती हालती।

एक दिन मुख्य मन्त्री शर्मा पापा नै सभाळन आया। शर्मा सामै कुरसी पर बैठग्या, पापा पलग पर लेटा हा, म्हू भी पूछगी। वानै 'नमस्ते' करी अर वारै पगां लागी।

—बड़ी होगी स्वराज तो, बै बोल्या।

—बडा तो थे होग्या, म्हूं कयो, कदे आओ ही कोनी, सभाळो ही कोनी। आ कयारी राजनीति जकी आपां नै भूल ज्यावै। सबाई तो थारी अर पापा री है, म्हे तो सगळा रै एकसा हा, थे ही तो म्हारो कन्यादान करयो हो।

म्हारी आख्या मे पाणी आग्यो। जद शर्मा रो भी काळजो पीगळ्यो, बै गळगळा होयन बोल्या—बेटा, राजनीति मे ओ ही तो खोट है, इंमे राज है, ऐश है, पावर है, पण मिनखपणो अठै नेडै-तेडै कोनी। म्हू तो तेरै पापा नै कऊ हूं—आओ, साथै होयन काम करा।

—आ बात थे जाणो अर पापा जाणै, म्हानै काई ठेरो, म्हू कयो।

फेर पापा अर शर्मा घई देर बात करता रह्या, पतो नीं काई काई, पण म्हानै ओ ठेरो हो कै पापा अबै शर्मा रै साथै कोनी मिल सकै। बै आ ही सोचता रया हा—घुटन काई घाटा? पण अबार पापा रो कलेजो इतो सदग्यो है कै बै राजनीति री बात करै तो बावळा पड़ै।

और भी मोटा लोग आवता, वारै दुख सुख री पूछता, पापा भी कीं-कीं

धीरण लागग्या ।

एक दिन चाणचकं स्वामी जी री लाश म्हारै घरे आगी। 'है औ काई ?' सगळा अचमो करयो। पतो लाग्यो रे स्वामी जी पापा स्यू मिलणै सारू आरया हा, रस्तै मे वानै एहड़ो की होयो होसी के बै सड़क पर मरया मिरया, साथै जको आदमी हो, बो भी बी वक्त बारै सारू की लेवण गयो ही। बो आयो जद लोग थार कर लिरया हा। बण घरे फोन करयो पण फोन भी कुण उठायो कोनी। फेर बो ही एक गाडी किराये करन घरे लाश ल्यायो। पापा स्वामी जी री लाश देखन एक ही बात कयी— कित्तो बड़ा सन्त हा स्वामी जी, अण जिन्दगी भर जनता री सेवा करी, मरती बक्त तक की स्यू पानी कोनी माम्यो। सन्त री जिन्दगी बस इसी ही हुवै है।'

स्वामी जी लाश सस्था रा आदमी लेग्या, बा रो बठै ही गाजै बाजै स्यू दाह सस्कार होयो। पापा रो घणो जी करयो, पण डाक्टर बानै जावण कोनी दिया। पापा कयो— कित्तो निरभागी हू के म्हू बा री आखरी बिदाई में भी सीर कोनी कर सक्यो।'

23

एक दिन मा अर मैं बैठी बैठी विचार करण लाग्या के कतै कित्ता रिपिया होवणा चाहिजै। म्हू बारै कागजा मे सम्हाळन लागी तो कठैइ कोई बैंक री कॉपी कोनी मिली। फेर म्हे म्हारै अदाजै स्यू दोनू बैंका मे घूम्या, स्यात् कॉपी नी आवै अर खातो हुवै, पण कठैइ खातो कोनी मिल्यो। म्हू कयो— मा, पापा कई जगा लाखा रो घोटाळो करयो, वै लाख कठै गया ?

—मनै तो बेरो ही कोनी, कठै आयो, कोनै गयो, कदा गयो, हा, रिपिया आवता जरूर अर जावता, बै सगळा म्हारै हाथ स्यू निकळया, पण बच्यो कोनी कदेइ, ज्यू आयो ज्यू गयो, मा बतायो।

फेर एक दिन एक आदमी आयो। वो चोखो आदमी लागै हो। बण

माता जी नै कयो—माता जी, काई बताऊं, आपरै नाम पच्चीस हजार रिपिया है, ब्याज तो म्हे लगाऊं कोनी, पण एक चुनाव में म्हे दिया हा, म्हारै अबार टोटो आरयो है, पार पड़ै तो द्यो, बिरमानन्द जी नै कैवता तो सरम आवै।

फेर एक दिन माता जी रो ही सैंदो आदमी आयो—माता जी घणा दिन होग्या, ई कोठी में ईंटया, पत्थर, चूनो आपरै अठै स्यूं ही आयेडो है, आपनै तो ठाह ही है, अबै ढील पार कोनी पड़ै, म्हारै भी टाबरां नै रोटी चाहिजै।

माता जी कद् ताईं अै बातां सुणती एक दिन कोठी रै लारै री जमीन बेच दी। मा पापा रै सामै कदे ही टोटै रो रोवणो कोनी रोवती। बा जाणै ही कै आनै कदेइ टोटै री बात नीं कैयणी, बै आगै ही माडा होरया है।

पापा चालण हालण तो लाग्या, विजय भी अबै स्याणो होग्यो, बै अबार आपरी जमीन सभाळती जको बीं नाम स्यूं ही। गाडी घर री गुडण लागगी।

एक दिन चाणचकै शर्मा मुख्य मंत्री रै पद स्यूं हटग्या, रामप्रसाद जी भी सागै गया। रेखा भी कोनी रयी। सगळा सड़क पर आग्या।

अबै तो सगळा ही भेळा होयन आपरी सुख दुख री कर लेवता।

पापा कैवण लागग्या हा—बेटा, अबै म्हारो जमानो गयो, म्हे जो कुछ देवणो चावा हा, दे दियो, म्हे चुक ग्या। अबै तो नौजवानां नै देस नै सभाळनो चाहिजै। अबै म्हे नेतागिरी री जिद करां तो म्हारी हठधरमी है, अस्सी-अस्सी साल रा नेता, काई है म्हारै में, म्हे जे देस री नेतागिरी करां तो देस रै नौजुवानां रै आडै आवां हां, देस रो नुकसान करां हां।'

24

म्हे लोगा आपणै खेत मे एक चोखो-सो मकान बणा लियो है। विजय अठै ही रैया करतो, खेती करतो, करावतो। पापा अर म्हू भी अठै चल्या गया।

दिन छिपग्यो हो, खाणो खा लियो हो। बारै माच्या ढाळ'र बैठग्या। फागण रो मीनो हो। च्यारू कूटा हरियाळी बापरी ही। सोवणी सरस्यू पर पीळा फूल भोत ओपता हा, चणका री बाला हळकै वायरै मे झूमै ही, चीणा आपरै लाल फूला मे घणो जी सोरो करै हा। सारै नहर रो खाळियो मदरो-मदरो चालतो मना मे मिठास भरै हो। पापा च्यारू कूटा देखन बोल्या—लोग ओळमो देवै, राज री आलोचना करै, पण राज काई कोनी करयो। देख, च्यारूकानी ट्रैक्टर चालै है, खेती रो रग देखन, धरती सोनो निपजण लागरी है। आ वाही जगा है, म्हू अठै राज री नौकरी मे हो जद् रयो हो, पीवण नै पाणी कोनी मिलतो। इत्तै अरसै मे काई रग खिल्यो है। म्हारो पीढी को करघो तो है ही, इण हू पैली हो काई, गाव रो आदमी पुलिस ऊ डरया करतो। सिपाही सरडा चालता नै खल्ला मारता। कठैइ विस्वास रो काम ही कोनी हो।

पापा नै ओ रग देखन घणी खुसी होरी ही। म्हू इण खुसी नै तोडणे री चेस्टा तो कोनी करणो चावै ही, पण एक बात मन मे आई, म्हू कै बैठी—'पापा, आया लारला मीनै मे आपणै शहर मे फिरै हा।

—हा, पापा कयो।

—एक विदेश रो राष्ट्रपति आपणी अठै आयो हो, अर आपानै आपणी गाडी रो मारग बदळनो पडयो।

—हा?

—फेर आपा एक गळी स्यू नीकळया।

—हा?

—कित्तो नीओ हाल हो बी गळी रो।

—हा, ठीक है।

—च्यारूकानी बदबू ही, बदबू घर काई हा, नरक रा टूकडा हा।

—हा'' हा' हा।

—आ सारू आजादी आई ना आई बराबर है। सगळे शहरा री गळिया रो ओ हाल है। आपा बम्बई गया हा, कलकत्ते गया हा, गरीबा सारू रैवणै नैं झूपडी ही कोनी, बैं फुटपाथ पर सोवैं। थे हो गावा री ही बाता करो, गावा मे रोटी तो लूकी-सूकी मिलै है, सोवण, बैठण, ऊठण नैं, झूपड्या तो है ही। और नी तो पवन तो शुद्ध मखै है, पण वा लोगा सारू की तो कोनी।

—हा, हा तू कैवती जा।

—पापा, ठीक है, रजवाडा, कोनी रया, जागीरा गई, जका सपनै म ही सोच भी सकै बानै राज मिलग्यो, महल मिलग्या, पण करोडू मिनखा नै तो की कोनी मिल्यो।

—ठीक है, ठीक है।

—और काई कू, म्हू तो इत्ती बात आणै ही, कैय दी।

—बेटा, जनतन्त्र व्यवस्था माडी कोनी, पण ईनै जमावणो जरूरी है, लोग पूरा भण जीसी, समझ पकड जीसी, स्याणा हो जीसी, अै लोग जका फुटपाथा पर पड्या है आ मे चेतना आ ज्यासी तो साची मान ले ओ जको फरक लखावै है गरीब अमीर ओ भी मिटज्यासी। पण टैम लागै है, टैम ही सगळी बात करावै है।

आसै पासै लोग बैठ्या बाता सुणै हा। वा लोगां ही रोही मे आ रणक कर राखी ही। कोई सेत मे पाणी लगान आयो हो। एक ट्रैक्टर रो ड्राइवर हो। एक पडोसी हो जकै नै अबार ही एक मुरब्बो जमीन मिली है। एक बी पडोसी रो सीरी हो।

बैं कई देर ताई बाता रो रस लियो, फेर चिलम पीवण सारू थोडा आगीनै सरकग्या, बैं पापा रै सामै चिलम पीवणै स्यू सकै हा।

अधारो वापरग्यो। म्हारे खेत मे बिजळी आगी ही। म्हारै ट्यूबवैल लगा राख्यो हो। नहर रै पाणी री कमी इण ट्यूबवैल स्यू पूरो करया करता।

च्यारूमानो बिजली रा लोटिया चसग्या। पापा मकान री छत पर चल्या गया, बानै थोडो घूमणै रो शोक हा।

अबार सर्दी जावती ही, म्हे लोग कोठै मे बडग्या। पापा भी आग्या।

पडोस रै एक मोघार नैं बाता घणी आवैं ही। विजय नै ओरो बडो कोड

विजय अर बो छोरो दूजै कोठै मे जायन बाता सरू कर दी। छोरै रै आवण आवती ही—हुकारो द्यो सा।

पापा बोल्या—ओ ऊठै आज्यावो, म्हू भी सुण स्यू।

मोडै ताई बाता चाली। पापा सोवण लागग्या। बानै नीद आवण लागगी। बै लोग चल्या गया, म्हू भी सोगो।

25

दिनगै पापा कुरळो करण लागरया हा। पूरब स्यू सूरज निकळै हो गोळ गोळ, लाल-लाल। बोरी किरणा आखी धरती री हरियाळी पर पसररी ही। ओस री बूदा मोती ज्यू चिमकै ही।

भात ही सुहावणो मौसम हो। पापा बोल्या—कित्तो सोवणो सूरज उठ्यो है, बटा, सोनै रो सूरज।

—हा, पापा, आपणी धरती रो सूरज, देस रो सूरज।

—आजादी रो सूरज, प्रगति रो सूरज, विकास रो सूरज। आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत उजळा है।

□□

—हा'' हा'' हा।

—आ सारू आजादी आई ना आई बराबर है। सगळै शहरा री गळिया रो ओ हाल है। आपा बम्बई गया हा, कलकत्तै गया हा, गरीबा सारू रैवणै नै झूपड़ो ही कोनी, वै फुटपाथ पर सोवै। थे हो गावा री हो बाता करो, गावा मे रोटी तो लूखी-सूखी मिलै है, सोवण, बैठण, ऊठण नै, झूपड्या तो है ही। और नी तो पवन तो शुद्ध मवै है, पण वा लोगा सारू की तो कोनी।

—हा, हा, तू कैंवती जा।

—पापा, ठीक है, रजवाड़ा, कोनी रया, जागीरा गई, जका सपनै मे ही सोच नी सकै आनै राज मिलग्यो, महल मिलग्या, पण झरोड़ू मिनखा नै तो की कोनी मिल्यो।

—ठीक है, ठीक है।

—और काई यू, म्हू तो इत्ती बात जाणै ही, थंय दी।

—बेटा, जनतन्त्र व्यवस्था माड़ी कोनी, पण ईनै जमायणो जरूरी है, लोग पूरा भण जोसी, समझ पकड़ जोसी, स्याणा हो जोसी, अै लोग जका फुटपाथा पर पड़्या है आ मे चेतना आ ज्यासी तो साची मान लै ओ जको फरक लखावै है गरीब अमीर ओ भी मिटज्यासी। पण टैम लागै है, टैम ही मगटी बात करावै है।

आगै पासै लोग बैठ्या बाता सुणै हा। या लोगा ही रोही मे आ दगक कर राखी ही। कोई खेत मे पाणी लगान आयो हो। एक ट्रैक्टर रो ड्राइवर हो। एक पड़ोसी हो जकै नै अबार ही एक मुरब्बो जमीन मिली है। एक बी पड़ोसी रो सीरी हो।

वै कई देर ताई बाता रो रस लियो, फेर चिलम पीवण सारू पाछा आगीनै सरकग्या, वै पापा रै सामै चिलम पीवणै स्यू सर्कै हा।

अधारो बापरग्यो। म्हारे खेत मे बिजळी आगी ही। म्हारै ट्यूबवैल लगा राख्या हा। नहर रै पाणी री कमी इण ट्यूबवैल स्यू पूरी करया करता।

च्यारूमानी बिजळी रा लोटिया चमग्या। पापा मकान री छत पर चल्या ग्या, वानै जाड़ा घूमणै रो शौक हो।

अबार मर्दी आवणी ही, म्है सोग काठै मे बडग्या। पापा भी आग्या।

पड़ोस रै एक मोचार नै बाता घणी आवै ही। विजय नै ओरो घणो कोड

विजय अर बो छोरो दूजै कोठै मे जायन बाता सरू कर दी। छोरै रै आवण आवती ही—हुकारो दयो-सा।

पापा बोल्या—औ ऊठै आज्यावो, म्हू भी सुण स्यू।

मोडै ताई बाता चाली। पापा सोवण लागग्या। बानै नींद आवण लागगी। वै लोग चल्या गया, म्हू भी सोगी।

25

दिनगै पापा कुरळो करण लागरया हा। पूरब स्यू सूरज निकळै हो गोळ गोळ, लाल-लाल। बीरी किरणा आखी धरती री हरियाळी पर पसररी ही। ओस री बूंदा मोती ज्यू चिमकै ही।

भोत ही सुहावणो मौसम हो। पापा बोल्या—कित्तो सोवणो सूरज उठ्यो है, बेटा, सोनै रो सूरज।

—हा, पापा, आपणी धरती रो सूरज, देस रो सूरज।

—आजादी रो सूरज, प्रगति रो सूरज, विकास रो सूरज। आपणै देस रा आवण आळा दिन भोत उजळा है।

□□